विक्रम संवत् 2082 ▪ वैशाख/ज्येष्ठ मास (03) ▪ 01 मई 2025 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

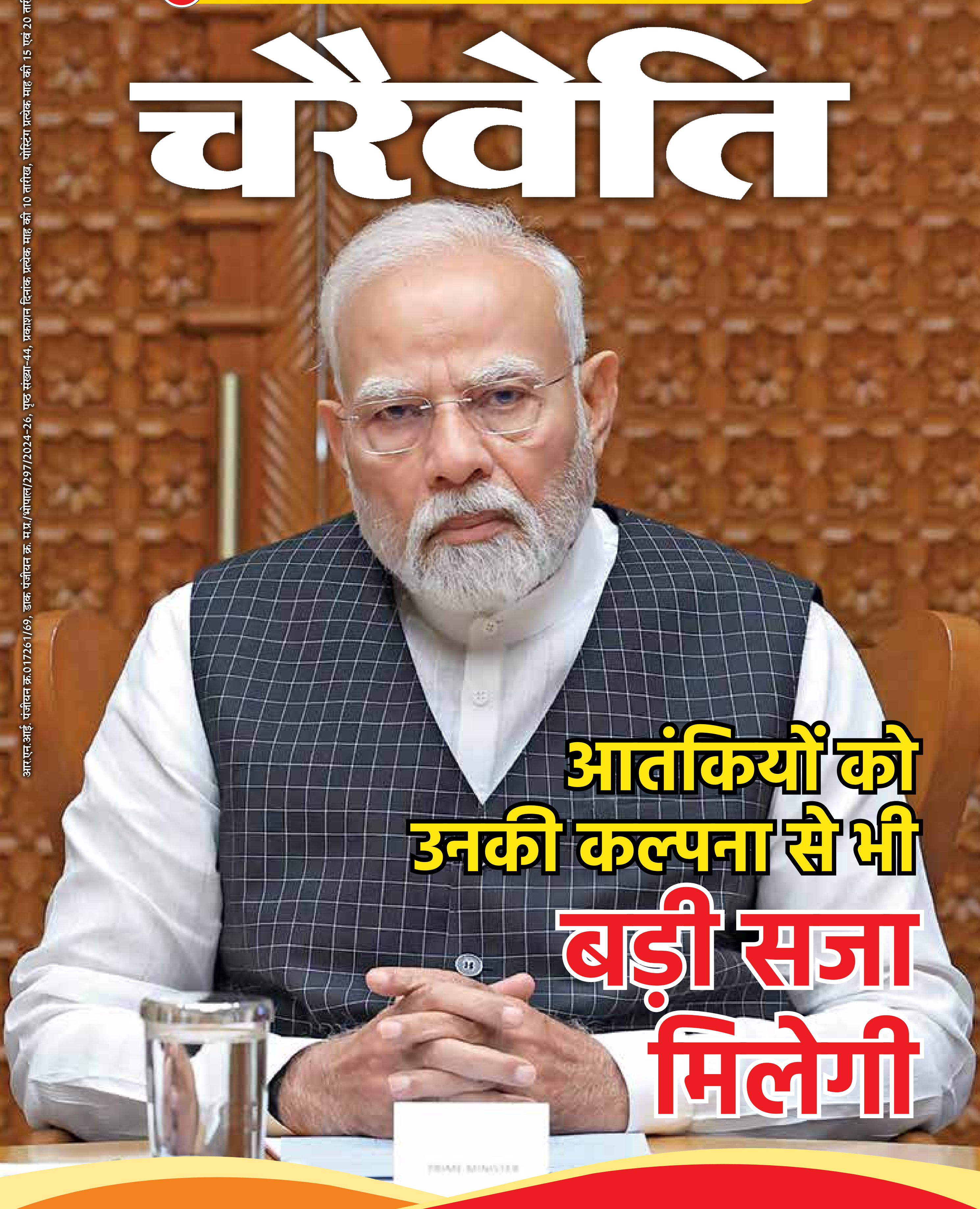

आतंकियों को उनकी कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

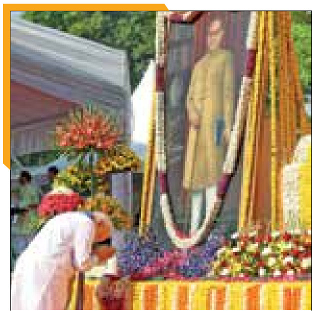

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी की जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा ने डॉ. बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रामेश्वरम में रामनाथस्वामी मंदिर में दर्शन व पूजन किया।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा ने भारत रत्न डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सम्मान अभियान पर राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और श्रीलंका के राष्ट्रपति ने श्रीलंका में उन्नत रेलवे ट्रैक का उद्घाटन किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मॉरीशस में आयुर्वेदिक उद्यान का दौरा किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सऊदी अरब की राजकीय यात्रा पूरी करने के बाद नई दिल्ली पहुंचे।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सुरक्षा पर कैबिनेट समिति (सीसीएस) की बैठक की अध्यक्षता की।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय** ▪ **संजय गोविन्द खोचे** 04

▪ आतंक समूल नष्ट होगा

» **कवर स्टोरी** 05

▪ आतंकियों को उनकी कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी- पीएम मोदी

05

18

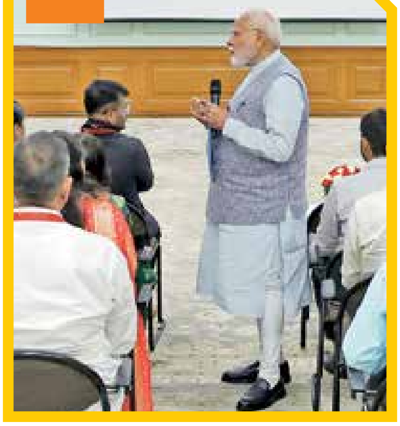

▪ **वक्फ (संशोधन) विधेयक** 07
» विपक्ष चाहता है मिलीभगत चलती ही रहे

▪ **आनंदपुर धाम में पीएम** 10
» विकास यात्रा में संस्कृति संरक्षण आवश्यक -प्रधानमंत्री

▪ **डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती** 12
» बाबा साहब को सम्मान, दलितों को अधिकार-विष्णुदत्त शर्मा...

▪ **अनुसूचित जनजाति मोर्चा बैठक** 13
» वक्फ की जमीनों की बंदरबांट पर रोक लगेगी-विष्णुदत्त शर्मा

▪ **सक्रिय सदस्य सम्मेलन** 14
» भाजपा गरीबों के कल्याण हेतु-डॉ. मोहन यादव

▪ **सहकारी सम्मेलन** 15
» हर गांव तक सहकारी डेयरी का विस्तार होगा - अमित शाह

▪ **मुद्रा योजना** 18
» मुद्रा योजना की सबसे बड़ी लाभार्थी महिलाएं हैं

▪ **प्रदेश स्तरीय वक्ता कार्यशाला** 20
» बाबा साहब के लिए कांग्रेस ने कुछ नहीं किया-डॉ. मोहन यादव

▪ **46वां स्थापना दिवस** 21
» भाजपा का वैचारिक अधिष्ठान अडिग- जगत प्रकाश नड्डा

▪ **स्थापना दिवस समारोह** 24
» साकार हो रहा अटल जी का सपना - विष्णुदत्त शर्मा

▪ **डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती** 25
» डॉ. अंबेडकर के कार्य भूतो न भविष्यति-डॉ. मोहन यादव

▪ **बाबा साहब सम्मान अभियान** 26
» सभी के विकास व उत्थान का प्रावधान - विष्णुदत्त शर्मा

▪ **गांव-बस्ती चलो अभियान** 27
» भाजपा वैचारिक संगठन: हितानंद जी
» अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का कल्याण ही...

▪ **सक्रिय सदस्य सम्मेलन** 29
» कार्यकर्ताओं के परिश्रम से भाजपा बनी दुनिया की सबसे...

▪ **51,000 नियुक्ति पत्र** 30
» युवा, परिश्रम और इनोवेशन से अपार सामर्थ्य दिखा रहा है

▪ **मन की बात** 33
» हर भारतीय का खून खौल रहा है

▪ **जयंती** 38
» वीर योद्धा छत्रसाल
» लोकमाता महारानी अहिल्याबाई
» सच्चे राष्ट्रवाद की ज्योति प्रज्जवलित की महान वीर सावरकर...

▪ **विचार प्रवाह** 41
» संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है

• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. विनायकी चतुर्थी व्रत 4. गंगा सप्तमी (गंगोत्पत्ति) 6. सीता नवमी, जानकी जयंती 8. मोहिनी एकादशी व्रत 9. प्रदोष व्रत 11. भ. नृसिंह चतुर्दशी/ प्रकट्योत्सव 12. बुद्ध, स्नानदान व्रत पूर्णिमा 16. गणेश चतुर्थी व्रत 23. अचला/अपरा एकादशी व्रत 24. प्रदोष व्रत 25. शिव चतुर्दशी व्रत 26. वट अमावस्या व्रत, भ. शांतिनाथ ज. व मोक्ष 27. स्नानदान अमावस्या, रोहिणी व्रत 28. चन्द्रदर्शन 29. रंभा तीज व्रत 30. विनायकी चतुर्थी व्रत 31. श्रुत पंचमी

• मुख्य जयंती-दिवस

1. महाराष्ट्र, गुजरात स्थापना दिवस 3. विश्व पत्रकारिता स्वतंत्रता दिवस 12. महर्षि भृगु, गुरू गोरखनाथ एवं टेकचंद महाराज जयंती 14. मीना समाज मंदिर 22. राजा राममोहन राय जयंती 29. महाराणा प्रताप एवं छत्रसाल ज. 31. विश्व धूम्रपान निषेध दिवस

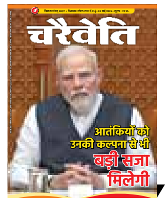

वर्ष-57, अंक : 03, भोपाल, मई 2025

हमारे प्रेरणास्रोत
पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हमने धर्म के आधार पर लोक पालन और राज्य की व्यवस्था का विधान किया। केवल सत्ता भोग के लिए राज स्थापना अपने जीवन का लक्ष्य नहीं। धर्म के लिए राज्य की आवश्यकता हुई इसलिए धर्म से प्रेरणा जरूरी है। राजा धर्म रक्षण के लिए उत्तरदायी है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

•
सचिव, मुद्रक, प्रकाशक
एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

•
सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

•
व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

•
पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

आतंक समूल नष्ट होगा

सेना का जोश, सेना का संगठन, सेना की मजबूती मोदी सरकार की दूरदर्शिता का परिणाम है। आर्थिक सक्षमता जो सरकार की कड़ी मेहनत व दूरदर्शिता का परिणाम है। वही आज सरकार को कड़े फैसले लेने में सहयोगी है।

22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में धर्म के आधार पर परिवार के सामने बेरहमी से निहत्थों पर नजदीक से गोली मारकर 25 भारतीय पर्यटकों व एक नेपाली मूल के पर्यटक की हत्या ने मोदी सरकार को आतंक को समूल नष्ट करने का प्रण लेने के लिए मजबूर कर दिया। आतंकियों की कायराना हरकत कोई भी सभ्य समाज स्वीकार नहीं कर सकता। सीमाओं की सुरक्षा व देश के नागरिकों के जान-माल की सुरक्षा सरकार का दायित्व है। इस दायित्व को निभाना मोदी जी बखूबी जानते हैं। कायराना हरकत को अंजाम देने वाले धरती, आकाश, पाताल तक कहीं भी छिप जाएं, न्याय होकर रहेगा, यह बात पीड़ित परिवार भी जानते हैं और सारा विश्व भी जानता है। मोदी जी पीड़ित परिवारों को न्याय दिलाने में कोई कमी नहीं रखेंगे। मोदी जी की वास्तविक ताकत 140 करोड़ लोगों का एकजुट होना है। मोदी सरकार की सफल विदेश नीति के कारण सरकार भारत का पक्ष विश्व नेताओं के सामने सफलतापूर्वक रखने में सफल रही। सेना का जोश, सेना का संगठन, सेना की मजबूती मोदी सरकार की दूरदर्शिता का परिणाम है। आर्थिक सक्षमता जो सरकार की कड़ी मेहनत व दूरदर्शिता का परिणाम है। वही आज सरकार को कड़े फैसले लेने में सहयोगी है। कुल मिलाकर पूरी परिस्थितियों का ऑकलन किया जावे तो इस भीषण आपदा से निपटने में भारत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पूरी तरह तैयार, सक्षम व मजबूत स्थिति में खड़ा दिखाई दे रहा है। विगत 10 वर्षों के परिश्रम व दूरदर्शिता के परिणाम स्वरूप भारत इस आपदा को अच्छी तरह निपटा कर पीड़ितों को न्याय दिलवाने में सफल रहेगा।

इस तरह की कायराना हरकतें भारत की तेज बढ़ती विकास की रफ्तार को रोकने में सफल नहीं हो सकती हैं। भारत बुद्ध और गाँधी का देश है। कभी किसी को परेशान नहीं करता। पर अपनी सीमा व नागरिकों के जान-माल की रक्षा का दायित्व भी बखूबी जानता है और करने में सक्षम है।

भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में 10 वर्षों पूर्व प्रारंभ की गई मुद्रा योजना के सार्थक परिणाम प्रशंसनीय व सराहनीय हैं। इस योजना में मोदी सरकार महिलाओं को सर्वाधिक लाभ दिलाने में सफल रही है। 33 लाख करोड़ रुपए के बिना गारंटी के 52 करोड़ से अधिक लोन की स्वीकृति, महिलाओं एवं युवाओं को सफल बनाने, सक्षम बनाने में, मोदी सरकार का साहसिक व प्रशंसनीय प्रयास है। शायद ही किसी सरकार ने इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल की होगी। इस उपलब्धि की जितनी प्रशंसा की जावे वह कम है। या शब्दों में उपलब्धि की व्याख्या संभव नहीं है।

दसों दिशाओं में तेजी से बढ़ता भारत अपनी संस्कृति, विरासत का संरक्षण करने में सफल रहा है। भारत की विकास यात्रा को सफल बनाने में हमारी संस्कृति का योगदान अविस्मरणीय है। भारत की ही संस्कृति पूरे विश्व को अपना परिवार मानती है। सबका साथ-सबका विकास का मंत्र भी भारत की संस्कृति का ही परिणाम है। संस्कृति की भावना ही सरकार की नीति है।

केंद्र सरकार द्वारा एक साथ, एक ही दिन में रोजगार मेला लगा करके 51000 चयनित युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपे गए। किसी सरकार द्वारा बार-बार रोजगार मेले लगाकर पक्की नौकरी के नियुक्ति पत्र सौंपने का निर्णय मोदी सरकार ही कर सकती है। युवाओं की राष्ट्र निर्माण में भागीदारी सुनिश्चित होने से राष्ट्र के विकास की गति भी तेज होगी। युवा भी अपनी प्रतिभा का सामर्थ्य दुनिया के सामने रख रहे हैं। युवाओं को नए-नए क्षेत्रों में प्रतिभा दिखाने व अपने आप को सिद्ध करने का अवसर मोदी सरकार की स्पष्ट नीति का परिणाम है।

वक्फ संशोधन विधेयक नें कानून का रूप ले लिया है। अब वक्फ की संपत्ति को बेचने वालों को पकड़ना आसान हो जाएगा। तुष्टिकरण पर रोक लगेगी। वक्फ की संपत्ति घोषित करने से पहले अब जिला अधिकारी से सत्यापन कराना आवश्यक हो जावेगा। अब घोषणा मात्र से कोई संपत्ति वक्फ की नहीं हो पाएगी। वक्फ की संपत्तियों की लूट खसोट को रोकने में यह प्रभावी कदम सिद्ध होगा। अब वक्फ की संपत्ति का उपयोग गरीबों के लिए होगा।

डॉ. भीमराव अंबेडकर जिन्होंने पीढ़ियों से चली आ रही विसंगतियों को दूर कर संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने का ऐतिहासिक कार्य किया। डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की आरक्षण व्यवस्था का ही परिणाम है कि अनुसूचित जाति वर्ग की साक्षरता जो कभी 1.5 प्रतिशत थी अब बढ़कर 60 प्रतिशत पर पहुंच रही है। संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का कांग्रेस ने कभी भी सम्मान नहीं किया। बाबा साहब लोकसभा ना पहुंच पाएं, इसे सुनिश्चित किया गया। भाजपा ने बाबा साहब की भावना व सम्मान को बढ़ाने का पूरा प्रयास किया। बाबा साहब की भावना के अनुरूप धारा 370 को हमेशा-हमेशा के लिए दफन किया। जम्मू कश्मीर के सभी नागरिकों को समान अधिकार वापस कराया। डॉक्टर साहब से जुड़े सभी स्थानों को पंच तीर्थ के रूप में मान्यता दी। अटल जी ने बाबा साहब को भारत रत्न से सम्मानित करवाया। कांग्रेस ने निहित स्वार्थों के चलते 75 बार संविधान में संशोधन करके बाबा साहब के संविधान की भावना को कुचलने का प्रयास किया। मोदी सरकार का सबका साथ-सबका विकास का मंत्र बाबा साहब की भावना के अनुरूप है।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री तथा भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री अमित शाह जी की उपस्थिति में मध्य प्रदेश में दूध उत्पादन में सहकारी डेयरी समितियों का योगदान बढ़ाने के लिए एनडीडीबी और एमपीसीडीएफ के बीच अनुबंध हुआ। अब मध्य प्रदेश में 83 प्रतिशत गांवों तक सहकारी डेयरी के विस्तार की संभावना बन गई है। सहकारी क्षेत्र में दूध प्रोसेसिंग की क्षमता कई गुना बढ़ जावेगी।

1951 से प्रारम्भ भारतीय जनसंघ की यात्रा ने अनेक पड़ावों को पार करके विश्व के सबसे बड़े राजनीतिक दल का रूप ले लिया है। आज 13.5 करोड़ से अधिक लोग भाजपा के सदस्य हैं। 10 लाख से अधिक सक्रिय कार्यकर्ता हैं। 13 राज्यों में भाजपा के मुख्यमंत्री हैं। सात राज्यों में एनडीए की सरकारें हैं। 240 लोकसभा सदस्य हैं। 98 राज्यसभा सदस्य हैं तथा 1600 विधायकों का संगठन भाजपा बन चुकी है। यह पड़ाव 600000 बूथों पर बूथ समितियां, बूथ अध्यक्षों समेत असंख्य कार्यकर्ताओं के योगदान, त्याग व तपस्या के चलते संभव हो पाया है। इसी तपस्या के कारण भारत आज विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की तरफ अग्रसर है। 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर आ पाए हैं। गरीबों को पक्की छत, निःशुल्क इलाज, बैंक में खाता, भ्रष्टाचार मुक्त शासन संभव हो पाया है। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

आतंकियों को उनकी कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी- पीएम मोदी

- बीते दशक में पंचायतों को सशक्त करने के लिए एक के बाद एक कदम उठाए गए हैं, पंचायतों को तकनीक के माध्यम से मजबूत किया गया है।
- बीते दशक में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति मिली है।
- बीता दशक, भारत के इंफ्रास्ट्रक्चर का दशक रहा है।
- मखाना, आज देश और दुनिया के लिए सुपरफूड है, लेकिन मिथिला की तो ये संस्कृति का हिस्सा है, इसी संस्कृति को ही हम यहां की समृद्धि का भी सूत्र बना रहे हैं।
- 140 करोड़ भारतीयों की इच्छा शक्ति अब आतंक के आकाओं की कमर तोड़कर रहेगी।
- आतंकवाद को बख्शा नहीं जाएगा, न्याय सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा, पूरा देश इस संकल्प के प्रति दृढ़ है।

देश के दुश्मनों ने भारत की आत्मा पर हमला करने का दुस्साहस किया है। जिन्होंने ये हमला किया है, उन आतंकियों को, और इस हमले की साजिश रचने वालों को उनकी कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी, सजा मिल करके रहेगी।

अब आतंकियों की बची-खुची जमीन को भी मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है। 140 करोड़ भारतीयों की इच्छा-शक्ति अब आतंक के आकाओं की कमर तोड़कर रहेगी।

पूज्य बापू का दृढ़ विश्वास था कि जब तक भारत के गांव मजबूत नहीं होंगे, तब तक भारत का तेज विकास नहीं हो पाएगा। देश में पंचायती राज की परिकल्पना के पीछे यही भावना है। बीते दशक में पंचायतों को सशक्त करने के लिए एक के बाद एक कदम उठाए गए हैं। टेक्नोलॉजी के माध्यम से भी पंचायतों को मजबूत किया गया है। बीते दशक में 2 लाख से ज्यादा ग्राम पंचायतों को इंटरनेट से जोड़ा गया है। साढ़े 5 लाख से ज्यादा कॉमन सर्विस सेंटर गांवों में बने हैं। पंचायतों के डिजिटल होने से एक और फायदा हुआ है। जीवन-मृत्यु प्रमाण पत्र, भूमि धारण प्रमाण पत्र, ऐसे कई दस्तावेज आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। आजादी के अनेक दशकों बाद जहां देश को संसद की नई इमारत मिली, वहीं देश में 30 हजार नए पंचायत भवन भी बनाए गए। पंचायतों को पर्याप्त फंड मिले, ये भी सरकार की प्राथमिकता रही है। बीते 10 साल में दो लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का फंड पंचायतों को मिला है। ये सारा पैसा गांव के विकास में लगा है।

ग्राम पंचायतों की एक और बड़ी समस्या, भूमि विवाद से जुड़ी रही है। कौन-सी जमीन आबादी की है, कौन-सी खेती की है, पंचायत की जमीन कौन-सी है, सरकारी जमीन कौन-सी है, और इन सारे विषयों पर अक्सर विवाद रहता था। इसके समाधान के लिए जमीनों का डिजिटलीकरण किया जा रहा है। जमीनों के रिकॉर्ड का डिजीटलीकरण से, अनावश्यक विवादों को सुलझाने में मदद मिली है।

पंचायतों ने सामाजिक भागीदारी को सशक्त किया है। बिहार, देश का पहला राज्य था, जहां महिलाओं को इनमें 50 प्रतिशत आरक्षण की सुविधा दी गई। आज बहुत बड़ी संख्या में, गरीब, दलित, महा दलित, पिछड़े, अति पिछड़े समाज की बहनें-बेटियां बिहार में जनप्रतिनिधि बनकर सेवाएं दे रही हैं, और यही सच्चा सामाजिक न्याय है, यही सच्ची सामाजिक भागीदारी है। लोकतंत्र, ज्यादा से ज्यादा भागीदारी से ही समृद्ध होता है, सशक्त होता है। इसी सोच के साथ, लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं के लिए तैंतीस प्रतिशत आरक्षण का कानून भी बनाया गया है। इसका लाभ देश के हर राज्य की महिलाओं को

होगा, हमारी बहन-बेटियों को ज्यादा प्रतिनिधित्व मिलेगा।

देश में महिलाओं की आय बढ़ाने के लिए, रोजगार-स्वरोजगार के नए अवसर बनाने के लिए सरकार मिशन मोड में काम कर रही है। बिहार में चल रहे जीविका दीदी, इस कार्यक्रम से अनेक बहनों का जीवन बदला है। बिहार की बहनों के स्वयं सहायता समूहों को करीब एक हजार करोड़ रुपए की मदद दी गई है। इससे बहनों के आर्थिक सशक्तिकरण को और बल मिलेगा। ये देश में तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने के लक्ष्य की प्राप्ति में और सहयोगी बनेगा।

बीते दशक में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति मिली है। गांवों में गरीबों के घर बने, सड़कें बनीं, पक्के रास्ते बने हैं। गांवों में गैस कनेक्शन पहुंचे, पानी के कनेक्शन पहुंचे, शौचालय बने हैं। ऐसे हर काम से गांव में लाखों करोड़ रुपए पहुंचे हैं। रोजगार के नए अवसर भी बने हैं। मजदूर से लेकर किसान और गाड़ी वाले से लेकर दुकानदार तक, सबको कमाई के नए मौके मिले हैं। इससे उस समाज को सबसे अधिक फायदा हो रहा है, जो पीढ़ियों से वंचित रहे थे। पीएम आवास योजना का लक्ष्य है, देश में कोई भी गरीब परिवार बेघर ना हो, सबके सिर पर पक्की छत हो। और इसी लक्ष्य के साथ बीते दशक में 4 करोड़ से अधिक पक्के घर बनवाए गए हैं। ये घर गरीब, दलित, पिछड़े-अति पिछड़े, पसमांदा परिवार, ऐसे समाज के वंचित परिवारों को मिले हैं। आने वाले सालों में 3 करोड़ और पक्के घर गरीबों को मिलने जा रहे हैं।

बीता दशक, भारत के इंफ्रास्ट्रक्चर का दशक रहा है। ये आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, विकसित भारत की बुनियाद को मजबूत कर रहा है। देश के 12 करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों के घरों में पहली बार नल से जल पहुंचा है। ढाई करोड़ से अधिक घरों में बिजली का कनेक्शन पहुंचा है। जिन्होंने कभी सोचा नहीं था कि गैस के चूल्हे पर खाना बनाएंगे, उनको गैस सिलेंडर मिले हैं।

लद्दाख और सियाचिन में, जहां सामान्य सुविधाएं तक पहुंचानी मुश्किल होती हैं, वहां अब फोर-जी और फाइव-जी, मोबाइल कनेक्शन पहुंच गया है। ये दिखाता है कि आज देश की प्राथमिकता क्या है। हमारे सामने आरोग्य जैसे क्षेत्र का भी उदाहरण है। कभी एम्स की तरह अस्पताल दिल्ली जैसे बड़े शहरों में ही होते थे। बीते दस सालों में देश में मेडिकल कॉलेज की संख्या करीब-करीब दोगुनी हो चुकी है।

गांवों में भी अच्छे अस्पताल बनें, इसके लिए देश भर में डेढ़ लाख से ज्यादा आयुष्मान आरोग्य मंदिर बनाए गए हैं। जन औषधि केंद्र, गरीब और मिडिल क्लास के लिए बहुत बड़ी राहत बन चुके हैं। यहां 80 परसेंट डिस्काउंट पर सस्ती दवाएं मिलती हैं।

आज भारत, रेल, रोड, एयरपोर्ट जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर से भी बहुत तेज गति से जुड़ रहा है। देश के दो दर्जन से अधिक शहर, मेट्रो सुविधा से जुड़े हैं।

हमारे किसान, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। ये रीढ़ जितनी मजबूत होगी, गांव उतने ही मजबूत होंगे, देश उतना ही सशक्त होगा।

मखाना, आज देश और दुनिया के लिए सुपरफूड है, लेकिन मिथिला की तो ये संस्कृति का हिस्सा है। इसी संस्कृति को ही हम समृद्धि का भी सूत्र बना रहे हैं। हमने मखाने को GI टैग दिया है। यानि मखाना इसी धरती का उत्पाद है, इस पर अब आधिकारिक मुहर लग गई है। मखाना रिसर्च सेंटर को भी नेशनल स्टेटस दिया गया है। बजट में जिस मखाना बोर्ड की घोषणा की गई है, वो बनने से मखाना किसानों का भाग्य बदलने वाला है। मखाना, दुनियाभर के बाजारों तक, सुपरफूड के रूप में पहुंचेगा।

22 अप्रैल को, जम्मू कश्मीर के पहलगाम में, आतंकियों ने मासूम देशवासियों को जिस बेरहमी से मारा है, उससे पूरा देश व्यथित है, कोटि-कोटि देशवासी दुखी है। सभी पीड़ित परिवारों के इस दुख में पूरा देश उनके साथ खड़ा है। जिन परिवारजनों का अभी इलाज चल रहा है, वे जल्द स्वस्थ हों, इसके लिए भी सरकार हर प्रयास कर रही है।

इस आतंकी हमले में किसी ने अपना बेटा खोया, किसी ने अपना भाई खोया, किसी ने अपना जीवन-साथी खोया है। उनमें से कोई बांग्ला बोलता था, कोई कन्नड़ा बोलता था, कोई मराठी था, कोई ओड़िया था, कोई गुजराती था, कोई बिहार का लाल था। आज उन सभी की मृत्यु पर करगिल से कन्याकुमारी तक हमारा दुख एक जैसा है, हमारा आक्रोश एक जैसा है। ये हमला सिर्फ निहत्थे पर्यटकों पर नहीं हुआ है, देश के दुश्मनों ने भारत की आत्मा पर हमला करने का दुस्साहस किया है। जिन्होंने ये हमला किया है, उन आतंकियों को, और इस हमले की साजिश रचने वालों को उनकी कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी, सजा मिल करके रहेगी। अब आतंकियों की बची-खुची जमीन को भी मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है। 140 करोड़ भारतीयों की इच्छा-शक्ति अब आतंक के आकाओं की कमर तोड़कर रहेगी।

Today, from the soil of Bihar, I say to the whole world: India will identify, track, and punish every terrorist, and their backers. We will pursue them to the ends of the earth. India's spirit will never be broken by terrorism. Terrorism will not go unpunished. Every effort will be made to ensure that justice is done. The entire nation is firm in this resolve. Everyone who believes in humanity is with us. I thank the people of various countries and their leaders, who have stood with us in these times.

शांति और सुरक्षा, ये तेज विकास की सबसे जरूरी शर्त है। ▪

प्रधानमंत्री जी 'श्रीलंका मित्र विभूषण' से सम्मानित

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को श्रीलंका के राष्ट्रपति दिसानायके ने 'श्रीलंका मित्र विभूषण' से सम्मानित किया।

राष्ट्रपति दिसानायके द्वारा श्रीलंका मित्र विभूषण से सम्मानित किया जाना बहुत गर्व की बात है। यह सम्मान सिर्फ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का नहीं है - यह भारत के 1.4 बिलियन लोगों के प्रति श्रद्धा है। यह भारत और श्रीलंका के लोगों के बीच गहरी दोस्ती और ऐतिहासिक संबंधों का प्रतीक है। ▪

विपक्ष चाहता है मिलीभगत चलती ही रहे

- विपक्ष भ्रांति फैला रहा कि यह विधेयक मुस्लिमों के धार्मिक क्रियाकलापों और उनके द्वारा दान की गई संपत्ति में दखल है।
- माइनॉरिटी समुदाय को डरा कर विपक्ष अपनी वोट बैंक खड़ी करने की कोशिश कर रहा है।
- मुस्लिम भाइयों के धार्मिक क्रियाकलाप और उनके बनाए हुए दान से जुड़े ट्रस्ट यानि वक्फ में सरकार कोई दखल नहीं करना चाहती।
- मुतवली, वाकिफ, वक्फ सब मुस्लिम ही होंगे, परन्तु यह जरूर देखा जाएगा कि वक्फ की संपत्ति का रख रखाव ठीक से हो रहा है या नहीं।
- वक्फ बोर्ड में धार्मिक दान से जुड़े कार्यों में किसी गैर-इस्लामिक सदस्य को जगह नहीं मिलेगी।
- वक्फ बोर्ड या इसके परिसरों में जिन गैर-मुस्लिम सदस्यों को रखा जाएगा, उनका काम धार्मिक क्रियाकलापों से संबंधित नहीं होगा।
- चैरिटी कमिश्नर किसी भी धर्म का व्यक्ति बन सकता है, वह सुनिश्चित करेगा कि बोर्ड का संचालन चैरिटी कानून के मुताबिक हो, यह धर्म का नहीं, प्रशासन का काम।
- वक्फ बोर्ड का काम वक्फ की संपत्तियां बेच खाने वालों को पकड़ कर बाहर निकालने का होना चाहिए।
- विपक्ष चाहता है उनके राज में चलने वाली मिलीभगत चलती ही रहे, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।
- 2013 में अगर वक्फ कानून में संशोधन नहीं किया गया होता, तो यह विधेयक लाने की नौबत ही नहीं आती।

वक्फ भारत में ट्रस्ट की तरह है। ट्रस्ट में ट्रस्टी और एक मैनेजिंग ट्रस्टी होते हैं। वक्फ में वाकिफ और मुतवली होते हैं, जो इस्लाम के अनुयायी होते हैं। वक्फ शब्द ही इस्लाम से आया है, इसलिए वक्फ वही कर सकता है जो इस्लाम का अनुयायी हो।

- वर्ष 2013 में रातों-रात तुष्टीकरण की खातिर वक्फ कानून को Extreme बना दिया गया, जिसके कारण दिल्ली में लुटियन्स जोन की 123 वीवीआईपी संपत्ति वक्फ को दे दी गई।
- नरेन्द्र मोदी सरकार का स्पष्ट सिद्धांत है कि वोट बैंक के लिए हम कोई कानून नहीं लाएंगे क्योंकि कानून न्याय और लोगों के कल्याण के लिए होता है।
- सबको अपने धर्म का अनुसरण करने का अधिकार है, लेकिन लोभ, लालच और भय से धर्म परिवर्तन नहीं कराया जा सकता।
- 2013 में लाए गए संशोधन विधेयक पर दोनों सदनों में कुल मिलाकर साढ़े 5 घंटे चर्चा हुई जबकि इस बिल पर दोनों सदनों को मिलाकर 16 घंटे चर्चा हो रही है।
- हमने संयुक्त समिति बनाई, 38 बैठकें हुईं, 113 घंटे चर्चा हुई और 284 हितधारक बनाए गए और इन सबसे देशभर से लगभग एक करोड़ ऑनलाइन सुझाव आए जिनकी मीमांसा कर ये कानून बनाया गया और इसे ऐसे खारिज नहीं कर सकते।
- यह भारत सरकार का कानून है जो सब पर बाध्य है और सभी को इसे स्वीकारना होगा।

- **1913 से 2013 तक वक्फ बोर्ड की कुल भूमि 18 लाख एकड़ थी, जिसमें 2013 से 2025 तक और नई 21 लाख एकड़ भूमि बढ़ गई।**
- **लीज पर दी गई संपत्तियां 20 हजार थीं, लेकिन रिकॉर्ड के हिसाब से 2025 में ये संपत्तियां शून्य हो गईं, ये संपत्तियां बेच दी गईं।**
- **यह विधेयक जमीन की सुरक्षा प्रदान करेगा, किसी की जमीन घोषणा मात्र से वक्फ नहीं बनेगी और उसे सुरक्षा मिलेगी।**
- **दान तो सिर्फ अपनी संपत्ति का ही किया जा सकता है इसीलिए स्वामित्व के बिना वक्फ निजी संपत्ति नहीं ले पाएगा।**
- **वक्फ की संपत्ति घोषित करने के अधिकार को समाप्त कर दिया गया है और अब इसे कलेक्टर से सत्यापित करवाना होगा।**
- **अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों में भय पैदा करना एक फैशन बन गया है।**
- **राम जन्मभूमि, ट्रिपल तलाक और CAA के समय भी मुस्लिम समुदाय के लोगों में भय पैदा करने की कोशिश की गई, लेकिन मुस्लिम समुदाय भी जानता है कि भय की कोई बात नहीं है।**
- **दो साल हो गए CAA से किसी की नागरिकता नहीं गई, अगर CAA से किसी की नागरिकता गई है तो विपक्ष उसकी जानकारी सदन के पटल पर रखे।**
- **मोदी सरकार का यह संकल्प है कि इस देश के किसी भी नागरिक पर चाहे वह किसी भी धर्म को हो कोई आँच नहीं आएगी।**

वक्फ एक अरबी शब्द है, जिसका इतिहास हदीसों से जुड़ा हुआ है। आजकल जिस अर्थ में इसका प्रयोग किया जाता है, उसका मतलब है अल्लाह के नाम पर संपत्ति का दान या पवित्र धार्मिक उद्देश्यों के लिए संपत्ति का दान। वक्फ का समकालीन अर्थ इस्लाम के दूसरे खलीफा श्री ओमर के समय में अस्तित्व में आया। आज की भाषा में वक्फ एक प्रकार का Charitable Endowment है, जहां कोई व्यक्ति धार्मिक या सामाजिक भलाई के लिए संपत्ति दान करता है। इसमें दान निजी चीज का ही किया जा सकता है। सरकारी संपत्ति या किसी और की संपत्ति का दान नहीं कर सकते।

वक्फ बोर्ड में धार्मिक दान से जुड़े कार्यों में किसी गैर-इस्लामिक सदस्य को जगह नहीं मिलेगी। धार्मिक संस्थाओं के संचालन में गैर-मुस्लिम व्यक्ति रखने का प्रावधान नहीं है और हम ऐसे प्रावधान करना भी नहीं चाहते। विपक्ष भ्रांति फैला रहा है कि यह विधेयक मुस्लिमों के धार्मिक क्रियाकलापों और उनके द्वारा दान की गई संपत्ति में दखल के लिए लाया जा रहा। विपक्ष अल्पसंख्यक समुदाय को डरा कर अपनी वोट बैंक खड़ी करने की कोशिश कर रहा है।

वक्फ बोर्ड या इसके परिसरों में जिन गैर-मुस्लिम सदस्यों को रखा जाएगा, उनका काम धार्मिक क्रियाकलापों से संबंधित नहीं होगा। वे सिर्फ यह सुनिश्चित करेंगे कि दान से संबंधित मामलों का प्रशासन नियम के अनुरूप हो रहा है या नहीं। वक्फ भारत में ट्रस्ट की तरह है। ट्रस्ट में ट्रस्टी और एक मैनेजिंग ट्रस्टी होते हैं। वक्फ में वाकिफ और मुतवली होते हैं, जो इस्लाम के अनुयायी होते हैं। वक्फ शब्द ही इस्लाम से आया है, इसलिए वक्फ वही कर सकता है जो इस्लाम का अनुयायी हो। वक्फ धार्मिक चीज है, लेकिन वक्फ बोर्ड या वक्फ परिसर धार्मिक नहीं हैं। कानून के मुताबिक चैरिटी कमिश्नर किसी भी धर्म का व्यक्ति बन सकता है, क्योंकि उसे ट्रस्ट नहीं चलाना। उसे यह सुनिश्चित करना है कि चैरिटी कानून के हिसाब से बोर्ड का संचालन हो। यह धर्म का नहीं, प्रशासन का काम है।

वक्फ बोर्ड का काम वक्फ की संपत्तियां बेच खाने वालों को पकड़ कर बाहर निकालने का होना चाहिए। उसे ऐसे लोगों को पकड़ना चाहिए जिन्होंने वक्फ के नाम पर औने-पौने दाम में संपत्तियों को सौ-सौ साल तक किराए पर दे रखा है। वक्फ की आय कम होती जा रही है, जबकि वक्फ के पैसे से अल्पसंख्यक समुदाय का विकास होना चाहिए और इस्लाम धर्म की संस्थाओं को पुख्ता किया जाना चाहिए। इस पैसे की चोरी पर रोक लगाना ही वक्फ बोर्ड और उसके परिसर का काम होगा। विपक्ष चाहता है उनके राज में चलने वाली मिलीभगत चलती ही रहे, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।

अगर 2013 में वक्फ कानून में संशोधन नहीं किया गया होता, तो इस विधेयक को लाने की नौबत ही नहीं आती। लेकिन 2014 में चुनाव से पहले 2013 में रातों-रात तुष्टीकरण की खातिर वक्फ कानून को Extreme बना दिया गया, जिसके कारण दिल्ली में लुटियन्स जोन की 123 वीवीआईपी संपत्ति वक्फ को दे दी गई। दिल्ली वक्फ बोर्ड ने उत्तरी रेलवे की भूमि वक्फ के नाम कर दी। वहीं, हिमाचल प्रदेश में वक्फ की संपत्ति बता कर उस जमीन पर अवैध मस्जिद बनाने का काम किया गया। तमिलनाडु के 1500 साल पुराने तिरुचेंदूर मंदिर की 400 एकड़ भूमि को वक्फ की संपत्ति घोषित कर दिया गया। कर्नाटक की एक समिति की रिपोर्ट के अनुसार, 29,000 एकड़ वक्फ भूमि व्यावसायिक उपयोग के लिए किराए पर दे दी गई। वर्ष 2001 से 2012 के बीच 2 लाख करोड़ रुपए मूल्य की वक्फ संपत्ति निजी संस्थानों को 100 साल की लीज पर सौंप दी गई। बेंगलुरु में उच्च न्यायालय को हस्तक्षेप करना पड़ा, जिसके बाद 602 एकड़ भूमि के अधिग्रहण को रोका गया। विजयपुर, कर्नाटक के होनवाड़ गांव की 1500 एकड़ भूमि को विवादित बनाकर 500 करोड़ रुपए मूल्य की इस जमीन को फाइव-स्टार होटल को मात्र 12,000 रुपए प्रति माह के किराए पर दे दिया गया।

यह सारा पैसा गरीब मुसलमानों के कल्याण के लिए है, न कि धनकुबेरों की लूट के लिए। कर्नाटक में दत्तपीठ मंदिर पर दावा किया गया। तालीपरंबा में 75 साल पुराने एक दावे के आधार पर 600 एकड़ भूमि पर कब्जे की कोशिश की गई। ईसाई समुदाय की संपत्तियों पर भी कब्जा किया गया। देश के कई चर्चों ने वक्फ बिल का विरोध किया है, क्योंकि वे इसे मुस्लिम समुदाय की सहानुभूति जीतने का जरिया मानते हैं। लेकिन चार साल में मुस्लिम भाइयों को भी पता चल जाएगा कि यह विधेयक तो उनके फायदे का है।

तेलंगाना में 66 हजार करोड़ रुपए की 1700 एकड़ जमीन पर दावा कर दिया, वहीं असम में मोरीगांव जिले की 134 एकड़ भूमि पर दावा किया गया। गुरुद्वारे से संबंधित हरियाणा की चौदह मरला भूमि को वक्फ को सौंप दिया और प्रयागराज में चंद्रशेखर आजाद पार्क को भी वक्फ की संपत्ति घोषित कर दिया। महाराष्ट्र के वडांगे गांव में महादेव के मंदिर पर दावा किया और बीड में कंकलेश्वर की 12 एकड़ जमीन वक्फ बोर्ड ने जबरन ले ली।

मुस्लिम भाइयों के धार्मिक क्रियाकलाप और उनके बनाए हुए दान से जुड़े ट्रस्ट यानि वक्फ में सरकार कोई दखल नहीं करना चाहती। मुतवली, वाकिफ, वक्फ सब उनके ही होंगे, परन्तु यह जरूर देखा जाएगा कि वक्फ की संपत्ति का रखरखाव ठीक से हो रहा है या नहीं। वक्फ का संचालन कानून के हिसाब से हो रहा है या निजी उपयोग के हिसाब से हो रहा है। सैकड़ों साल पहले किसी बादशाह की दान की गई संपत्ति को

12 हजार रुपए के मासिक किराये पर पांच सितारा होटल बनाने के लिए देना कहाँ तक उचित है। वह पैसा गरीब मुसलमानों, तलाकशुदा महिलाओं, अनाथ बच्चों, बेरोजगार मुसलमानों के भलाई और उन्हें हुनरमंद बनाने के लिए किया जाना चाहिए। वक्फ के पास लाखों करोड़ों रुपए की भूमि है, लेकिन आय सिर्फ 126 करोड़ रुपए है।

जब 2013 का संशोधन विधेयक पेश किया था, उस समय सरकार में रहे वरिष्ठ नेताओं ने वक्फ की संपत्ति की लूट-खसोट रोकने के लिए कड़े कानून बनाने और दोषियों को सलाखों के पीछे भेजने की वकालत की थी। मौजूदा विधेयक से पारदर्शी ऑडिट हो सकेगा। विपक्ष ने अपने संशोधन में लिखा था कि वक्फ बोर्ड के आर्डर को कोर्ट में चैलेंज नहीं कर सकते, लेकिन सच यह है कि इसे अदालत में चुनौती देने का प्रावधान है। यह विधेयक retrospective effect से लागू नहीं होगा लेकिन विपक्ष द्वारा मुस्लिमों को डराया जा रहा है।

वक्फ से जुड़े विधेयक में जिला कलेक्टर की भूमिका पर कहा कि देश में जब किसी मंदिर के लिए जमीन खरीदनी होती है तो कलेक्टर ही यह तय करता है कि जमीन का मालिकाना हक किसके पास है। फिर वक्फ की भूमि की जांच कलेक्टर द्वारा किए जाने पर आपत्ति क्यों है? वक्फ की भूमि सरकारी है या नहीं, इसे कलेक्टर ही सत्यापित कर सकता है।

नरेन्द्र मोदी सरकार का स्पष्ट सिद्धांत है कि वोट बैंक के लिए हम कोई कानून नहीं लाएंगे क्योंकि कानून न्याय और लोगों के कल्याण के लिए होता है। इसी सदन में मोदी सरकार महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण का कानून लाई और पिछड़ों को संवैधानिक अधिकार दिया गया। सबको अपने धर्म का अनुसरण करने का अधिकार है, लेकिन लोभ, लालच और भय से धर्म परिवर्तन नहीं कराया जा सकता।

2013 में लाए गए संशोधन विधेयक पर दोनों सदनों में कुल मिलाकर साढ़े 5 घंटे चर्चा हुई जबकि इस बिल पर दोनों सदनों को मिलाकर 16 घंटे चर्चा हो रही है। हमने संयुक्त समिति बनाई, 38 बैठकें हुईं, 113 घंटे चर्चा हुई और 284 हितधारक बनाए गए। इन सबसे देशभर से लगभग एक करोड़ ऑनलाइन सुझाव आए जिनकी मीमांसा कर यह कानून बनाया गया और इसे ऐसे खारिज नहीं कर सकते। सदन में हर सदस्य बोलने के लिए स्वतंत्र है यहाँ किसी एक परिवार की नहीं चलती है। सांसद जनता के नुमाइंदे हैं, किसी की कृपा से नहीं आए हैं और वे जनता की आवाज को रखेंगे।

यह देश की संसद द्वारा बनाया गया कानून है जिसे सबको स्वीकारना पड़ेगा। यह भारत सरकार का कानून है जो सब पर बाध्य है और सभी को इसे स्वीकारना होगा। 1913 से 2013 तक वक्फ बोर्ड की कुल भूमि 18 लाख एकड़ थी, जिसमें 2013 से 2025 के बीच 21 लाख एकड़ भूमि और बढ़ गई। इस 39 लाख एकड़ भूमि में 21 लाख एकड़ भूमि 2013 के बाद की है। लीज पर दी गई संपत्तियां 20 हजार थीं, लेकिन रिकॉर्ड के हिसाब से 2025 में ये संपत्तियां शून्य हो गईं। ये संपत्तियां बेच दी गईं। कैथौलिक और चर्च संगठनों ने इस कानून को अपना समर्थन दिया है और 2013 के संशोधन को अन्यायी बताया है।

यह विधेयक जमीन की सुरक्षा प्रदान करेगा, किसी की जमीन घोषणा मात्र से वक्फ नहीं बनेगी और उसे सुरक्षा मिलेगी। पुरातत्व विभाग और भारतीय पुराततव सर्वेक्षण की जमीन को सुरक्षा देंगे और शेड्यूल 5 और 6 के अनुसार आदिवासियों की जमीन सुरक्षित हो जाएगी। इसके साथ ही आम नागरिक की निजी संपत्ति भी सुरक्षित हो जाएगी। दान तो सिर्फ अपनी संपत्ति का ही किया जा सकता है इसीलिए स्वामित्व के बिना वक्फ निजी संपत्ति नहीं ले पाएगा। पारदर्शिता लाने के लिए वक्फ अधिनियम में सूचना देने की प्रक्रिया को शामिल किया गया है।

वक्फ की संपत्ति घोषित करने के अधिकार को समाप्त कर दिया गया है और अब इसे कलेक्टर से सत्यापित करवाना होगा। इसके साथ ही नए वक्फ का पारदर्शी तरीके से पंजीकरण भी करवाना होगा। अब मुस्लिम भी वक्फ ट्रस्ट एक्ट के अंतर्गत अपना ट्रस्ट रजिस्टर करवा सकते हैं। इसके लिए वक्फ कानून जरूरी नहीं है।

अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों में भय पैदा करना का फैशन बन गया है। राम जन्मभूमि मंदिर, ट्रिपल तलाक और नागरिकता संशोधन अधिनियम (CAA) के समय भी मुस्लिम समुदाय के लोगों में भय पैदा करने की कोशिश की गई, लेकिन मुस्लिम समुदाय भी जानता है कि भय की कोई बात नहीं थी। विपक्ष कहता था कि CAA से मुसलमानों की नागरिकता चली जाएगी लेकिन दो साल हो गए किसी की नागरिकता नहीं गई। अगर CAA से किसी की नागरिकता गई है तो वह उसकी जानकारी सदन के पटल पर रखे। धारा 370 हटाने पर भी मुसलमानों को डराने का प्रयास किया गया लेकिन आज वहाँ एक निर्वाचित सरकार है, आतंकवाद समाप्त हो गया, विकास शुरू हो गया और पर्यटन बढ़ गया।

विपक्षी पार्टी और उसके सहयोगी दलों ने मुसलमान भाइयों को डरा -डरा कर अपनी वोटबैंक खड़ी करने का काम किया है। मोदी सरकार का यह संकल्प है कि इस देश के किसी भी नागरिक को चाहे वह किसी भी धर्म को हो कोई आँच नहीं आएगी। ▪

वक्फ संशोधन बिल-2025 महत्वपूर्ण कदम डॉ. यादव

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी सभी वर्गों के हितों के प्रति संवेदनशील हैं, इसी का परिणाम है कि वक्फ (संशोधन) बिल-2025 लोकसभा और राज्यसभा में बहुमत से पारित हुआ। यह बिल वक्फ संपत्तियों के कुशल प्रबंधन, पारदर्शिता और सुरक्षा को सुनिश्चित करेगा। साथ ही इस बिल से गरीब मुस्लिम भाई-बहनों के हितों की रक्षा होगी। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश में महिलाएं निरंतर सशक्त हो रही हैं। इस दिशा में यह विधेयक मुस्लिम महिलाओं सहित संपूर्ण समाज को और अधिक सशक्त करेगा तथा उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव का मार्ग प्रशस्त होगा।

यह बिल निश्चित ही डिजिटलीकरण को बढ़ावा देकर वक्फ संपत्तियों में होने वाली वित्तीय गड़बड़ियों और अवैध कब्जों पर लगाम लगाकर राज्यों के वक्फ बोर्ड के राजस्व में वृद्धि करेगा। निश्चित रूप से सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के संकल्प को साकार करता यह महत्वपूर्ण कदम नए, सशक्त और विकसित भारत की ओर एक नया मील का पत्थर सिद्ध होगा। लोकसभा और राज्यसभा में यह बिल बहुमत से पारित हुआ। लोकतंत्र के मूल भाव के अनुसार दोनों सदनों के सम्मानीय सदस्यों के बीच विचारों का आदान-प्रदान हुआ। ▪

विकास यात्रा में संस्कृति संरक्षण आवश्यक - प्रधानमंत्री

हमारा भारत ऋषियों, मनीषियों और संतों की धरती है।

जब-जब हमारा भारत, हमारा समाज किसी मुश्किल दौर से गुजरता है, कोई न कोई ऋषि, मनीषी इस धरती पर अवतरित होकर समाज को नई दिशा देता है।

- **विकास के साथ-साथ विरासत के मंत्र के साथ नया भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है।**
- **गरीब और वंचित के उत्थान का संकल्प, 'सबका साथ, सबका विकास' का मंत्र, सेवा की यही भावना सरकार की नीति भी है और निष्ठा भी है।**
- **भारत जैसे देश में हमारी संस्कृति केवल हमारी पहचान से ही नहीं जुड़ी है, हमारी संस्कृति ही हमारे सामर्थ्य को मजबूती देती है।**

जिस भूमि का कण-कण संतों की तपस्या से सींचा गया हो, जहां परमार्थ एक परंपरा बन चुका हो, जहां सेवा के संकल्प मानवता के कल्याण का पथ प्रशस्त करते हों, वो धरती साधारण नहीं है। और इसीलिए, हमारे संतों ने अशोक-नगर के बारे में कहा था, कि यहाँ शोक आने से डरता है।

1936 में, श्री द्वितीय पादशाही जी को महासमाधि दी गई थी। 1964 में श्री तृतीय पादशाही जी, निज स्वरुप में लीन हुए थे।

हमारा भारत ऋषियों, मनीषियों और संतों की धरती है। जब-जब हमारा भारत, हमारा समाज किसी मुश्किल दौर से गुजरता है, कोई न कोई ऋषि, मनीषी इस धरती पर अवतरित होकर समाज को नई दिशा देता है। हम पूज्य स्वामी अद्वैत आनंद जी महाराज के जीवन में भी इसकी झलक देख सकते हैं। एक समय था, जब आदि शंकराचार्य जैसे आचार्यों ने अद्वैत दर्शन के गहरे ज्ञान की व्याख्या की थी। गुलामी के कालखंड में समाज उस ज्ञान को भूलने लगा था। लेकिन उसी कालखंड में ऐसे ऋषि-मुनि भी आए, जिन्होंने अद्वैत के विचार से राष्ट्र की आत्मा को झकझोरा। इसी परंपरा में पूज्य अद्वैत आनंद जी महाराज ने भारत के जन-सामान्य तक इसे पहुंचाने का बीड़ा उठाया। महाराज जी ने अद्वैत के ज्ञान को हम सभी के लिए और सरल बनाया, उसे सामान्य मानवी के लिए सुलभ कर दिया।

आज दुनिया में भौतिक उन्नति के बीच मानवता के लिए युद्ध, संघर्ष और मानवीय मूल्यों से जुड़ी कई बड़ी चिंताएँ भी हमारे सामने हैं। इन चिंताओं, इन चुनौतियों की जड़ में क्या है? इनकी जड़ में है- अपने और पराए की मानसिकता! वो मानसिकता- जो मानव को मानव से दूर करती है। आज विश्व भी सोच रहा है, इनका समाधान कहाँ मिलेगा? इनका समाधान मिलेगा, अद्वैत के विचार में! अद्वैत यानी, जहां कोई द्वैत नहीं है। अद्वैत यानी, जीव मात्र में एक ही ईश्वर को देखने का विचार! इससे भी आगे, सम्पूर्ण सृष्टि को ईश्वर का स्वरूप देखने की सोच ही अद्वैत है। इसी अद्वैत सिद्धान्त को परमहंस दयाल महाराज सरल शब्दों में कहते थे- जो तू है सो मैं हूं। सोचिए, कितनी सुंदर बात है, जो तू है सो मैं हूं। ये विचार मेरे और तुम्हारे का भेद खत्म कर देता है। और विचार सब मान लें तो सारे झगड़े ही खत्म हो जाएं।

आनंदधाम में साधना के जो 5 नियम तय किए गए हैं, उनमें निष्काम सेवा भी एक है। निष्काम भाव से गरीब-वंचित की सेवा, नर सेवा में नारायण सेवा को देखने की भावना, ये हमारी संस्कृति का आधार है। सेवा की इसी संस्कृति को आनंदपुर ट्रस्ट पूरे मनोयोग से आगे बढ़ा रहा है। ट्रस्ट द्वारा संचालित अस्पताल में हजारों मरीजों का इलाज होता है। इलाज के लिए मुफ्त शिविर लगाए जाते हैं। गौसेवा के लिए आधुनिक गौशाला भी चलाई जाती है। नई पीढ़ी के निर्माण

के लिए ट्रस्ट की ओर से कई स्कूल भी चलाये जा रहे हैं। और इतना ही नहीं, आनंदपुर धाम पर्यावरण संरक्षण के जरिए पूरी मानवता की बड़ी सेवा कर रहा है। आश्रम के अनुयायियों ने हजारों एकड़ बंजर जमीन को हरा-भरा बनाया है। आज इस आश्रम द्वारा लगाए गए हजारों पेड़ परमार्थ के काम आ रहे हैं।

सेवा की यही भावना आज हमारी सरकार के हर प्रयास के केंद्र में है। आज हर जरूरतमंद प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के कारण खाने की चिंता से मुक्त है। आज हर गरीब और बुजुर्ग आयुष्मान योजना के कारण इलाज की चिंता से मुक्त है। आज हर गरीब पीएम आवास योजना के कारण अपने पक्के घर की चिंता से मुक्त हो रहा है। आज जल जीवन मिशन योजना के कारण गाँव-गाँव में पानी की समस्या का समाधान हो रहा है। देश में रिकॉर्ड संख्या में नए एम्स, IITs और IIMs खुल रहे हैं। गरीब से गरीब वर्ग के बच्चों के सपने साकार हो पा रहे हैं। हमारा पर्यावरण स्वच्छ हो, प्रकृति संरक्षित रहे, इसके लिए सरकार ने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान भी शुरू किया है। आज इस अभियान के तहत करोड़ों पेड़ देश में लगाए जा चुके हैं। देश इतने बड़े स्तर पर इतना कुछ कर पा रहा है, तो इसके पीछे हमारा सेवाभाव ही है। गरीब और वंचित के उत्थान का संकल्प 'सबका साथ, सबका विकास' का मंत्र, सेवा की ये भावना, आज ये सरकार की नीति भी है और निष्ठा भी है।

जब हम सेवा के संकल्प से जुड़ते हैं, तो हम केवल दूसरों का ही भला नहीं कर रहे होते हैं। सेवा की भावना हमारे व्यक्तित्व को भी निखारती है, हमारी सोच को व्यापक बनाती है। सेवा हमें व्यक्तिगत दायरों से निकालकर समाज और राष्ट्र और मानवता के बड़े उद्देश्यों से जोड़ती है। हम सेवा के लिए मिल-जुलकर, एक जुट होकर काम करना सीखते हैं। हम जीवन के अलग-अलग पहलुओं को समझते हैं। आप सब सेवाकार्यों के लिए समर्पित लोग हैं। आपने अपने जीवन में अनुभव किया होगा, कठिनाइयों से लड़ना और फिर कठिनाइयों से जीतना, सेवा करते-करते हम सहज ही ये सब सीख जाते हैं। सेवा एक साधना है, एक ऐसी गंगा है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को जरूर डुबकी लगानी चाहिए।

अशोक-नगर और आनंदपुर धाम जैसे ये क्षेत्र, जिन्होंने देश को इतना कुछ दिया है, इनका विकास भी हमारी जिम्मेदारी है। इस क्षेत्र को कला, संस्कृति और प्राकृतिक सौन्दर्य का वरदान प्राप्त है। यहाँ विकास और विरासत की असीम संभावनाएं हैं! इसलिए हम एमपी और अशोकनगर में विकास को तेज गति से बढ़ा रहे हैं। चंदेरी हैंडलूम को नई ऊंचाई तक ले जाने के लिए चंदेरी साड़ी को जी-आई टैग दिया गया है। प्राणपुर में क्राफ्ट हैंडलूम टूरिज्म विलेज शुरू हुआ है। इससे इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को भी नई गति मिलेगी। मध्य प्रदेश की सरकार अभी से ही उज्जैन सिंहस्थ की तैयारियों में भी जुट गई है।

हम देश में 'राम वनगमन पथ का विकास कर रहे हैं। इस राम वनगमन पथ का एक अहम हिस्सा मध्यप्रदेश से होकर गुजरेगा। और हमारा एमपी पहले से ही अजब और गजब है। इन कार्यों से उसकी पहचान और मजबूत होगी।'

देश ने 2047 तक विकसित भारत बनने का लक्ष्य तय किया है। हमें पूरा विश्वास है कि ये लक्ष्य हम जरूर हासिल कर लेंगे। लेकिन इस यात्रा में हमें कुछ महत्वपूर्ण बातों को हमेशा ध्यान में रखना है। हम देखते हैं, दुनिया के कई देश विकास यात्रा में अपनी संस्कृति से कट गए, उन्होंने अपनी परंपराएं भुला दीं। भारत में हमें अपनी पुरातन संस्कृति को संरक्षित करके रखना है। हमें ध्यान रखना हैं, भारत जैसे देश में हमारी संस्कृति केवल हमारी पहचान से ही नहीं जुड़ी है। हमारी संस्कृति ही हमारे सामर्थ्य को मजबूती देती है। आनंदपुर धाम के सेवा कार्य विकसित भारत के संकल्प को नई ऊर्जा से आगे बढ़ाएँगे। ▪

2026 तक नक्सलवाद से मुक्ति- अमित शाह

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है। उनके मार्गदर्शन में वर्ष 2026 तक देश नक्सलवाद से मुक्त होगा। ▪

देखो हम बढ़ते ही जाते

अटल बिहारी वाजपेयी

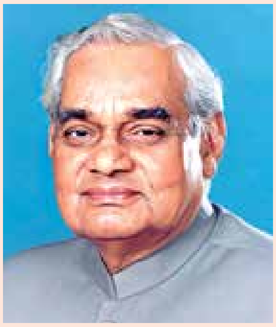

उज्ज्वलतर उज्ज्वलतम होती है
महासंगठन की ज्वाला,
प्रतिपल बढ़ती ही जाती है
चण्डी के मुण्डों की माला।

यह नागपुर से लगी आग
ज्योतित भारत माँ का सुहाग,
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम
दिशि-दिशि गूँजा संगठन राग।

केशव के जीवन का पराग
अन्तस्थल की अवरुद्ध आग,
भगवा ध्वज का संदेश त्याग
वन विजन कान्त नगरी अशान्त
पंजाब सिन्ध संयुक्त प्रान्त,

केरल कर्नाटक औ' बिहार
कर पार चला संगठन राग
हिन्दू-हिन्दू मिलते जाते
देखो हम बढ़ते ही जाते।

यह माधव अथवा महादेव
निज जटाजूट में धारण कर
मस्तक पर धरे झरझर निर्झर
आप्लावित तन मन प्राण- प्राण
हिन्दु ने निज को पहचाना,
कर्त्तव्य कर्म सर-संधाना।

है ध्येय दूर, संसार क्रूर, मदमत्त चूर
पथ भरा शूल, जीवन दुकूल,
जननी के पग की तनिक धूल
माथे पर ले, चल दिये सभी मदमाते।
देखो हम बढ़ते ही जाते।

बाबा साहब को सम्मान, दलितों को अधिकार- विष्णुदत्त शर्मा

- **बाबा साहब ने संविधान के माध्यम से देश को एक सूत्र में बांधा।**
- **डॉ. अंबेडकर ने किया था जम्मू-कश्मीर में धारा-370 का विरोध।**
- **कांग्रेस ने किया बाबा साहब का अपमान, भाजपा ने उनके सम्मान में बनाएं पंचतीर्थ।**
- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी बाबा साहब के विचारों को जमीन पर उतार रहे हैं।**

आजादी के बाद कांग्रेस पार्टी ने देश में 55 वर्षों तक शासन किया। कांग्रेस ने अपने नेताओं को तो सम्मान दिया, लेकिन बाबा साहब अंबेडकर को सम्मान देने के स्थान पर उनका अपमान किया और चुनाव हराने का काम किया।

पहली बार श्रद्धेय अटलजी के नेतृत्व में बनी एनडीए की सरकार ने यह कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारत रत्न से सम्मानित किया जाना चाहिए।

बाबा साहब अंबेडकर की जयंती सभी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए बाबा साहब की जयंती सिर्फ 14 अप्रैल तक सीमित नहीं रहती बल्कि ये अखिल भारतीय स्तर के कार्यक्रमों में शामिल है और बूथ-बूथ पर पार्टी कार्यकर्ता डॉ. अंबेडकर की जयंती मनाते हैं। डॉ. अंबेडकर एक विजनरी नेता थे और उन्होंने अपने बड़े मन से देश की एकता-अखंडता के लिए काम करते हुए संविधान के माध्यम से देश को एक सूत्र में बांधने का काम किया।

आजादी के बाद कांग्रेस पार्टी ने देश में 55 वर्षों तक शासन किया। कांग्रेस ने अपने नेताओं को तो सम्मान दिया, लेकिन बाबा साहब अंबेडकर को सम्मान देने के स्थान पर उनका अपमान किया और चुनाव हराने का काम किया। पहली बार श्रद्धेय अटलजी के नेतृत्व में बनी एनडीए की सरकार ने यह कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारत रत्न से सम्मानित किया जाना चाहिए। देश की आजादी के बाद जब पं. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में पहली सरकार बनी, तो पं. नेहरू ने जम्मू-कश्मीर में धारा 370 लगाने का प्रावधान हमारे संविधान में कर दिया। इसमें ये प्रावधान था कि जम्मू-कश्मीर का संविधान अलग होगा, वहां का प्रधानमंत्री अलग होगा और वहां का झंडा भी अलग होगा। इसके साथ ही इसमें यह प्रावधान भी था कि अगर किसी सफाई कर्मी का बच्चा योग्य भी है, तब भी वह कुछ और नहीं बन सकेगा, उसे अपना परंपरागत व्यवसाय ही करना होगा। इस भेदभाव का डॉ. अंबेडकर ने पुरजोर विरोध किया। देश की आजादी के बाद 75 वर्षों तक किसी ने इस भेदभाव की चिंता नहीं की। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 को हटाकर दलित भाई-बहनों के साथ हो रहे भेदभाव को खत्म किया और उन्हें अधिकार प्रदान किए।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने तो वंचितों को उनके अधिकार दिलाने के लिए धारा 370 हटाई, लेकिन कांग्रेस की सरकारों ने 75 बार संविधान में संशोधन किए। कांग्रेस के लोग संविधान में धर्म निरपेक्ष शब्द जोड़ना चाहते थे। वो संविधान में समाजवाद शब्द जोड़ना चाहते थे। लेकिन बाबा साहब अंबेडकर ने संविधान सभा में इसे नकार दिया था। कांग्रेस पार्टी अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो तथा तुष्टीकरण की भावना को संविधान में लाना चाहती थी। कांग्रेस के इन प्रयासों का विरोध करते हुए बाबा साहब ने कहा था कि मैं कम्युनिज्म में विश्वास नहीं करता। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि बाबा साहब एक विजनरी नेता थे और जल संरक्षण को लेकर उन्होंने महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। वो एक अर्थशास्त्री थे और रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना उन्हीं के विचारों से प्रेरित होकर की गई है। वो एक सामाजिक कार्यकर्ता और पर्यावरणविद् भी थे। उन्होंने विभिन्न विषयों पर समय-समय पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी बाबा साहब के विचारों को जमीन पर उतार रहे हैं।

हमारे लिए यह गर्व की बात है कि बाबा साहब ने मध्यप्रदेश की धरती महू में जन्म लिया था। भाजपा की सरकारों ने बाबा साहब के जन्म स्थान पर भव्य स्मारक का निर्माण कराया और पूर्व मुख्यमंत्री श्रद्धेय सुंदरलाल पटवा से लेकर श्री शिवराजसिंह चौहान और डॉ. मोहन यादव तक बाबा साहब को नमन करने के लिए वहां जाते रहे हैं। भाजपा की केंद्र सरकार ने नागपुर स्थित चैतन्य भूमि समेत उनके जीवन से जुड़े पंच तीर्थों का विकास किया है। देश और प्रदेश में लंबे समय तक कांग्रेस की सरकारें रहीं, लेकिन झूठ और छल-कपट की राजनीति करने वालों, तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों के मन में कभी ये विचार नहीं आया? बाबा साहब के विचार संपूर्ण भारत के विकास के लिए थे। ▪

वक्फ की जमीनों की बंदरबांट पर रोक लगेगी - विष्णुदत्त शर्मा

- **आदिवासी समाज की संपत्तियों को सुरक्षा देगा वक्फ संशोधन बिल।**
- **नए वक्फ संशोधन कानून को गांव-गांव तक पहुंचाएं कार्यकर्ता।**

पहले वक्फ बोर्ड किसी की भी जमीन पर अपना दावा कर सकता था और यह साबित करना जमीन मालिक की जिम्मेदारी होती थी कि वह जमीन उसकी है। यदि वह ऐसा नहीं कर पाता था, तो जमीन पर वक्फ बोर्ड का कब्जा हो जाता था। अनेक आदिवासी भाईयों की जमीनों पर भी इसी तरह कब्जा किया गया है। प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार ने वक्फ संशोधन बिल लाकर इस पर रोक लगा दी है। अनुसूचित जनजाति मोर्चा को वक्फ संशोधन बिल की ऐसी ही बातों को लेकर गांव-गांव जाना है और जनजागरण अभियान चलाना है।

इस बिल से संपत्ति पर अवैध कब्जे, वक्फ संपत्ति की बंदरबांट और दुरुपयोग पर रोक लगेगी। वक्फ की संपत्ति से होने वाली आय का उपयोग गरीब मुस्लिमों के कल्याण के लिए किया जा सकेगा। इसलिए इस बिल का व्यापक स्तर पर स्वागत किया जा रहा है। लेकिन इससे माफिया और ठेकेदार परेशान हैं, जो वक्फ की संपत्ति पर अवैध रूप से कब्जा करके बैठे हुए हैं। ये लोग इस संशोधन के विरोध में समाज में वातावरण बना रहे हैं। हमें इनके इन प्रयासों को नाकाम करना है।

बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के बारे में कांग्रेस ने जो भ्रांतियां फैला रखी थीं, वो अब काफी कुछ खत्म हो चुकी हैं। फिर भी आमजन को यह बताने की आवश्यकता है कि भाजपा बाबा साहब, देश और समाज के लिए क्या कर रही है? कांग्रेस की सरकारों ने देश के संविधान में 75 बार संशोधन अपने स्वार्थ और तुष्टिकरण के लिए किए थे। कांग्रेस ने संविधान में धर्मनिरपेक्ष और समाजवाद शब्द जोड़े, जिसका बाबा साहब ने विरोध किया था।

कांग्रेस ने धारा 370 लगाकर कश्मीर को देश से अलग करने का प्रयास किया। साथ ही सफाई कर्मी का बेटा सफाई कर्मी ही रहेगा इस व्यवस्था को मोदी जी की सरकार ने समाप्त किया। अभी संयुक्त संसदीय समिति वन नेशन, वन इलेक्शन के बारे में लोगों से बातचीत कर रही है। अजजा मोर्चा समाज के प्रबुद्धजनों को एक मंच पर लाकर इन मुद्दों पर चर्चा कराए। ▪

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती

भाजपा बाबा साहब के सपनों को साकार कर रही है- हितानंद जी

- **बाबा साहब ने देश को संविधान दिया, लेकिन कांग्रेस ने सदैव उनका अपमान किया।**

बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने देश को संविधान दिया, जिस संविधान के तहत आज देश आगे बढ़ रहा है। लेकिन कांग्रेस पार्टी ने आजादी के बाद से ही बाबा साहब को अपमानित करने का कार्य किया, इतना ही नहीं उन्हें चुनाव हराने का भी पाप कांग्रेस के नेताओं ने किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकारें बाबा साहब के सपनों को साकार कर रही हैं। हम सबके लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि बाबा साहब का जन्म मध्यप्रदेश के महू में हुआ। उनकी अद्वितीय प्रतिभा को देखते हुए उन्हें उनके शिक्षक ने अंबेडकर सरनेम दिया। एक ब्राह्मण ने उनकी पढ़ाई का खर्च उठाया और उन्हें विदेश पढ़ने भेजा। शिक्षा ग्रहण करने के बाद भारत के वीर सपूत बाबा साहब ने देश की आजादी के बाद भारत का संविधान बनाया, जिसके आधार पर आज देश आगे बढ़ रहा है। लेकिन कांग्रेस ने बाबा साहब को हमेशा से अपमानित किया और उन्हें आगे बढ़ने से रोका। इतना ही नहीं कांग्रेस पार्टी के नेताओं ने बाबा साहब को चुनाव हराने का प्रयास किया, क्योंकि उन्हें मालूम था कि बाबा साहब जैसे देशभक्त सपूत अगर चुनाव जीत जाएंगे तो कांग्रेस के नेताओं की देश के प्रति उदासीनता जनता के सामने लाएंगे। बाबा साहब के विचारों और उनके सपनों को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकारें पूरा कर रही हैं। डॉ. अम्बेडकर के विचार और उनके द्वारा रचित संविधान हम सभी को समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की प्रेरणा देते हैं। हम सभी को बाबा साहब के विचारों को आत्मसात करने के साथ उनके बताए मार्ग पर चलने की आवश्यकता है, तभी और तीव्रगति से देश आगे बढ़ेगा और अपने पुराने वैभव को प्राप्त करेगा। ▪

भाजपा गरीबों के कल्याण हेतु-डॉ. मोहन यादव

- **25 गाय के दुग्ध उत्पादक गौपालकों को मिलेगा 25 प्रतिशत अनुदान।**
- **कांग्रेस के 55 साल के शासन में गेहूं का समर्थन मूल्य 500 रूपए था, आज 2600 में गेहूं खरीद रहे।**
- **उद्योगों के जरिए हजारों लोगों को रोजगार मिलेगा।**

देश में करीब 50 वर्षों तक शासन करने वाली कांग्रेस पार्टी ने कभी भी माताओं-बहनों की भलाई की चिंता नहीं की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार लाड़ली बहनों का ध्यान रख रही और उनके आर्थिक सशक्तिकरण और उत्थान के लिए लाड़ली लक्ष्मी, लाड़ली बहना जैसी कई योजनाएं चला रही है। मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने एक लाख पदों की भर्ती का अभियान चला रही है। प्रदेश सरकार प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने 25 गाय से अधिक गाय पालने वाले दुग्ध उत्पादक गौपालकों को 25 प्रतिशत अनुदान देने का निर्णय लिया है।

कांग्रेस के कार्यकाल में वर्ष 1977 में सरदार सरोवर बांध की शुरूआत की थी, इस अधूरी परियोजना को पूरा करने का कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया। कांग्रेस के 55 साल के शासनकाल में गेहूं का समर्थन मूल्य 500 रूपए प्रति क्विंटल था। मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार 2600 रूपए प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य पर किसानों से गेहूं खरीद रही है। भारत में देवता से ज्यादा मां-देवियों की पूजा की जाती है। दुनिया में भारत की पहचान भारत माता के रूप में है। विपक्ष को कभी बहनों की याद नहीं आई, भाजपा सरकार मध्यप्रदेश की करीब सवा करोड़ लाड़ली बहनों के बैंक खाते में प्रति माह 1250 रूपए भेज रही है। कांग्रेस सरकारों ने कभी भी बहन-बेटियों के हित में योजनाऐं नहीं बनाईं। भाजपा सरकार ने बहनों को प्रापर्टी खरीदने पर दो प्रतिशत की छूट देने के साथ नगरीय निकाय व स्थानीय निकाय में 50 प्रतिशत आरक्षण दिया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार लाड़ली बहनों का ध्यान रख रही और उनके आर्थिक सशक्तिकरण और उत्थान के लिए लाड़ली लक्ष्मी, लाड़ली बहना जैसी कई योजनाएं चला रही है।

मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने एक लाख पदों की भर्ती का अभियान चला रही है।

प्रदेश सरकार एक लाख पदों पर भर्ती का अभियान चला रही है। इसके साथ ही ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) के तहत 30 लाख करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव आए हैं। यह निवेश प्रस्ताव अब धरातल पर उतरने जा रहे हैं। उद्योगों की स्थापना से भी हजारों लोगों को रोजगार मिलेगा।

प्रदेश सरकार ने करीब चार लाख सरकारी कर्मचारियों की पदोन्नति का रास्ता निकाल लिया है। भाजपा सरकार लगातार गरीबों के कल्याण के लिए कार्य कर रही है। ▪

हर गांव तक सहकारी डेयरी का विस्तार होगा - अमित शाह

- मध्यप्रदेश में दूध उत्पादन में सहकारी डेयरी समितियों का योगदान बढ़ाने के लिए एनडीडीबी और एमपीसीडीएफ के बीच अनुबंध।
- इस एमओयू से मध्यप्रदेश के हर गांव तक सहकारी डेयरी का विस्तार होगा।
- गाँवों में सहकारी दुग्ध उत्पादक समिति स्थापित होने से मिल्क प्रोसेसिंग की क्षमता अनेक गुणा बढ़ेगी, इससे किसान समृद्ध होंगे।
- मोदी सरकार, मध्यप्रदेश सरकार के साथ मिलकर राज्य के किसानों की भलाई के लिए हर संभव कदम उठाने के लिए कटिबद्ध।
- विपक्षी सरकार के समय मध्य प्रदेश में सहकारी क्षेत्र ने दम तोड़ दिया था, प्रदेश में सहकारी क्षेत्र को जीवित करने का यह स्वर्णिम अवसर है।
- मोदी सरकार द्वारा बनाई गई तीन मल्टीस्टेट को-ऑपरेटिव से किसानों को उपज का उचित दाम, निर्यात के लिए प्लेटफार्म और मुनाफा सीधे बैंक खाते में पहुँच रहा है।
- जो पैक्स पहले सिर्फ लघु अवधि के कृषि ऋण देते थे, अब वे 20 से अधिक प्रकार की सेवाएं प्रदान कर रहे, जिससे उनकी आय बढ़ी है।

सहकारिता मंत्रालय के गठन के बाद से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सहकारिता क्षेत्र में बड़ा बदलाव आया है और अब यह क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमारे संविधान में जो मर्यादाएं थीं, वो आज भी हैं।

मध्य प्रदेश में कृषि, पशुपालन और सहकारिता, तीनों क्षेत्र में ढेर सारी संभावनाएं मौजूद हैं और उनका शत-प्रतिशत दोहन करने के लिए ढेर सारा काम करने की जरूरत है। सालों से देश में सहकारिता आंदोलन मृतप्राय होता जा रहा था और देश में अलग-अलग स्तर पर बंटा हुआ था। इसकी वजह यह थी कि सहकारी कानूनों में समय के साथ जरूरी बदलाव नहीं हुए।

हमारे संविधान में मल्टी-स्टेट कोऑपरेटिव छोड़कर सारे कोऑपरेटिव राज्यों का विषय है। देश में तेजी से बदलती हुई परिस्थितियों के अनूकूल कानून बनाने की पहल कभी नहीं की गई। हर राज्य की भौगोलिक परिस्थिति, बारिश की स्थिति, ग्रामीण विकास, कृषि विकास और पशुपालन के आयाम को ध्यान में रखते हुए कभी राष्ट्रीय स्तर पर कोई विचार किया ही नहीं गया। यह विचार होता भी कैसे, क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर कोई सहकारिता मंत्रालय ही नहीं था। आजादी के 75 साल बाद देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सहकारिता मंत्रालय की स्थापना की।

सहकारिता मंत्रालय के गठन के बाद से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सहकारिता क्षेत्र में बड़ा बदलाव आया है और अब यह क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमारे संविधान में जो मर्यादाएं थीं, वो आज भी हैं। आज भी सहकारिता राज्य का विषय है। भारत सरकार सहकारिता के क्षेत्र में कोई कानूनी बदलाव नहीं कर सकती। लेकिन फिर भी प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) को पुनर्जीवित करने, डेयरी क्षेत्र को बढ़ावा देने, उत्पादन के क्षेत्र में सहकारिता को ले जाने, शहरी सहकारी बैंकों, जिला सहकारी बैंकों और ग्रामीण बैंकों के सुचारू व्यवस्थापन की दिशा में प्रयास किए गए हैं।

सहकारिता मंत्रालय ने सबसे पहले पैक्स के लिए मॉडल बायलॉज बनाने का काम किया और

राज्य सरकारों को इसे स्वीकृति के लिए भेजा। आज सम्पूर्ण भारत ने इन मॉडल बायलॉज को स्वीकार कर लिया है। इस कदम से सहकारिता क्षेत्र में नई जान आई है। जब तक पैक्स मजबूत नहीं होती, तब तक तीन स्तरीय सहकारी खाका मजबूत नहीं हो सकता। पहले पैक्स सिर्फ लघु अवधि के कृषि ऋण देने का काम करते थे, लेकिन आज पैक्स 20 से अधिक प्रकार की सेवाएं प्रदान कर रहे और नए सुधारों से पैक्स की आय भी बढ़ेगी।

पैक्स को जन औषधि केन्द्र, जल वितरण, कॉमन सर्विस सेंटर जैसी सेवाएं प्रदान करने के लिए अनुमति दी गई है। आज 300 से ज्यादा योजनाएं पैक्स के कंप्यूटर पर लोगों के लिए उपलब्ध हैं। रेल टिकट, बिजली बिल, पानी बिल, जन्म और मृत्यु प्रमाण-पत्र लेने के लिए किसी को गांव के बाहर जाने की जरुरत नहीं है, यह सारी सुविधाएं अब पैक्स में उपलब्ध हैं। ढेर सारे पैक्स ने इन सेवाओं से आय प्राप्त की है। पैक्स अब फर्टिलाइजर के डीलर भी बन सकते हैं, पेट्रोल पंप भी शुरू कर सकते हैं, रसोई गैस का वितरण भी कर सकते हैं और हर घर नल योजना का व्यवस्थापन भी कर सकते हैं।

नए बायलॉज के तहत पैक्स, डेयरी सहकारी समितियों और मत्स्य सहकारी समितियों को एक कर बहुद्देशीय पैक्स (एमपीएसीएस) बनाने का काम हुआ। भारत सरकार ने 2500 करोड़ रुपए खर्च करके देश के सभी पैक्स का कंप्यूटराइजेशन कराया है। पैक्स के कंप्यूटराइजेशन में पूरे देश में मध्यप्रदेश का पहला स्थान है। अब जिला सहकारी बैंक और राज्य सहकारी बैंक कंप्यूटर नेटवर्क के कारण नाबार्ड से जुड़े हुए हैं। अब ऑनलाइन ऑडिट की व्यवस्था होने से सहकारिता के क्षेत्र में पारदर्शिता भी आई है।

कंप्यूटराइज हो चुके पैक्स भारत की 13 भाषाओं में किसान की भाषा में काम कर रहे हैं। भारत सरकार ने पैक्स के लिए ऐसा सॉफ्टवेयर तैयार कराया है कि अगर किसान को बैंक अकाउंट खोलना है, तो मध्यप्रदेश में हिन्दी में काम होगा, गुजरात है तो गुजराती में, बंगाल है तो बंगाली में और तमिलनाडु है तो तमिल में काम होगा।

राष्ट्रीय स्तर की तीन नई सहकारी समितियाँ बनाई गई हैं। किसानों के उत्पाद को वैश्विक बाजार में बेचने के लिए राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (एनसीईएल) और किसानों को उनके ऑर्गेनिक उत्पाद के लिए ज्यादा दाम दिलाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक लिमिटेड (एनसीओएल) की स्थापना हुई। इन दोनों पहलों के कारण यह दोनों संस्थाएं आगामी 20 साल में अमूल और अन्य संस्थाओं से भी बड़ी संस्था बनने जा रही है। भारत के मीठे बीजों और नॉन हाइब्रिड बीजों के संरक्षण और संवर्धन के लिए भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (बीबीएसएसएल) नाम की राष्ट्रीय सहकारी संस्था बनाई गई है। पहले बीज की खेती बड़े किसान ही कर सकते थे, लेकिन अब 2.5 एकड़ की जोत वाले किसान को भी मौका दिया जा रहा। मोदी सरकार द्वार बनाई गई मल्टीस्टेट कोआपरेटिव एनसीईएल, एनसीओएल और बीबीएसएसएल से किसानों को उपज का उचित दाम, निर्यात के लिए प्लेटफार्म मिल रहा और मुनाफा सीधे बैंक खाते में पहुँच रहा है। एनसीईएल, एनसीओएल और बीबीएसएसएल के माध्यम से किसानों को अपनी उपज का उचित दाम और वैश्विक बाजार में जाने के लिए प्लेटफार्म मिलेगा, साथ ही मुनाफे की रकम भी सीधा किसानों के बैंक खाते में चली जाएगी, जो कि एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

हमने सहकारिता क्षेत्र में प्रशिक्षण के लिए त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी की स्थापना की है, जहां से सहकारिता क्षेत्र में काम करने वाले पेशेवर ट्रेनिंग प्राप्त कर निकलेंगे। इनमें अकाउंटेंट, डेयरी इंजीनियर, पशु चिकित्सक और कृषि वैज्ञानिक शामिल होंगे और इनका स्वभाव सहकारिता आधारित होगा।

मध्यप्रदेश में दूध उत्पादन में सहकारी डेयरी समितियों का योगदान बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) और मध्यप्रदेश सहकारी डेयरी फेडरेशन (एमपीसीडीएफ) के बीच अनुबंध हुआ है। इस एमओयू से मध्यप्रदेश के हर गांव तक सहकारी डेयरी का विस्तार होगा। अभी मध्यप्रदेश में साढ़े पाँच करोड़ लीटर दूध का उत्पादन होता है, जो देश में हो रहे कुल दूध उत्पादन का नौ प्रतिशत है। इसमें सहकारी डेयरियों से आ रहे दूध का हिस्सा एक प्रतिशत से भी कम है।

मध्य प्रदेश और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के बीच हुए अनुबंध से इस प्रतिशत में बढ़ोत्तरी होगी। जब किसान अपना दूध खुले बाजार में बेचने जाता है तो उसका शोषण होता है। हमारा लक्ष्य है कि तेजी से हर गांव के किसान को सहकारी डेयरी से जोड़ा जाए, साथ ही ऐसी व्यवस्था करनी है कि दूध से पनीर, दही, छाछ, मठा आदि बनाकर बेचा जाए और मुनाफा किसान को मिले। मध्य प्रदेश को आने वाले दिनों में प्राथमिक डेयरी का विस्तार करना है, दूध का कलेक्शन बढ़ाना है, पशुओं को अच्छा चारा उपलब्ध कराना है, उनकी ब्रीड सुधारना है ताकि हर पशु ज्यादा दूध दे। दूध को प्रोसेस करके ज्यादा मुनाफे के साथ उसे बेच पाने के लिए प्रोसेसिंग यूनिट भी लगाना है।

मध्य प्रदेश में मार्केटेबल दूध यानी पीने के बाद सरपल्स दूध साढ़े तीन करोड़ लीटर है, इनमें 2.5 प्रतिशत ही सहकारी डेयरी के पास आता है। मध्य प्रदेश के केवल 17 प्रतिशत गांवों में दूध के कलेक्शन की व्यवस्था है। नए अनुबंध से 83 प्रतिशत गांव तक सहकारी डेयरी के विस्तार संभावना बन गई है। शहर में दूध की मांग एक करोड़ 20 लाख लीटर प्रतिदिन है, जिस पर किसान को अपना ठीक से मुनाफा नहीं मिलता। इस अनुबंध से हमें शुरुआती पाँच साल के लिए लक्ष्य रखना चाहिए कि 50 प्रतिशत गांव में सहकारी प्राथमिक दुग्ध उत्पादक समिति की स्थापना हो। अगर 50 प्रतिशत गांव सहकारी दुग्ध उत्पादक समिति स्थापित हो गई,

तो सहकारी क्षेत्र में मिल्क प्रोसेसिंग की क्षमता अनेक गुणा बढ़ जाएगी। इससे किसान भी समृद्ध होंगे। इस प्रयास में मोदी सरकार और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड मध्य प्रदेश के किसानों के साथ चट्टान की तरह साथ है।

गुणवत्ता की जांच और किसानों को हर सप्ताह भुगतान सुनिश्चित हो, इसके लिए मध्य प्रदेश सहकारी डेयरी फेडरेशन (एमपीसीडीएफ) को नीति निर्माण और ब्रांडिंग का काम करना होगा। एनडीडीबी और एमपीसीडीएफ को आक्रामक तरीके से काम करना चाहिए ताकि कम से कम 50 प्रतिशत गांवों में डेयरी पहुंचे और किसानों को इसका फायदा हो। इसके लिए फाइनेंस की जरुरत होने पर भारत सरकार की राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी) निश्चित रुप से मदद करेगा।

किसानों को उसके दूध उत्पादन का शत प्रतिशत फायदा मिलना चाहिए, तभी दूध का उत्पादन बढ़ सकेगा। मोदी सरकार मध्यप्रदेश सरकार के साथ मिलकर राज्य के किसानों की भलाई के लिए हर संभव कदम उठाने के लिए कटिबद्ध है। मध्यप्रदेश में अब सुशासन है। विपक्षी सरकार के समय यहाँ सहकारी क्षेत्र ने दम तोड़ दिया था। सहकारी क्षेत्र को जीवित करने का अब स्वर्णिम अवसर है। मध्य प्रदेश को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। ▪

मप्र में विकास के नए आयाम स्थापित होंगे - विष्णुदत्त शर्मा

- **दुग्ध संघ और सहकारी क्षेत्र को सशक्त और ताकतवर बनाएगा नया अनुबंध।**
- **नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड ने गुजरात में बहुत अच्छा कार्य किया है।**

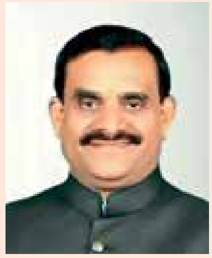

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड के साथ समझौता कराकर मध्यप्रदेश को सौगात दी है, समझौता मध्यप्रदेश के विकास को नए आयाम देगा और प्रदेश के विकास को नई दिशा मिलेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने जो प्रयास किया है उसकी मध्यप्रदेश में बहुत पहले से जरूरत महसूस हो रही थी। गुजरात में इसके बहुत बेहतर प्रयोग हुए और नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड ने बहुत अच्छा कार्य किया है। प्रदेश में अभी संगठित और असंगठित दोनों क्षेत्र से लगभग 10 लाख लीटर दूध का कलेक्शन हो रहा है। गुजरात में पांच दुग्ध संघ में से केवल एक दुग्ध संघ में 70 से 80 लाख लीटर दूध का कलेक्शन हो रहा है, इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह अनुबंध मध्यप्रदेश को कितनी ताकत देगा।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के नेतृत्व में उनके प्रयासों से मध्यप्रदेश कृषि क्षेत्र में पहले से ही अग्रणी राज्य बना है और लगातार आगे बढ़ रहा है। अब दुग्ध संघ और को-ओपरेटिव के क्षेत्र को सशक्त और ताकतवर बनाने का प्रयास नए एमओयू के माध्यम से किया जा रहा है। इस अनुबंध से मध्यप्रदेश के विकास में नए आयाम स्थापित होंगे। ▪

अमित शाह जी प्रबंधन में पारस की तरह-डॉ. मोहन यादव

- **केन्द्र सरकार के मार्गदर्शन में सहकारी आंदोलन में आया क्रांतिकारी परिवर्तन।**
- **प्रदेश के 50 प्रतिशत गांवों तक सहकारिता और डेयरी गतिविधियों का विस्तार आवश्यक।**
- **राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और मध्यप्रदेश डेयरी फेडरेशन के मध्य सहकारिता अनुबंधों का हुआ आदान-प्रदान।**

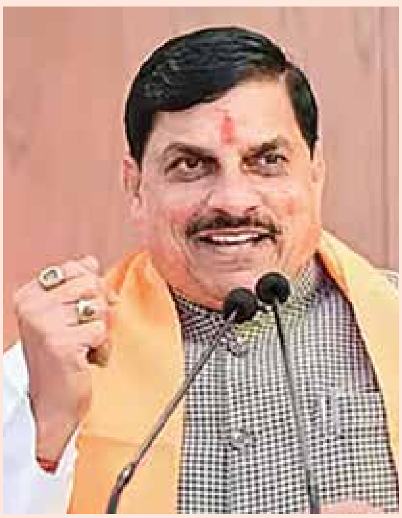

केंद्रीय मंत्री श्री अमित शाह पारस की तरह हैं, उनके पास जो विभाग आ जाए वह सोना हो जाता है। नए अनुबंध से प्रदेश में नई संभावनाओं के द्वार खुल रहे हैं। सहकारिता के क्षेत्र में अपार संभावनाएं विद्यमान हैं। बहुउद्देशीय समितियों के माध्यम से प्रदेश में भी सहकारिता की गतिविधियों को बढ़ाया जा रहा है। सर्वहारा वर्ग के कल्याण के लिए राज्य सरकार ने अनेकों महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। अब सहकारी समितियों से पेट्रोल पंप, दवाई की दुकान व अन्य गतिविधियां संचालित होंगी। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में फैक्ट्रियों को भी सहकारिता से चलाने के लिए अनुबंध हुआ है। दुग्ध उत्पादन हर घर की आय में वृद्धि का प्रमाणिक स्त्रोत है।

प्रदेश में गौ-पालन और दुग्घ उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। गौ-पालन पर अनुदान की व्यवस्था की गई है। राज्य सरकार ने दूध उत्पादन को 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा है। सरकार घर-घर गोकुल बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है। किसानों की जिंदगी बेहतर करने के लिए सरकार गाय का दूध खरीदेगी। प्रधानमंत्री श्री मोदी और केन्द्रीय मंत्री श्री शाह के मार्गदर्शन में किसानों को समृद्ध बनाने की दिशा में राज्य सरकार संवेदनशीलता के साथ प्रतिबद्ध है। वृहद स्तर पर एमओयू होने से बड़ी संभावनाओं का द्वार खुले है। ▪

मुद्रा योजना की सबसे बड़ी लाभार्थी महिलाएं हैं

- मुद्रा योजना किसी विशेष समूह तक सीमित नहीं है, इसका उद्देश्य युवाओं को अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए सशक्त बनाना है।
- उद्यमशीलता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में मुद्रा योजना का परिवर्तनकारी प्रभाव है।
- मुद्रा योजना ने उद्यमशीलता के बारे में सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव के साथ एक मौन क्रांति ला दी है।
- मुद्रा योजना के सबसे अधिक लाभार्थियों में महिलाएं शामिल हैं।
- इस योजना के तहत 52 करोड़ ऋण वितरित किए गए हैं, जो विश्व स्तर पर अद्वितीय उपलब्धि है।

इस मुद्रा योजना में किसी सरकार के लिए भी ये आंख खोलने वाला विषय है ये।

सबसे ज्यादा महिलाएं आगे आई हैं, सबसे ज्यादा लोन के लिए अप्लाई करने वाली महिलाएं, सबसे ज्यादा लोन प्राप्त करने वाली महिलाएं, और सबसे जल्दी रिपेमेंट करने वाली भी महिलाएं हैं।

देखिए हमारे यहां जब हम छोटे थे तो सुनते थे, कि उत्तम खेती, मध्यम व्यापार और कनिष्ठ नौकरी.. ऐसा सुनते थे, नौकरी को आखिरी गिनते थे। धीरे-धीरे समाज की मनोस्थिति ऐसी बदल गई कि नौकरी सबसे पहले, पहला काम कहीं नौकरी मिल जाए बस सेटल हो जाए। जिंदगी की surety हो जाती है। व्यापार मध्यम ही रहा और लोग यहां तक पहुंच गए खेती तो सबसे आखिरी में। इतना ही नहीं किसान भी क्या करता है अगर उसके तीन बेटे हैं तो एक को कहते हैं भाई तू खेती संभालना दो को कहते हैं तुम जाओ भाई कहीं रोजी-रोटी कमाओ। ये अब आपको ये जो मध्यम वाला विषय है कि व्यापार को हमेशा मध्यम माना गया है। लेकिन आज भारत का युवा उसके पास जो एंटरप्रेन्योर स्किल है, अगर उसको हैंड होल्डिंग हो जाए थोड़ी उसको मदद मिल जाए, तो बहुत बड़े परिणाम लाता है और इस मुद्रा योजना में किसी सरकार के लिए भी ये आंख खोलने वाला विषय है ये। सबसे ज्यादा महिलाएं आगे आई

हैं, सबसे ज्यादा लोन के लिए अप्लाई करने वाली महिलाएं, सबसे ज्यादा लोन प्राप्त करने वाली महिलाएं, और सबसे जल्दी रिपेमेंट करने वाली भी महिलाएं हैं। यानी ये एक नया क्षेत्र और विकसित भारत के लिए जो संभावना है ना वो इस शक्ति में पड़ी हुई है वो दिखाई दे रहा है और इसलिए मैं समझता हूं कि हमें एक वातावरण बनाना चाहिए, जो सफल हुए हैं उनको पता है अब किसी पॉलिटिशियन की चिट्ठी की जरूरत नहीं पड़ी होगी। किसी MLA, MP के घर पर चक्कर नहीं काटना पड़ा होगा, मेरा विश्वास है किसी को एक रुपया भी देना नहीं पड़ा होगा। और बिना गारंटी का पैसा मिलना और एक बार पैसा आए तो उसका सदुपयोग करना ये अपने आप में जीवन में भी एक डिसिप्लिन ले आता है। वरना किसी को लगेगा यार ले लिया है चलो अब दूसरे शहर में चले जाए, कहां ढूंढता रहेगा वो बैंक वाला। ये जीवन को बनाने का एक अवसर देता है और मैं चाहता हूं कि मेरे देश के नौजवान ज्यादा से ज्यादा इस क्षेत्र में आए। आप देखिए 33 लाख करोड़ रुपया, ये देश के लोगों को बिना गारंटी दे दिए गए हैं।

आप अखबार में तो पढ़ते होंगे, अमीरों की सरकार है। सभी अमीरों का टोटल लगा दोगे तो भी 33 लाख करोड़ नहीं मिला होगा उनको। मेरे देश के सामान्य मानवी को 33 लाख करोड़ रुपया आपके हाथ में दिए हैं, आप जैसे देश के होनहार युवा-युवतियों को दिए गए हैं। और इन सबने किसी ने एक को, किसी ने दो को, किसी ने 10 को, किसी ने 40-50 को रोजगार दिया है। यानी रोजगार देने का बहुत बड़ा काम ये इकोनॉमी को जनरेट करता है। उसके कारण प्रोडक्शन तो होता ही होता है, लेकिन जो सामान्य मानवी कमाता है तो उसको लगता है चलो पहले साल में एक शर्ट लेते थे अब दो ले लेंगे। बच्चों को पढ़ाने से संकोच करते थे अब चलो पढ़ाएंगे, तो ऐसी हर चीज का एक समाज जीवन में बड़ा लाभ होता है। अब इस योजना को 10 साल हो गए हैं। सामान्यतः सरकार में उसका स्वभाव क्या रहता है कि एक निर्णय करें, एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करें और घोषणा करें कि हम ऐसा करेंगे। उसके बाद कुछ लोगों को बुलाकर के दिया-विया जला दें, लोग ताली बजा दें, और अखबार वालों की चिंता करते रहते हैं तो अखबार में भी हेडलाइन छप जाए, और उसके बाद कोई पूछता नहीं है। ये सरकार ऐसी है कि एक योजना का 10 साल के बाद हिसाब लगा रही है, लोगों से पूछ रहे हैं कि भाई ठीक है हम तो कह रहे हैं कि ये हुआ लेकिन आप बताइए क्या हुआ। और जैसे मैं पूछ रहा हूं आज देश भर में आने वाले दिनों में ऐसे समूहों को मेरे सब साथी पूछने वाले हैं, उनसे मिलने

वाले हैं, उनसे जानकारी लेने वाले हैं। और उसके कारण अगर कोई इसमें बदलाव लाना है, कुछ सुधार करना है तो वो उस दिशा में भी हम जाने वाले हैं। लेकिन हमारी कोशिश, अब देखिए लगातार शुरू में 50000 से 5 लाख किया।

सरकार का कॉन्फिडेंस देखिए कि पहले सरकार भी सोचती थी, भाई 5 लाख से ऊपर मत दो डूब जाएंगे तो क्या करेंगे, ये तो मोदी के बाल नोच लेंगे सब लोग। लेकिन देश के लोगों ने मेरे विश्वास को तोड़ा नहीं, मेरा जो देशवासियों पर भरोसा था, उसको लोगों ने मजबूत किया। और उसके कारण मेरी हिम्मत हुई कि 50000 से 20 लाख पर पहुंच गए। ये निर्णय छोटा नहीं है, ये निर्णय तब होता है, जब उस योजना की सफलता और लोगों पर भरोसा और इसमें दोनों चीजें दिखती हैं और मेरी अपेक्षा रहेगी, कि जैसे 5-10 लोगों को रोजगार देते हैं, वैसे 5-10 लोगों को मुद्रा योजना लेकर के कुछ अपना काम करने के लिए प्रेरित कीजिए, उनको हिम्मत दीजिए, ताकि उनको एक विश्वास बनेगा और देश में 52 करोड़ लोन दिए गए हैं, 52 करोड़ लोग नहीं होंगे लेकिन 52 करोड़ लोन, यानी अपने आप में बहुत बड़ा आंकड़ा है। दुनिया के किसी देश में ये सोच भी नहीं सकते हैं और इसलिए मैं कहता हूं और हमारी युवा पीढ़ी को हम तैयार करें, कि भाई आप खुद शुरू करो बहुत कुछ फायदा होगा।

जब मैं गुजरात में था तो मेरा एक कार्यक्रम होता था- गरीब कल्याण मेला। लेकिन उसमें एक स्ट्रीट प्ले जैसा करते बच्चे अब मुझे गरीब नहीं रहना है, ऐसा एक लोगों को मोटिवेट करने वाला एक ड्रामा होता था, मेरे कार्यक्रम में। और फिर कुछ लोग स्टेज पर आकर के अपना जो राशन कार्ड होते थे और वो सब सरकार में वापस जमा कराते थे और कहते थे कि हम गरीबी से बाहर आ गए हैं, अब हमें फैसिलिटी नहीं चाहिए। फिर वो भाषण करते थे, कि मैंने कैसे ये परिस्थिति पलटी। तो एक बार मैं वलसाड जिले में था, एक 8-10 लोगों की टोली आई और सबने अपना गरीबी वाली जितने बेनिफिट थे वो सरकार को सरेंडर किए। फिर उन्होंने अपना एक्सपीरियंस सुनाया, तो क्या था? वो आदिवासी लोग थे और आदिवासियों में वो भगत का काम भजन मंडली बजाना और शाम को गाना यही काम करते थे, तो वहां से उनको एक दो लाख रुपए का लोन मिला, तब तो ये मुद्रा योजना वगैरह नहीं थी, मेरी सरकार वहां एक स्कीम चलाती थी। उसमें से कुछ वो इंस्ट्रूमेंट लाए बजाने के, कुछ उनकी ट्रेनिंग हुई, इसमें से उन्होंने 10-12 लोगों की एक ये बैंड बाजे बजाने वालों की एक कंपनी बना दी। और शादी-ब्याह में फिर वो बजाने के लिए जाने लगे फिर उन्होंने अपना अच्छा यूनिफॉर्म बना दिया। और धीरे-धीरे-धीरे करके वो बहुत पॉपुलर हो गए और वो सब के सब अच्छी स्थिति में आ गए। हर कोई, हर महीने 50-60 हजार रुपए कमाने लग गया। यानी छोटी चीज भी कितना बड़ा बदलाव लाती है, मैंने अपनी आंखों के सामने ऐसी कई घटनाएं देखी हैं। और उसी में से मुझे इंस्पिरेशन मिलता है, आप ही लोगों में से मुझे इंस्पिरेशन मिलता है कि भाई हां, देखिए देश में ऐसी शक्ति एक में नहीं अनेकों में होगी, चलो ऐसा कुछ करते हैं।

देश के लोगों को साथ लेकर के देश को बनाया जा सकता है। उनकी आशा-आकांक्षा परिस्थितियों का अध्ययन करके किया, ये मुद्रा योजना उसी का एक रूप है। मुझे विश्वास है कि लोग इस सफलता को और नई ऊंचाइयों तक ले जाएंगे और अधिकतम लोगों को लाभ हो, और समाज ने आपको दिया है, आपने भी समाज को देना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए कि भाई चलो अब मौज करें, कुछ ना कुछ हमें भी समाज के लिए करना चाहिए, जिसके कारण मन को एक संतोष मिलेगा। ▪

बाबा साहब के लिए कांग्रेस ने कुछ नहीं किया - डॉ. मोहन यादव

डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने जो संविधान हमको सौंपा उसके हिसाब से कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं और कोई ऊंचा-नीचा नहीं होता।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के मूल मंत्र के साथ देश को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

कांग्रेस की चमड़ी बहुत मोटी हो गई है। बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी का सबसे ज्यादा अपमान करने का काम अगर किसी ने किया है तो वह देश पर सबसे ज्यादा समय तक राज करने वाली कांग्रेस पार्टी है। कांग्रेस ने संविधान में एक-दो बार नहीं, बल्कि अपनी जरूरतों के हिसाब से अनेकों संशोधन करने का काम किया। अब जब नेशनल हेराल्ड केस में कांग्रेस नेताओं पर चार्जशीट दाखिल हुई, तो ईडी के दफ्तरों के बाहर प्रदर्शन किया जा रहा है। क्या कांग्रेस कानून से बड़ी हो गई है? कांग्रेस का मूल चरित्र ही तुष्टिकरण कर अपना काम निकालने का रहा है। बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के लिए कांग्रेस ने कुछ नहीं किया। डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने जो संविधान हमको सौंपा उसके हिसाब से कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं और कोई ऊंचा-नीचा नहीं होता। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के मूल मंत्र के साथ देश को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि बाबा साहब का जन्म महू में हुआ। प्रदेश में कांग्रेस की सरकारों ने अंबेडकर जी के नाम पर कुछ नहीं किया। जब-जब भारतीय जनता पार्टी की सरकारें बनीं बाबा साहब अंबेडकर को सम्मान देने का काम किया गया। हमारी सरकार ने बाबा साहब के नाम से सागर में संेचुरी, कामधेनु योजना और महू में स्मारक बनाने का काम किया है। 14 अप्रैल को सबने मिलकर महू में बाबा साहब की जयंती मनाई, बाबा साहब से प्रेम करने वाले लोग देश-विदेश से बड़ी संख्या में आते हैं, उनके रहने के लिए साढ़े तीन एकड़ में धर्मशाला बनाने का फैसला लिया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में महू को दिल्ली से ट्रेन के माध्यम से जोड़ने का काम किया गया है। ▪

कांग्रेस ने बाबा साहब का उपयोग सिर्फ वोट बैंक के लिए किया - विष्णुदत्त शर्मा

कांग्रेस ने संविधान में 75 बार से अधिक संशोधन कर उसकी मूलभावना के साथ कुठाराघात किया है।

यहां तक कि संविधान की मूल प्रस्तावना में परिवर्तन कर धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद शब्द को जोड़ने का काम किया, जिसका विरोध बाबा साहब ने किया था।

कांग्रेस ने हमेशा बाबा साहब का अपमान किया और संविधान के साथ खिलवाड़ करती रही। कांग्रेस ने संविधान में 75 बार से अधिक संशोधन कर उसकी मूलभावना के साथ कुठाराघात किया है। यहां तक कि संविधान की मूल प्रस्तावना में परिवर्तन कर धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद शब्द को जोड़ने का काम किया, जिसका विरोध बाबा साहब ने किया था। कांग्रेस के ऐसे सभी संविधान विरोधी बिंदुओं को एक-एक करके हमें समाज के सामने रखना है। बाबा साहब डॉ. अंबेडकर को कांग्रेस के समर्थन से चुनाव हराने वाले को पदम भूषण दिया परंतु देश को संविधान देने वाले भारत के सच्चे सपूत को एक भी सम्मान नहीं दिया और न ही उनसे जुड़े स्थलों पर स्मारक बनाने की अनुमति दी। कांग्रेस ने हमेशा वोट बैंक की राजनीति की है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकारों ने पंचतीर्थ बनाकर बाबा साहब को सम्मान दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सामाजिक समरसता जैसे विभिन्न विषयों को समाज में प्रतिपादित किया है। कांग्रेस पार्टी ने बाबा साहब का अपमान करने के साथ उनके खिलाफ समाज के बीच दुष्प्रचार भी किया। हमें जनता के साथ मिलकर कांग्रेस द्वारा फैलाए गए दुष्प्रचार का तथ्यों के साथ जवाब देना है कि बाबा साहब ने किस प्रकार से सभी वर्गो के कल्याण के लिए कार्य किया है। कांग्रेस की तत्कालीन सरकार में मंत्री रहते हुए बाबा साहब ने जम्मू कश्मीर में धारा 370 लगाने का पुरजोर विरोध किया था, लेकिन तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने बाबा साहब की बात को नकारते हुए धारा 370 लगाई। ऐसे कई उदाहरण है जो बाबा साहब के विचारों के विपरीत जाकर कांग्रेस ने कार्य किया और उन्हें अपमानित किया। हम सभी कार्यकर्ता बाबा साहब के कृतित्व और व्यक्तित्व को लेकर जन-जन तक पहुंचकर यह बतायेंगे कि बाबा साहब ने देश और समाज के विकास व कल्याण के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था। ▪

भाजपा का वैचारिक अधिष्ठान अडिग- जगत प्रकाश नड्डा

- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सबका साथ- सबका विकास के मूलमंत्र के साथ डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के सिद्धातों को जमीन पर उतारा है।
- 1951 में श्रद्धेय श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा भारतीय जनसंघ के नाम से शुरू किया गया यह राजनीतिक आंदोलन आज भारतीय जनता पार्टी के रूप में विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी का रूप ले लिया है।
- आज 13.5 करोड़ से अधिक लोग भाजपा से जुड़े हैं, 10 लाख से अधिक सक्रिय भाजपा कार्यकर्ता हैं, 6 लाख बूथों पर भाजपा के बूथ अध्यक्ष हैं।
- भाजपा वोट के खातिर इधर से उधर नहीं डगमगाई, सत्ता पाने के लिए विचारधारा के साथ समझौता नहीं किया।
- श्रद्धेय श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री कुशाभाऊ ठाकरे और श्री जगन्नाथ राव जोशी जैसी महान विभूतियों की एक लंबी श्रृंखला भारतीय जनता पार्टी के आज दिख रहे शिखर की मजबूत नींव है।
- 1953 में श्रद्धेय डॉ. श्याम प्रसाद मुखर्जी के बलिदान को सार्थक करते हुए 6 अगस्त 2019 को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गृह मंत्री श्री अमित शाह की रणनीति के तहत भाजपा सरकार ने धारा 370 को धाराशायी कर दिया।
- 1987-88 में पालमपुर अधिवेशन में राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण के रास्ते को प्रशस्त करने का प्रस्ताव पारित हुआ और एक लंबी लड़ाई लड़ने के बाद राम नवमी के दिन लाखों श्रद्धालु भव्य राम मंदिर में राम लला को निहार रहे हैं।
- राजीव गांधी सरकार ने शाह बानो केस में मुस्लिम तुष्टीकरण के आगे अपने घुटने टेक दिए थे लेकिन यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने लाखों मुस्लिम बहनों को तीन तलाक की कुप्रथा से मुक्त कराया।
- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, आयुष्मान भारत व स्वच्छता अभियान से लेकर उज्ज्वला योजना तक प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा ने गरीब, दलित, शोषित, पीड़ित, युवा और महिलाओं की चिंता की है।
- वक्फ बोर्ड को सरकार नियमों के दायरे में लाकर भाजपा सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि वक्फ बोर्ड की संपत्ति और आय मुस्लिम समुदाय की शिक्षा और उत्थान पर लगे।

राष्ट्र के पुनर्निर्माण में एक राजनैतिक आंदोलन के रूप में इस सफर में भाजपा के सभी कार्यकर्ता अपने आप को शामिल करते हैं। यह यात्रा 1951 में भारतीय जनसंघ नाम के राजनीतिक आंदोलन से शुरू हुई।

राजनीतिक परिदृश्य को देखते हुए यह आंदोलन कुछ समय के लिए जनता पार्टी में शामिल हुआ। फिर 6 अप्रैल 1980 को अपने वैचारिक वैशिष्ठ को लेकर इस आंदोलन ने भारतीय जनता पार्टी का रूप ले लिया।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'सबका साथ- सबका विकास' के मूलमंत्र के साथ डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के सिद्धातों को जमीन पर उतारा है। राष्ट्र के पुनर्निर्माण में

एक राजनैतिक आंदोलन के रूप में इस सफर में भाजपा के सभी कार्यकर्ता अपने आप को शामिल करते हैं। यह यात्रा 1951 में भारतीय जनसंघ नाम के राजनीतिक आंदोलन से शुरू हुई। राजनीतिक परिदृश्य को देखते हुए यह आंदोलन कुछ समय के लिए जनता पार्टी में शामिल हुआ। फिर 6 अप्रैल 1980 को अपने वैचारिक वैशिष्ठ को लेकर इस आंदोलन ने भारतीय जनता पार्टी का रूप ले लिया। एक नई वैकल्पिक राजनीतिक संस्कृति को लेकर यह आंदोलन चलता रहा। जनसंघ के दीये को अलविदा कहते हुए पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कालजयी शब्दों का प्रयोग किया था और 6 अप्रैल को श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने एक विचारधारा वाले लोगों को एक साथ लाकर भारतीय जनता पार्टी का आह्वान किया था। उन दिनों इलस्ट्रेट वीकली और दिनमान नाम की राजनैतिक मैगजीन हुआ करती थी। आज जब भाजपा कार्यकर्ता आर्काइव्स में जाकर उस समय के लेख पढ़ेंगे तो उन्हें पता चलेगा कि उस समय घने बादल घिरे हुए थे और किसी भी परिस्थिति में सूरज की कोई किरण नहीं दिखाई पड़ती थी, वैसी परिस्थिति में भी भाजपा के शीर्ष नेताओं को विश्वास था कि उनका रास्ता सही है। उसी विश्वास से ताकत लेकर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता आगे बढ़ते रहे और इस आयाम तक पहुंचे हैं कि आज भाजपा के कार्यकर्ता ही नहीं, बल्कि संसद में विपक्षी दल भी कहते हैं कि ये दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है। आज विपक्ष भी भाजपा पर कटाक्ष इस अलंकार के साथ करते हैं।

भारतीय जनता पार्टी वोट की खातिर कभी डगमगाई नहीं और सत्ता को पाने के लिए कभी विचारधारा के साथ समझौता नहीं किया। भाजपा एक मात्र राजनीतिक पार्टी है जिसने वैचारिक अधिष्ठान पर अपने आप को सदैव अडिग रखा है। 22-25 अप्रैल 1965 के दौरान पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी ने ''एकात्म मानवदर्शन'' का व्याख्यान दिया था और जनसंघ कालीकट अधिवेशन में एकात्म मानववाद के सिद्धांत को लेकर आगे बढ़ा। इस सिद्धांत का मजाक उड़ाया जाता था, क्योंकि कार्ल मार्क्स के चश्मे से देखने वाले लोगों द्वारा किसी चीज को एकात्मता और समावेशिता से देखा जाना अकल्पनीय था। कांग्रेस धीरे-धीरे अपने वैचारिक क्षरण की ओर चल पड़ी थी, लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने एकात्म मानववाद को आगे बढ़ाया और भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश सरकार बनने के बाद अंत्योदय के माध्यम से इस सिद्धांत की जड़ों को मजबूत किया गया। इसी अंत्योदय को आगे बढ़ाते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास'' के मंत्र का पालन किया।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री कुशाभाऊ ठाकरे और श्री जगन्नाथ राव जोशी जैसी महान विभूतियों की एक लंबी श्रृंखला भारतीय जनता पार्टी के आज दिख रहे ताज की मजबूत नींव हैं। श्रद्धेय श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 1948 में एक देश में दो विधान एवं दो संविधान होने के विरोधी अपने वैचारिक अधिष्ठान को लेकर जवाहर लाल नेहरू के कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया था। 1951 में भारतीय जनसंघ की यात्रा शुरू हुई, 1953 में उन्होंने एक देश में दो निशान, दो विधान, दो प्रधान नहीं चलेंगे नामक आंदोलन के साथ सत्याग्रह किया और श्रीनगर की जेल में उन्होंने संदेहास्पद स्थितियों में अपना बलिदान दे दिया। उनकी पूज्य माता जी ने पंडित जवाहर लाल नेहरू को चिट्ठी लिखकर इसकी जांच की मांग की थी लेकिन नेहरू ने इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया था जिस पर जनसंघ के लाखों कार्यकर्ताओं ने कहा था कि यह लड़ाई जारी रहेगी। 1953 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान के दशकों बाद 6 अगस्त 2019 को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गृह मंत्री श्री अमित शाह की रणनीति के तहत भाजपा सरकार ने धारा 370 को धाराशायी कर दिया।

1987-88 में पालमपुर अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित हुआ जो शब्दशः था- ''हम राम जन्मभूमि मंदिर बनने के रास्ते को प्रशस्त करेंगे और प्रजातांत्रिक एवं संवैधानिक तरीके से राम मंदिर बनेगा।'' 1987 के बाद एक लंबी लड़ाई लड़ी गई और राम नवमी के दिन लाखों श्रद्धालु राम लला की भव्य मूर्ति को निहार रहे हैं। भाजपा ने कभी भी पार्टी हित में नहीं, बल्कि ''राष्ट्र प्रथम'' की भावना के साथ राष्ट्रहित में काम किया है। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सरकार ने शाह बानो केस में मुस्लिम तुष्टीकरण के आगे अपने घुटने टेक दिए थे।

सुप्रीम कोर्ट लगातार मुस्लिम बहनों को तीन तलाक की कुरीति से मुक्त करने की बात कहती रही, लेकिन किसी ने इस कुरीति को समाप्त करने की हिम्मत नहीं जुटाई। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, मलेशिया, टर्की और इंडोनेशिया सहित सभी मुस्लिम देशों में कहीं भी तीन तलाक नहीं है लेकिन भारत में यह कुरीति जिंदा थी। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने लाखों मुस्लिम बहनों को तीन तलाक की कुप्रथा के मुक्त कराया। जवाहर लाल नेहरू और लियाकत अली के बीच भारत में मुस्लिम और पाकिस्तान में हिंदुओं की रक्षा करने के लिए समझौता हुआ था। यह अलग बात है कि पाकिस्तान में हिंदुओं की जनसंख्या 22 प्रतिशत से घटकर मात्र 1.8 फीसदी रह गई है। ये लोग राजनीतिक रूप से प्रताड़ित होते रहे और जो लोग इस प्रताड़ना के कारण भारत आए, उन्हें भाजपा सरकार ने नागरिकता दी है। सभी मुस्लिम देशों में सरकारें ही वक्फ बोर्ड को चला रही हैं और भाजपा सरकार वक्फ बोर्ड

प्रदेश स्तरीय वक्ता कार्यशाला

बाबा साहब के नाम से कांग्रेस ने कोई योजना नहीं चलाई- हितानंद जी

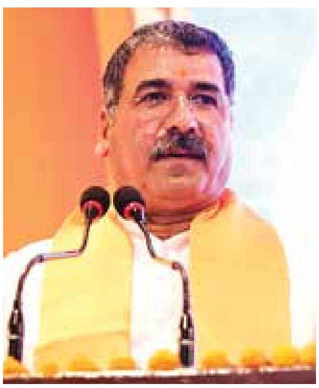

कांग्रेस ने हमेशा बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर का अपमान करने का काम किया। कांग्रेस वक्फ संशोधन बिल का विरोध कर संविधान का अपमान करने का काम कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकारों ने बाबा साहब के संविधान की रक्षा और उनके सम्मान को बरकरार रखने का काम लगातार करती आ रही है और हमेशा करती रहेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार हो या प्रदेश की भाजपा सरकार, कई योजनाएं बाबा साहब अंबेडकर के नाम से चला रही हैं। कांग्रेस ने देश और प्रदेश में सबसे ज्यादा शासन किया, लेकिन बाबा साहब अंबेडकर के लिए कुछ नहीं किया। ▪

को सरकार के प्रशासन में लाने की बजाय सिर्फ नियमों के दायरे में ला रही है। भाजपा सरकार सुनिश्चित करेगी कि वक्फ बोर्ड की आय एवं संपत्ति मुस्लिम समुदाय की शिक्षा और उत्थान पर लगायी जाए। भाजपा ने देश को अधिनायक वाद से बाहर निकाला है। आज राजपथ, कर्तव्य पथ बन गया, वहां श्री सुभाष चंद्र बोस की मूर्ति स्थापित हो गई और नौसेना के ध्वज से गुलामी के निशान हटा दिए गए। भाजपा का प्रयास सदैव से भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने का रहा है।

भारतीय जनता पार्टी विचारों के आधार पर चलने वाली पार्टी है। भारतीय जनता पार्टी के आज लोकसभा में 240 सांसद, 98 से अधिक राज्यसभा सांसद और 1600 से अधिक विधायक हैं। प्रदेशों में 13 विशुद्ध भारतीय जनता पार्टी की सरकारें हैं, 7 प्रदेशों में एनडीए की सरकार है। करोड़ों कार्यकर्ताओं के योगदान से आज भारतीय जनता पार्टी विचारों के आधार पर बड़े पैमाने पर अनुसरण की जाने वाली पार्टी बनी है। आज 13.5 करोड़ से अधिक लोग भाजपा से जुड़े हैं, 10 लाख से अधिक सक्रिय भाजपा कार्यकर्ता हैं, 6 लाख बूथों पर भाजपा के बूथ अध्यक्ष हैं। गुजरात में छठी बार भाजपा सरकार बनी, गोवा व हरियाणा में तीसरी बार सरकार में है, मध्य प्रदेश में चौथी बार सरकार में है, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, त्रिपुरा, मणिपुर व असम में दूसरी बार सरकार में हैं और 27 वर्षों के बाद आज भारतीय जनता पार्टी दिल्ली में भी सरकार में है।

भाजपा एक मात्र ऐसी पार्टी है जो वैज्ञानिक ढंग से आगे बढ़ी है, चुनाव जीतना, संगठन को मजबूत करना भी एक विज्ञान है। वैचारिक दृढ़ता के साथ बिना समझौता करे आगे बढ़ना ही भारतीय जनता पार्टी का संकल्प है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, आयुष्मान भारत, स्वच्छता अभियान से लेकर उज्ज्वला योजना तक आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा ने गरीब, दलित, शोषित, पीड़ित, युवा और महिलाओं की चिंता की है। इसलिए आवश्यक है कि भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय और पार्टी की नींव के रूप में कार्य करने वाले भाजपा नेताओं को पढ़ें व जानें।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की संकल्पना ''विकसित भारत@2047'' को पूरा करने के लिए भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को मजबूती से कार्य करने की आवश्यकता है। ▪

भाजपा वादे को पूरा करती है - हितानंद जी

- **भाजपा विचार आधारित राजनीतिक दल है, विचारों से कभी समझौता नहीं किया।**
- **स्थापना दिवस, संगठन के महापुरुषों के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है।**

भारतीय जनता पार्टी विचार आधारित राजनीतिक दल है। पार्टी ने अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया। पार्टी का स्थापना दिवस संगठन के महापुरुषों के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। स्थापना दिवस पर्व कठिन परिस्थितियों में भी दृढ़ता के साथ आगे बढ़ने का साहस, संयम एवं समन्वय का अभूतपूर्व संचार करने के साथ हमारा मार्गदर्शन करता है। भाजपा धारा 370, राम मंदिर जैसे हर संकल्पों को पूरा कर रही है और जनता से किए एक-एक वादे को पूरा करती है।

भारतीय जनता पार्टी देश का पहला राजनीतिक दल है, जिसने सदैव राष्ट्र प्रथम मानकर कार्य किया और राष्ट्रवादी विचारों को अंगिकार किया और आज तक अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया। भाजपा जनसंघ के समय से लेकर आज तक के वरिष्ठ नेताओं, पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत व परिश्रम से आज एक विशाल वट वृक्ष जैसी पार्टी बन गई है। एक समय था, जब पार्टी के देश में सिर्फ दो सांसद थे, तब कई राजनीतिक दलों के नेता हमारे ऊपर हंसते थे कि दो सांसदों का राष्ट्रीय राजनीतिक दल है। लेकिन कार्यकर्ताओं की लगन, मेहनत व निष्ठा से ही भाजपा आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन चुकी है। विश्व में सबसे अधिक कार्यकर्ताओं वाली भाजपा आज देश का विकास करने के साथ अंत्योदय के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रही है। ▪

प्रधानमंत्री जी ने जया श्री महाबोधि मंदिर का दौरा किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायका के साथ अनुराधापुरा में पवित्र जया श्री महाबोधि मंदिर का दौरा किया और पूजनीय महाबोधि वृक्ष की पूजा की।

ऐसा माना जाता है कि यह वृक्ष उस पौधे से विकसित हुआ है जिसे तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में संगमिता महाथेरी भारत से श्रीलंका लायी थी। यह मंदिर मजबूत सभ्यतागत संबंधों का प्रमाण है जो भारत-श्रीलंका के बीच घनिष्ठ साझेदारी की नींव है। ▪

साकार हो रहा अटल जी का सपना - विष्णुदत्त शर्मा

- **कार्यकर्ताओं की मेहनत से भाजपा बनी दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी।**
- **भाजपा के ब्रांड एंबेसेडर बनकर घर-घर जाएं कार्यकर्ता।**
- **करोड़ों कार्यकर्ताओं के परिश्रम से भारतीय जनता पार्टी आज दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बन गई है।**

जनसंघ के बाद 1980 में 6 अप्रैल को ही स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई थी। मुंबई में पार्टी के पहले अधिवेशन को संबोधित करते हुए स्व. अटलजी ने कहा था कि अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा और कमल खिलेगा। आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी, केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के नेतृत्व में स्व. अटलजी का यह सपना साकार हो रहा है। देश के हर क्षेत्र में कमल खिला है। पंच-सरपंच से लेकर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति तक भाजपा के नेता हैं। करोड़ों कार्यकर्ताओं की मेहनत से आज भारतीय जनता पार्टी दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बन गई है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने अंत्योदय का जो विचार पार्टी को दिया था, उसे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी यथार्थ में बदल रहे हैं। एक गरीब मां के बेटे प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के प्रयासों से समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में बदलाव आया है और देश के 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर निकले हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी गरीबों के मसीहा के रूप में उभरे हैं। पार्टी के स्थापना दिवस पर सभी कार्यकर्ता ये संकल्प लें कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में अंतिम व्यक्ति के कल्याण लिए जो अभियान चल रहा है, उसे आगे बढ़ाने के लिए समर्पित होकर काम करेंगे।

भारतीय जनता पार्टी की स्थापना जनसंघ के रूप में बलिदानों के आधार पर हुई। देश के पहले प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने जब कश्मीर में धारा 370 लगाकर दो निशान, दो विधान और दो प्रधान का प्रावधान किया तो उनके मंत्रिमंडल के सदस्य डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने उसका विरोध किया और इस्तीफा देकर जनसंघ की स्थापना की। उन्होंने कश्मीर जाकर सत्याग्रह किया और जेल में उनकी हत्या कर दी गई। पार्टी को अंत्योदय का विचार देने वाले पं. दीनदयाल उपाध्याय उत्तरप्रदेश के नगला चंद्रभान में जिस झोपड़ी में जन्मे थे, उसे देखकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की आंखें नम हो गई थीं। उन्होंने संकल्प लिया कि देश में कोई गरीब झोपड़ी में नहीं रहेगा और प्रधानमंत्री आवास योजना की शुरुआत हुई। गरीब मां के बेटे मोदी जी ने अपनी मां को चूल्हा फूंकते हुए खाना बनाते देखा था। उन्होंने कहा कि अब किसी गरीब मां के फेंफड़े धुएं से खराब नहीं होंगे। उन्होंने उज्जवला योजना की शुरुआत की और आज देश के 10 करोड़ गरीब परिवारों को गैस कनेक्शन देकर धुएं से राहत दी है। आयुष्मान भारत योजना में पांच लाख तक का मुफ्त इलाज मिल रहा है और अब कोई गरीब पैसे के अभाव में इलाज से वंचित नहीं रहेगा। तीन तलाक पर रोक के लिए बनाए गए कानून से मुस्लिम बहनों के जीवन में खुशियां आई हैं। मोदी सरकार की योजनाओं का लाभ सभी समाज एवं वर्ग के व्यक्तियों को बिना किसी भेदभाव के मिल रहा है। इस बात को सभी कार्यकर्ताओं को निचले स्तर तक लेकर जाना है। पार्टी के स्थापना दिवस पर सभी कार्यकर्ता संकल्प लें कि सभी कार्यकर्ता भाजपा के ब्रांड एंबेसेडर बनकर बूथ-बूथ और घर-घर तक जाएंगे तथा वंचितों को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाएंगे। ▪

मुंबई में पार्टी के पहले अधिवेशन को संबोधित करते हुए स्व. अटलजी ने कहा था कि अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा और कमल खिलेगा।

आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी, केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के नेतृत्व में स्व. अटलजी का यह सपना साकार हो रहा है।

डॉ. अंबेडकर के कार्य भूतो न भविष्यति-डॉ. मोहन यादव

- **डॉ. अम्बेडकर के योगदान से ही भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश बना।**
- **प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने डॉ. अंबेडकर से जुड़े सभी स्थानों को पंचतीर्थ के रूप में मान्यता दी।**
- **सर्वहारा वर्ग का सशक्तिकरण सर्वोच्च प्राथमिकता का विषय है।**
- **डॉ. अम्बेडकर कामधेनु योजना सर्वहारा वर्ग और किसानों की समृद्धि को समर्पित।**
- **बाबा साहब की जन्मस्थली से आरंभ नई ट्रेन से महू, सीधा देश की राजधानी दिल्ली से जुड़ा।**
- **बाबा साहब की जन्मस्थली महू में धर्मशाला निर्माण के लिए सरकार देगी 3.5 एकड़ जमीन।**
- **महू आने-जाने वालों की संपूर्ण सुविधा का प्रबंध सरकार की ओर से किया जाएगा।**

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 20वीं शताब्दी में ऐसे अनेकों उल्लेखनीय कार्य किए, जिनसे 1000 वर्ष की गुलामी की विसंगतियां दूर हुई। इन्हीं के आधार पर आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश बना है। डॉ. अंबेडकर के जीवन के योगदान बहुआयामी हैं, उन्हें भारत में भविष्य की चुनौतियों का आभास हो चुका था, यद्यपि उनका जीवन बहुत कठिनाई के साथ बीता, लेकिन वे ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने स्वयं के संघर्ष से सीख ली और अपने जैसे दूसरे लोगों की मदद की। बाबा साहेब ने स्वयं की शिक्षा में कोई कसर नहीं रहने दी, इससे यह प्रेरणा मिलती है कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा में कभी कोई कमी नहीं रहनी चाहिए। बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर द्वारा समाज के बंधुत्व और उत्थान के लिए किए गए कार्य भूतो न भविष्यति हैं।

बाबा साहेब ने समूचे समाज को आरक्षण जैसी व्यवस्था प्रदान की। आज अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति सहित हर वर्ग को साक्षरता का लाभ मिल रहा है। अनुसूचित जाति वर्ग की साक्षरता जो कभी मात्र 1.5 प्रतिशत थी, आज 59 प्रतिशत तक पहुंच गई है। भविष्य में जब-जब कठिनाई आएगी, हम सर्वहारा वर्ग के सशक्तिकरण का ध्यान रखेंगे। डॉ. अंबेडकर ने सामाजिक सशक्तिकरण के लिए मजबूत संविधान बनाया और देश को लोकतंत्र दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने डॉ. अंबेडकर से जुड़े सभी स्थानों को पंचतीर्थ के रूप में मान्यता दी। महू स्थित भीम जन्मभूमि को तीर्थ के रूप में विकसित करने में मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्रद्धेय सुंदरलाल पटवा और श्री शिवराजसिंह चौहान का योगदान महत्वपूर्ण है।

राज्य सरकार द्वारा भीम जन्मस्थली महू में धर्मशाला निर्माण के लिए 3.5 एकड़ जमीन दी जा रही है। इससे यहां आने-जाने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा होगी, सभी आगंतुकों की संपूर्ण सुविधा का प्रबंध राज्य सरकार की ओर से किया जाएगा। राज्य सरकार ने सर्वहारा वर्ग और प्रदेश के किसानों को समृद्ध बनाने के लिए डॉ. अंबेडकर कामधेनु योजना शुरू की है। अगर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग का कोई व्यक्ति दूध डेयरी खोलेगा, तो उसे हमारी सरकार द्वारा 30 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। केंद्र सरकार की ओर से बाबा साहब की जन्मस्थली महू को नई ट्रेन की सौगात मिली है। अब महू शहर सीधा देश की राजधानी दिल्ली से जुड़ गया है। इस रेलगाड़ी की शुरुआत का लाभ कोटा के साथ-साथ मालवा क्षेत्र के इंदौर, उज्जैन और देवास को भी मिलेगा।

लंदन में भी डॉ. अंबेडकर का भव्य स्मारक बना है, इसी स्थान पर उन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी। यह एक आवासीय क्षेत्र है। अंग्रेजों ने स्मारक बनाने का काफी विरोध किया, लेकिन प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के प्रयासों से वहां भी तीर्थ का निर्माण हो चुका है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने धारा 370 हटाकर जम्मू-कश्मीर को उसका अधिकार वापस दिया है। बाबा साहेब डॉ.अम्बेडकर ने भी धारा 370 को स्वीकार नहीं किया था। ▪

सभी के विकास व उत्थान का प्रावधान - विष्णुदत्त शर्मा

बाबा साहब ने संविधान में संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया, लेकिन कांग्रेस ने वर्ग विशेष की वोट बैंक और तुष्टिकरण के लिए 75 बार संविधान में संशोधन किए हैं।

बाबा साहब के विरोध के बावजूद जवाहरलाल नेहरू ने संविधान में धर्मनिरपेक्ष और समाजवाद जैसे शब्दों को जोड़ा है। यह तुष्टिकरण की राजनीति ही तो है।

- **कांग्रेस तुष्टिकरण व वर्ग विशेष को लाभ पहुंचाने संविधान को कुचलती रही।**
- **प्रधानमंत्री मोदी जी बाबा साहब के विचारों को जमीन पर उतारने का कार्य कर रहे हैं।**
- **बाबा साहब ने सशक्त भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया है।**
- **भाजपा बाबा साहब के संपूर्ण कृतित्व व व्यक्तित्व को जनता के सामने ला रही है।**

जब हम इतिहास में जाते हैं तो मन पीड़ा से भर जाता है कि बाबा साहब अंबेडकर ने भारत की एकता और अखंडता में अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर और संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बाधने का कार्य किया, लेकिन कांग्रेस ने बाबा साहब को अपमानित किया। बाबा साहब ने समाज सुधारक के साथ समाज में वंचित लोगों को अवसर दिलाने का कार्य किया। बाबा साहब का हृदय इतना बड़ा था कि उन्होंने संविधान के निर्माण करते समय हर वर्ग के उत्थान का कार्य किया। जवाहरलाल नेहरू ने संविधान की प्रस्तावना में परिवर्तन कर धर्म निरपेक्षता और समाजवाद शब्द को जोड़ा जिसका विरोध बाबा साहब ने किया था। लेकिन दुर्भाग्य है कि कांग्रेस ने इन बातों को जानबूझकर के तुष्टीकरण और स्वार्थ की राजनीति करने के लिए किया। कांग्रेस की तत्कालीन सरकार में मंत्री रहते हुए बाबा साहब ने जम्मू कश्मीर में धारा-370 लगाने का पुरजोर विरोध किया था, लेकिन तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने बाबा साहब की बात को नकारते हुए धारा 370 लगाई। बाबा साहब अंबेडकर ने विरोध किया और डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी जो देश के उद्योग मंत्री थे, उन्होंने इस्तीफा देकर भारतीय जनसंघ की स्थापना की और वह जेल गए, जहां उनकी संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 के विरोध के कारण जनसंघ की स्थापना हुई। धारा 370 में प्रावधान था कि जम्मू-कश्मीर में रहने वाले अनुसूचित जाति वर्ग के हमारे सफाई कर्मी भाई-बहनों के बच्चे पूरी जिंदगी सफाई कर्मी ही रहेंगे, चाहे वह कितना भी पढ़ाई क्यों न कर लें, उन्हें सफाई कर्मी का कार्य ही करना होगा। अगर वे दूसरा कोई कार्य करना चाहते हैं तो उन्हें जम्मू-कश्मीर की नागरिकता छोड़नी होगी। जवाहरलाल नेहरू की वजह से जम्मू-कश्मीर के हमारे सफाईकर्मी परिवारों के बच्चे वर्षों तक पढ़ने के बाद भी सफाई का कार्य करने को मजबूर होते रहे। यह कांग्रेस की इस वर्ग के प्रति सोच को दर्शाता है। कांग्रेस पार्टी ने तुष्टिकरण और वोट बैंक की राजनीति के लिए संविधान में कई संशोधन किए। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने फैसला दिया तो कुर्सी जाने लगी तब देश में आपातकाल लगाकर संविधान का गला घोंटा गया। सुप्रीम कोर्ट ने एक फैसला दिया तो तत्कालीन केंद्र की कांग्रेस सरकार ने संविधान संशोधन कर अदालत के फैसले को प्रभावहीन करने का कार्य किया। बाबा साहब ने संविधान में संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया, लेकिन कांग्रेस ने वर्ग विशेष की वोट बैंक और तुष्टिकरण के लिए 75 बार संविधान में संशोधन किए हैं। बाबा साहब के विरोध के बावजूद जवाहरलाल नेहरू ने संविधान में धर्मनिरपेक्ष और समाजवाद जैसे शब्दों को जोड़ा है। यह तुष्टिकरण की राजनीति ही तो है।

बाबा साहब अर्थशास्त्र के बड़े विद्वान थे, उनके विचार पर भारतीय रिजर्व बैंक का गठन किया गया। लेकिन आजादी के बाद कांग्रेस ने बाबा साहब के सभी पक्षों को जनता के सामने नहीं आने दिया। बाबा साहब का एक पक्ष सामने रखा गया कि उन्होंने संविधान बनाया, सामाजिक समरसता के लिए कार्य किया। कांग्रेस ने ऐसा प्रचारित किया कि बाबा साहब ने एक वर्ग के उत्थान के लिए ही कार्य किया है, जबकि ऐसा नहीं है। बाबा साहब ने हर समाज वर्ग के उत्थान व कल्याण के लिए कार्य किया है। भारतीय जनता पार्टी बाबा साहब सम्मान अभियान के तहत उनके संपूर्ण कृतित्व व व्यक्तित्व को समाज के सामने लाने का कार्य कर रही है। बाबा साहब ने स्वतंत्र भारत को लोकतांत्रिक व न्याय सुलभ बनाने के साथ ही प्रत्येक भारतीय को समान अवसर एवं सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार भी प्रदान किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की डबल इंजन सरकार बाबा साहेब के विचारों एवं आदर्शों के अनुरूप ''सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास, सबका विश्वास'' तथा पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के अंत्योदय के मंत्र के साथ समाज के हर वर्ग के उत्थान के लिए कृत-संकल्पित है। ▪

भाजपा वैचारिक संगठन हितानंद जी

- कार्यकर्ताओं की मेहनत व परिश्रम से भाजपा आज दुनिया का सबसे बड़ा दल बना
- भाजपा राष्ट्र प्रथम व अंत्योदय के सिद्धांत को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रही है।
- भाजपा ने अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया, हर संकल्प को पूरा करने प्रतिबद्ध।

पार्टी का स्थापना दिवस हमें अपने संगठन के महापुरूषों के पथ पर चलते हुए देश और समाज की सेवा करने की प्रेरणा देता है। जनसंघ के जमाने से ही हमने देश की सेवा करने के साथ कई संकल्प लिए थे, उन संकल्पों को पूरा किया जा रहा है।

भाजपा ने केंद्र में सरकार बनने के बाद जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने का संकल्प लिया था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 2014 में केंद्र में सरकार बनने के बाद कई ऐतिहासिक निर्णय लिए गए।

कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत व परिश्रम से दो सांसदों से देश सेवा का सफर शुरू करने वाली भारतीय जनता पार्टी आज दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बन चुकी है। भाजपा राष्ट्र प्रथम व अंत्योदय के सिद्धांत को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी गरीब, युवा, महिला व किसान कल्याण के साथ भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं।

भारतीय जनता पार्टी विचार आधारित दल है। भाजपा का एक-एक कार्यकर्ता अपने विचारों से कभी समझौता नहीं करता। राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ भाजपा का हर कार्यकर्ता देश और समाज की सेवा कर रहा है और जरूरत पड़ने पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को भी तैयार रहता है। पार्टी का स्थापना दिवस हमें अपने संगठन के महापुरूषों के पथ पर चलते हुए देश और समाज की सेवा करने की प्रेरणा देता है।

जनसंघ के जमाने से ही हमने देश की सेवा करने के साथ कई संकल्प लिए थे, उन संकल्पों को पूरा किया जा रहा है। भाजपा ने केंद्र में सरकार बनने के बाद जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने का संकल्प लिया था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 2014 में केंद्र में सरकार बनने के बाद कई ऐतिहासिक निर्णय लिए गए। जम्मू-कश्मीर से धारा-370 हटा दी गई। राम मंदिर का भी संकल्प पूरा हो गया। भाजपा जनता से किए गए संकल्पों को पूरा कर रही है और हर संकल्प को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। भाजपा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा दिए गए अंत्योदय के सिद्धांत को लेकर कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार अंत्योदय के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रही है। केंद्र सरकार और मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा गरीब कल्याण की कई योजनाएं संचालित की जा रही हैं, जो गरीबों का जीवन संवारने का कार्य कर रही हैं। भाजपा अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति को समाज की मुख्य धारा में लाकर सामाजिक समरसता का कार्य कर रही है। इसलिए कार्यकर्ताओं को भाजपा की डबल इंजन की सरकारों की लाभार्थी योजनाओं और गरीब कल्याण के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाना है। ▪

अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का कल्याण ही लक्ष्य-विष्णुदत्त शर्मा

- **कार्यकर्ताओं के परिश्रम से आदर्श बना मध्यप्रदेश का भाजपा संगठन।**
- **कार्यकर्ता भाजपा का चेहरा, यही जनता के बीच पार्टी की छवि बनाते हैं।**
- **बूथ-बूथ पर वंचितों को खोजकर योजनाओं का लाभ दिलाएं कार्यकर्ता।**
- **महापुरूषों के त्याग, तपस्या और बलिदान से बनी भाजपा देश सेवा के प्रति समर्पित।**

बूथ के कार्यकर्ता ही भाजपा की सबसे बड़ी ताकत हैं। कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम से सदस्यता अभियान में मध्यप्रदेश भाजपा ने 1.72 करोड़ से अधिक प्राथमिक सदस्य जोड़े। कार्यकर्ता भाजपा के चेहरे हैं और कार्यकर्ता ही जनता के बीच भाजपा की छवि बनाते हैं। कार्यकर्ताओं के बल पर ही मध्यप्रदेश का भाजपा संगठन देश में आदर्श संगठन के रूप में जाना जाता है। भाजपा महापुरूषों के त्याग, तपस्या और बलिदान से बनी है, पार्टी राष्ट्र प्रथम के भाव से कार्य करते हुए देश सेवा के लिए समर्पित है। कार्यकर्ता बूथ-बूथ पर वंचितों को खोजकर प्रदेश सरकार की जनहितैषी योजनाओं का लाभ दिलाएं।

भारतीय जनता पार्टी की स्थापना 1980 में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में हुई। उससे पहले भाजपा जनसंघ हुआ करती थी। 2025 तक भाजपा की विकास यात्रा किन-किन पड़ावों से होकर गुजरी है, सक्रिय कार्यकर्ताओं को यह जानकारी होना जरूरी है। देश की आजादी के बाद प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने संविधान में जम्मू-कश्मीर के लिए धारा 370 का प्रावधान कर दिया। इसके अनुसार वहां का संविधान अलग, प्रधानमंत्री अलग और झंडा भी अलग हो गया। इस धारा के अनुसार जम्मू-कश्मीर में किसी सफाईकर्मी के बेटा-बेटी योग्य होने के बावजूद सफाईकर्मी ही बने रहने के लिए विवश थे। नेहरू मंत्रिमंडल में उद्योग मंत्री रहे डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इसका विरोध कर मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया और 1951 में पं. दीनदयाल उपाध्याय के साथ जनसंघ की स्थापना की। उन्होंने धारा 370 के विरोध में आंदोलन किया, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें जेल में डाल दिया गया और जेल में ही उनकी हत्या कर दी गई। जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाने के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपना बलिदान दे दिया। भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को इस बात पर गर्व होना चाहिए कि आप उस पार्टी के सदस्य हैं, जो डॉ. मुखर्जी के बलिदान के आधार पर खड़ी हुई है।

श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी एक विजनरी नेता थे। उन्होंने मुंबई के अधिवेशन में कहा था- अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा और कमल खिलेगा। श्रद्धेय अटलजी का यह सपना प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में साकार हो रहा है। आज सारी दुनिया में कमल खिल रहा है। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जब विदेश यात्राओं पर जाते हैं तो दुनिया के मुस्लिम देश भी उन्हें देश के सबसे बड़े सम्मान से सम्मानित करते हैं। भारतीय जनता पार्टी आज दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है। ऐसे समय में जबकि पूंजीवाद और साम्यवाद जैसी विचारधाराओं से दुनिया ने किनारा कर लिया है, पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा दिया गया एकात्म मानववाद का विचार सारी दुनिया को आकर्षित कर रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जब पं. दीनदयाल उपाध्याय के गांव नगला चंद्रभान पहुंचे, तो एक प्रदर्शनी में उन्होंने पं. उपाध्याय की झोपड़ी का चित्र देखा, जिसमें उन्होंने अपना जीवन गुजारा। उसे देखकर प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की आंखें भर आईं। उन्होंने संकल्प लिया कि देश में कोई गरीब झोपड़ी में नहीं रहेगा और प्रधानमंत्री आवास योजना की शुरुआत हुई। गरीब मां के बेटे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपनी मां को धुआं उगलते चूल्हे पर खाना बनाते देखा था। परिवार का भोजन बनाने के लिए हर दिन हमारी माता-बहनें 100 सिगरेट के बराबर धुआं अपने फेफड़ों में भरती थीं। माता-बहनों को इस तकलीफ से मुक्ति दिलाने के लिए उन्होंने उज्जवला योजना शुरू की, जिसके अंतर्गत 10 करोड़ से अधिक गैस कनेक्शन दिए जा चुके हैं। घर में शौचालय न होने से माता-बहनों को कितनी समस्या होती थी, लेकिन आजादी के बाद 50 सालों तक किसी सरकार ने उनकी इस तकलीफ के बारे में नहीं सोचा। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने घर-घर शौचालय बनवाकर माता-बहनों को कष्ट से मुक्ति दिलाई। कोई गरीब पैसे के अभाव में इलाज से वंचित न रहे, इसके लिए उन्होंने आयुष्मान भारत योजना शुरू की।

जनसंघ के संस्थापकों में से एक पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने हमें एकात्म मानववाद और अंत्योदय का विचार दिया, जिनके आधार पर भाजपा आगे बढ़ रही है और समाज के अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का कल्याण ही भारतीय जनता पार्टी का लक्ष्य है। भारतीय जनता पार्टी पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों के आधार पर आगे बढ़ रही है और सरकार की योजनाओं का लाभ समाज के हर व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के मिल रहा है। कार्यकर्ता भाजपा का ब्रांड एंबेसेडर है और हमारी जिम्मेदारी है कि वह बूथ-बूथ पर जाकर केंद्र और राज्य सरकार द्वारा जनहित के लिए लागू की गई योजनाओं का लाभ वंचितों को दिलाए। ▪

कार्यकर्ताओं के परिश्रम से भाजपा बनी दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी - विष्णुदत्त शर्मा

यही कार्यकर्ता भाजपा के ब्रांड एंबेसेडर हैं, पार्टी के चेहरे हैं। यही कार्यकर्ता जनता के बीच भाजपा की छवि बनाते हैं और जनहित की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी भी उन्हीं के कंधों पर है।

- **बूथ का कार्यकर्ता पार्टी का ब्रांड एंबेसेडर।**
- **जनहित की योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाएं कार्यकर्ता।**

बूथ के कार्यकर्ता ही भाजपा की सबसे बड़ी ताकत हैं। उन्हीं के परिश्रम से हमने सदस्यता अभियान में आशा से अधिक सदस्य बनाए। हमने हर बूथ पर 200 नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा था, लेकिन कार्यकर्ताओं ने अपने परिश्रम से 250-300 सदस्य बनाए। कार्यकर्ताओं के दम पर मध्यप्रदेश में प्रचंड बहुमत की सरकार बनी है। निस्वार्थ भाव से काम करने वाले कार्यकर्ताओं की मेहनत से आज भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बनी है। यही कार्यकर्ता भाजपा के ब्रांड एंबेसेडर हैं, पार्टी के चेहरे हैं। यही कार्यकर्ता जनता के बीच भाजपा की छवि बनाते हैं और जनहित की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी भी उन्हीं के कंधों पर है।

भारतीय जनता पार्टी की स्थापना 1980 में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में हुई। देश की आजादी के बाद प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने संविधान में जम्मू-कश्मीर के लिए धारा 370 का प्रावधान कर दिया। इसके अनुसार वहां का संविधान अलग, प्रधानमंत्री अलग और झंडा भी अलग हो गया।

जम्मू-कश्मीर में किसी सफाई कर्मी का बच्चा योग्य होने के बावजूद सफाई कर्मी ही बने रहने के लिए अभिशप्त था। नेहरू मंत्रिमंडल में उस समय उद्योग मंत्री रहे डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी ने इसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि एक देश में दो निशान, दो प्रधान और दो विधान नहीं चलेंगे। उन्होंने नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया और 1951 में पं. दीनदयाल उपाध्याय के साथ जनसंघ की स्थापना की। उन्होंने धारा 370 के विरोध में आंदोलन किया, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें जेल में डाल दिया गया और जेल में ही उनकी हत्या कर दी गई। भारतीय जनता पार्टी डॉ. मुखर्जी के बलिदान के आधार पर खड़ी हुई है।

जनसंघ के संस्थापकों में से एक पं. दीनदयाल जी ने हमें एकात्म मानववाद और अंत्योदय का विचार दिया, जिसके रास्ते पर भाजपा आगे बढ़ रही है और भाजपा की सरकारों की अधिकांश योजनाएं अंत्योदय के उद्देश्य से ही लागू की गई हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जब पं. दीनदयाल उपाध्याय के गांव नगला चंद्रभान पहुंचे, तो एक प्रदर्शनी में उन्होंने पं. उपाध्याय की झोपड़ी का चित्र देखा, जिसमें उन्होंने अपना जीवन गुजारा। उसे देखकर प्रधानमंत्री श्री मोदी की आंखें भर आईं। उन्होंने संकल्प लिया कि आज से देश में कोई गरीब झोपड़ी में नहीं रहेगा और प्रधानमंत्री आवास योजना की शुरुआत हुई।

गरीब मां के बेटे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपनी मां को धुआं उगलते चूल्हे पर खाना बनाते देखा था। माता-बहनों को इस तकलीफ से मुक्ति दिलाने के लिए उन्होंने उज्ज्वला योजना शुरू की, जिसके अंतर्गत गरीबों को 10 करोड़ गैस कनेक्शन दिए जा चुके हैं।

कोई गरीब पैसे के अभाव में इलाज से वंचित न रहे, इसके लिए उन्होंने आयुष्मान भारत योजना शुरू की। कांग्रेस के जमाने में देश भ्रष्टाचार के दलदल में डूबा था। कांग्रेस के ही एक प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कहा था कि हम दिल्ली से एक रुपया भेजते हैं, लेकिन हितग्राही तक सिर्फ 15 पैसे पहुंचते हैं, 85 पैसे दलाल और बिचौलिए खा जाते हैं।

इस भ्रष्टाचार पर नकेल कसने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पद संभालते ही करीब 55 करोड़ जनधन खाते खोले। सारी योजनाओं का पैसा इन्हीं खातों में आता है। आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी दिल्ली से 1 रुपया भेजते हैं, तो पूरा एक रुपया खाते में पहुंचता है और दलाल-बिचौलिए मुंह देखते रह जाते हैं। सभी कार्यकर्ताओं को केंद्र और राज्य सरकारों की सभी जनहित की योजनाओं को धरातल पर उतारना है और घर-घर जाकर हर पात्र व्यक्ति को इन योजनाओं का लाभ दिलाना है। ▪

युवा, परिश्रम और इनोवेशन से अपार सामर्थ्य दिखा रहा है

- जब युवा राष्ट्र निर्माण में प्रमुखता से योगदान देता है, तो देश तेज विकास करता है और विश्व में अपनी पहचान भी बनाता है।
- भारत के युवा अपने समर्पण और नवाचार से आज दुनिया को दिखा रहे हैं कि हममें कितना सामर्थ्य है।
- बजट में सरकार ने 'मेक इन इंडिया' पहल को बढ़ावा देने और युवाओं को विश्व स्तर पर मानकीकृत उत्पाद बनाने का अवसर प्रदान करने के लक्ष्य के साथ विनिर्माण मिशन की घोषणा की है।
- विनिर्माण मिशन से देश भर में न केवल लाखों एमएसएमई और छोटे उद्यमियों को मदद मिलेगी, बल्कि देश भर में रोजगार के नए अवसर भी खोलेगा।
- मुंबई जल्द ही विश्व ऑडियो विजुअल और मनोरंजन शिखर सम्मेलन (वेव्स) 2025 की मेजबानी करेगा, यह आयोजन युवाओं को अपने केंद्र में रखते हुए युवा रचनाकारों को पहली बार ऐसा मंच प्रदान करेगा।
- मीडिया, गेमिंग और मनोरंजन के क्षेत्र में वेव्स अपनी प्रतिभा दिखाने का एक अभूतपूर्व अवसर है।
- नौकरशाही से लेकर अंतरिक्ष और विज्ञान तक के क्षेत्रों में भारत की महिला शक्ति नई ऊंचाइयों को छू रही है, सरकार भी ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने पर जोर दे रही है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति और उसकी सफलता की नींव उस राष्ट्र के युवा होते हैं। जब युवा राष्ट्र के निर्माण में भागीदार होते हैं, तो राष्ट्र तेज विकास भी करता है और विश्व में अपनी पहचान भी बनाता है।

भारत का युवा आज अपने परिश्रम और इनोवेशन से दुनिया को ये दिखा रहा है कि, हम में कितना सामर्थ्य है।

केंद्र सरकार ने विभिन्न विभागों में 51000 से ज्यादा युवाओं को पक्की सरकारी नौकरी के पत्र दिए। भारत सरकार के अलग अलग विभागों में युवाओं के नए दायित्वों की शुरूआत हुई है। युवाओं का दायित्व देश के आर्थिक तंत्र को मजबूत

करना है, युवाओं का दायित्व देश की आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करना है, युवाओं का दायित्व देश में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण का है, युवाओं का दायित्व श्रमिकों के जीवन में मूलभूत बदलाव लाने का है। अपने कार्यों को आप जितनी ईमानदारी से पूरा करेंगे, उसका उतना ही सकारात्मक प्रभाव विकसित भारत की यात्रा में नजर आएगा। विश्वास है, आप अपने दायित्वों को पूरी निष्ठा से निभाएंगे।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति और उसकी सफलता की नींव उस राष्ट्र के युवा होते हैं। जब युवा राष्ट्र के निर्माण में भागीदार होते हैं, तो राष्ट्र तेज विकास भी करता है और विश्व में अपनी पहचान भी बनाता है। भारत का युवा आज अपने परिश्रम और इनोवेशन से दुनिया को ये दिखा रहा है कि, हम में कितना सामर्थ्य है। हमारी सरकार हर कदम पर ये सुनिश्चित कर रही है कि, देश के युवाओं के लिए रोजगार-स्वरोजगार के अवसर बढ़ें। Skill India, Startup India, Digital India जैसे अनेक अभियान इस दिशा में युवाओं के लिए नए अवसर बना रहे हैं। इन अभियानों के माध्यम से हम भारत के युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए खुला मंच दे रहे हैं। इसी का नतीजा है कि, इस दशक में हमारे युवाओं ने टेक्नोलॉजी, डेटा और इनोवेशन के क्षेत्र में भारत को दुनिया में बहुत आगे पहुंचा दिया है। आज UPI, ONDC, और GeM, Govt. e-Marketplace जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म, इनकी सफलता ये दिखाती है कि हमारे युवा किस तरह डिजिटल अर्थव्यवस्था में बदलाव का नेतृत्व कर रहे हैं। आज भारत में सबसे ज्यादा रियल टाइम डिजिटल ट्रांजैक्शन्स हो रहे हैं, और इसका बड़ा श्रेय हमारे युवाओं को जाता है।

इस बजट में सरकार ने मैन्यूफैक्चरिंग मिशन की घोषणा की है। इसका उद्देश्य है- मेक इन इंडिया को बढ़ावा देना और भारत के युवाओं को ग्लोबल स्टैंडर्ड वाले प्रॉडक्ट बनाने का मौका देना। इससे ना केवल देश की लाखों MSMEs को, हमारे लघु उद्यमियों को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि पूरे देश में रोजगार के नए अवसर भी खुलेंगे। आज का ये समय, भारत के युवाओं के लिए अभूतपूर्व अवसरों का समय है। हाल ही में IMF ने कहा है कि, भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना रहेगा। इस विश्वास के, इस ग्रोथ के कई पहलू हैं। और सबसे बड़ा पहलू ये है कि आने वाले दिनों में हर सेक्टर में नौकरियों में बढ़ोत्तरी होगी, रोजगार बढ़ेंगे। हाल के दिनों में, ऑटोमोबाइल और फुटवियर इंडस्ट्रीज में, हमारे प्रॉडक्शन और एक्सपोर्ट्स ने नए रिकॉर्ड बनाए हैं। ये सेक्टर ऐसे हैं, जो बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार दे रहे हैं। पहली बार खादी और ग्राम उद्योग, इनके प्रोडक्ट्स ने एक लाख 70 हजार करोड़ रुपये का टर्नओवर पार किया है। करीब-करीब पोने दो लाख करोड़। इससे खासकर ग्रामीण इलाकों में लाखों नए रोजगार पैदा हुए हैं। अभी कुछ ही दिन पहले Inland Water Transport में भी देश की एक और उपलब्धि सामने आई है। 2014 से पहले हमारे देश में एक साल में Inland Water Transport, उसके द्वारा करीब 18 मिलियन टन कार्गो मूवमेंट ही किया जाता था, only 18 मिलियन टन। जबकि इस साल Inland Water Transport द्वारा कार्गो मूवमेंट 18 से बढ़कर के 145 मिलियन टन से भी ज्यादा हो गया है। भारत को ये सफलता इसलिए मिली है, क्योंकि भारत ने इस दिशा में लगातार नीतियां बनाई हैं, निर्णय लिए हैं। पहले देश में नेशनल वॉटरवेज की संख्या भी सिर्फ 5 थी। अब भारत में नेशनल वॉटरवेज की संख्या बढ़कर, 5 से बढ़कर 110 के पार हो गई है। पहले इन वॉटरवेज की ऑपरेशनल लंबाई 2700 किलोमीटर के आसपास थी। यानी करीब-करीब ढाई हजार किलोमीटर से थोड़ा ज्यादा। अब ये भी बढ़कर करीब-करीब 5 हजार किलोमीटर हो गई है। ऐसी सारी उपलब्धियों की वजह से देश में युवाओं के लिए नए-नए अवसर बन रहे हैं।

कुछ ही दिन बाद मुंबई में वर्ल्ड ऑडियो विजुअल एंड एंटरटेनमेंट समिट यानी WAVES 2025 का आयोजन होने जा रहा है। इस आयोजन के केंद्र में भी देश के युवा हैं। देश के young creators को पहली बार इसी तरह का मंच मिल रहा है। मीडिया, गेमिंग और एंटरटेनमेंट फील्ड के innovators के लिए ये प्रतिभा दिखाने का अभूतपूर्व अवसर है। ये एक ऐसा प्लेटफॉर्म होगा, जहां entertainment से जुड़े स्टार्टअप्स को investors और industry leaders से जुड़ने का मौका मिलेगा। ये दुनिया के सामने अपने आइडियाज को शोकेस करने का सबसे बड़ा मंच होगा। युवाओं को AI, एक्स-आर और immersive media को जानने-समझने का मौका मिलेगा। इसके लिए कई तरह की वर्क शॉप्स आयोजित

अनुसूचित जनजाति मोर्चा बैठक

वक्फ बिल से महिला सशक्तिकरण - हितानंद जी

- **तुष्टिकरण की राजनीति के लिए विपक्ष कर रहा वक्फ कानून का विरोध।**

वक्फ संशोधन बिल को संविधान के मुताबिक पारदर्शिता लाने के लिए लाया गया है। इस बिल में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं को भी इसमें शामिल किया गया है। वक्फ को कुछ तथा-कथित लोगों ने घेर कर कब्जा कर रखा है। इसलिए इसका लाभ गरीब मुसलमानों तक नहीं पहुंच पा रहा है।

मुस्लिम समाज के गरीब तबके को भी फायदा मिले इसलिए बिल को लाया गया है। यूपीए की सरकार में सन् 2013 में तुष्टिकरण की राजनीति के लिए वक्फ बिल में अपनी आवश्यकताओं के हिसाब से संशोधन किया गया। अब फिर तुष्टिकरण की राजनीति के लिए विपक्षी पार्टियां लोगों को गुमराह करने की कोशिश कर रही हैं। वक्फ संशोधन बिल से सबसे ज्यादा घबराहट उन्हीं लोगों को हो रही है, जो वक्फ की जमीन पर कब्जा करके बैठे हैं। यही लोग जनता को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं। ▪

किए जाएंगे। WAVES से भारत के डिजिटल कंटेट फ्यूचर को नई ऊर्जा मिलने जा रही है।

आज भारत के युवाओं की सफलता में सबसे सराहनीय बात है- उसकी इंक्लूसिविटी, सर्वसमावेशी भाव। भारत आज जो कीर्तिमान गढ़ रहा है, उसमें हर वर्ग की भागीदारी बढ़ रही है! और हमारी बेटियाँ अब दो कदम आगे ही चल रही हैं। अभी कुछ ही दिन पहले UPSC का रिजल्ट आया है। उसमें भी टॉप 2 position बेटियों ने हासिल की है। टॉप-5 में 3 टॉपर बेटियां हैं। हमारी नारीशक्ति ब्यूरोक्रेसी से लेकर स्पेस और साइंस के क्षेत्र में नई बुलंदियों को छू रही है। सरकार का विशेष ध्यान ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण पर भी है। सेल्फ हेल्प ग्रुप, बीमा सखी, बैंक सखी और कृषि सखी जैसी पहल ने ग्रामीण महिलाओं के लिए नए अवसर तैयार किए हैं। आज देश में हजारों महिलाएं ड्रोन दीदी बनकर अपने परिवार और गांव की समृद्धि सुनिश्चित कर रही हैं। आज देश में 90 लाख से ज्यादा सेल्फ हेल्प ग्रुप बने हैं, और 10 करोड़ से ज्यादा महिलाएं उनके साथ जुड़कर काम कर रही हैं। इन सेल्फ हेल्प ग्रुप्स का सामर्थ्य बढ़ाने के लिए हमारी सरकार ने इनके बजट में 5 गुना बढ़ोत्तरी की है। इन समूहों को बिना गारंटी 20 लाख रुपए तक का लोन देने की व्यवस्था बनाई गई है। मुद्रा योजना में भी सबसे ज्यादा लाभार्थी महिलाएं ही हैं। आज देश में 50 हजार से ज्यादा स्टार्टअप्स में महिलाएं निदेशक के रूप में काम कर रही हैं। हर सेक्टर में ऐसा बदलाव विकसित भारत के संकल्प को मजबूती दे रहा है, रोजगार और स्वरोजगार के मौके बढ़ा रहा है।

आप सभी ने यह पद अपनी मेहनत और लगन से प्राप्त किया है। अब समय है, कि आप अपने जीवन के अगले पड़ावों को न केवल अपने लिए, बल्कि देश के लिए भी समर्पित करें। जन सेवा की भावना सर्वोपरि होनी चाहिए। जब आप अपनी सेवा को सर्वोच्च मानकर काम करेंगे, तो आपके कार्यों में वो ताकत होगी जो देश को नई दिशा देगी। आपके कर्तव्य पालन, आपके इनोवेशन और आपकी निष्ठा से ही भारत के हर नागरिक का जीवन बेहतर बनेगा।

आप जब किसी जिम्मेदार पद पर पहुँचते हैं, तो एक नागरिक के रूप में भी आपके कर्तव्य, आपका रोल और अहम हो जाता है। आप सभी को इस दिशा में भी जागरूक रहना चाहिए। और हमें भी एक नागरिक के नाते योगदान देने में पीछे नहीं रहना चाहिए। अब जैसे मैं उदाहरण बताता हूं, इस समय देश में 'एक पेड़ माँ के नाम' इतना बड़ा अभियान चल रहा है। आप आज जहां पहुंचे हैं, आप जीवन की जो नई शुरुआत कर रहे हैं, इसमें आपकी माँ की सबसे बड़ी भूमिका होगी। आप भी अपनी माँ के नाम पेड़ लगाएँ, प्रकृति की सेवा करके अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें। आप जिस ऑफिस में काम करेंगे, वहाँ ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस अभियान से जोड़ें। आपके सेवाकाल की शुरुआत में ही, जून के महीने में, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस भी आ रहा है। ये एक बहुत बड़ा अवसर है। इतने बड़े अवसर पर, आप सफल जीवन की शुरुआत के साथ ही योग के माध्यम से स्वस्थ जीवन की भी शुरुआत करिए। आपका स्वास्थ्य आपके लिए तो जरूरी है ही,ये आपकी work efficiency और देश की productivity के लिए भी उतना ही अहम है।

आप अपने सामर्थ्य को बढ़ाने के लिए मिशन कर्मयोगी की, उसकी भी भरपूर मदद लेते रहिएगा। आपके कार्य का मकसद केवल पद प्राप्त करना नहीं है। आपका पद भारत के हर नागरिक की सेवा करने और देश की प्रगति में अपना योगदान देने के लिए है। सिविल सर्विसेस डे पर मैंने एक मंत्र दिया था और मैंने कहा था, कि हम सरकार में जितने भी लोग हैं, हमारे लिए तो एक ही मंत्र सर्वोपरि होना चाहिए, और वो मंत्र है - **नागरिक देवो भवः नागरिक देवो भवः**। नागरिक की सेवा ही आपके लिए, हम सबके लिए देव पूजा के समान है। इस मंत्र को भी हमेशा-हमेशा याद रखिएगा। हम अपने सामर्थ्य और ईमानदारी से एक ऐसा भारत बनाएंगे, जो विकसित भी होगा, समृद्ध भी होगा। ▪

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आगामी जनगणना में जातिवार गणना की मंजूरी दी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की राजनीतिक मामलों की समिति ने आगामी जनगणना में जातिवार गणना शामिल करने का निर्णय लिया है। यह वर्तमान सरकार की राष्ट्र और समाज के समग्र हितों और मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाती है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 246 के अनुसार, जनगणना संघ का विषय है, जो सातवीं अनुसूची के संघ सूची में 69वें स्थान पर उल्लिखित है। हालांकि कुछ राज्यों ने जातिवार गणना के लिए सर्वेक्षण किए हैं, पर इनमें पारदर्शिता और उद्देश्य अलग-अलग रहे हैं। कुछ सर्वेक्षण पूरी तरह राजनीति के दृष्टिगत किए गए हैं, जिससे समाज में दुविधा उत्पन्न हुई है। इन सभी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए तथा सामाजिक ताने-बाने को राजनीतिक दबाव से मुक्त रखना सुनिश्चित करने हेतु अलग-अलग सर्वेक्षणों की बजाय मुख्य जनगणना में ही जातिवार जनगणना कराने का निर्णय लिया गया है।

यह सुनिश्चित करेगा कि समाज आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत रहे और देश की प्रगति बिना किसी अवरोध के जारी रहे। उल्लेखनीय है कि आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किये जाने पर समाज के किसी वर्ग में तनाव पैदा नहीं हुआ।

देश की आजादी के बाद से अब तक की सभी जनगणनाओं में जाति को बाहर रखा गया है। वर्ष 2010 में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय डॉ. मनमोहन सिंह ने लोकसभा को आश्वस्त किया था कि जातिवार जनगणना कराने के मुद्दे पर कैबिनेट में विचार किया जाएगा। इस विषय पर विचार-विमर्श के लिए मंत्रियों का एक समूह भी बनाया गया था। इसके अलावा अधिकांश राजनीतिक दलों ने जातिवार जनगणना की सिफारिश की थी। इसके बावजूद भी पिछली सरकार ने जातिगत जनगणना की बजाय सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना सर्वेक्षण (एसईसीसी) का विकल्प चुना। ▪

हर भारतीय का खून खौल रहा है

22 अप्रैल को पहलगाम में हुई आतंकी वारदात ने देश के हर नागरिक को दुख पहुँचाया है। पीड़ित परिवारों के प्रति हर भारतीय के मन में गहरी संवेदना है।

भले वो किसी भी राज्य का हो, वो कोई भी भाषा बोलता हो, लेकिन वो उन लोगों के दर्द को महसूस कर रहा है, जिन्होंने इस हमले में अपने परिजनों को खोया है। मुझे एहसास है, हर भारतीय का खून, आतंकी हमले की तस्वीरों को देखकर खौल रहा है।

- **मेरे दिल में गहरी पीड़ा है।**
- **आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में देश की एकता, 140 करोड़ भारतीयों की एकजुटता हमारी सबसे बड़ी ताकत है।**
- **पहलगाम हमले के अपराधियों और सरपरस्तों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी।**
- **साइंस, एजुकेशन और भारत के स्पेस प्रोग्राम को नई ऊंचाई देने में डॉ. के. कस्तूरीरंगन जी के योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा।**
- **आज भारत एक ग्लोबल स्पेस पावर बन गया है।**
- **ऑपरेशन ब्रह्मा में भाग लेने वाले सभी लोगों पर मुझे बहुत गर्व है।**
- **जब भी मानवता की सेवा की बात आती है, भारत हमेशा सबसे आगे रहा है।**
- **युवाओं में साइंस और इनोवेशन के प्रति बढ़ता आकर्षण भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा।**
- **Ek Ped Maa Ke Naam पहल के तहत 140 करोड़ से अधिक पेड़ लगाए गए।**
- **चंपारण सत्याग्रह ने स्वतंत्रता आंदोलन में नया आत्म विश्वास जगाया।**

आज जब मैं आपसे 'मन की बात' कर रहा हूँ, तो मन में गहरी पीड़ा है। **22 अप्रैल को पहलगाम में हुई आतंकी वारदात ने देश के हर नागरिक को दुख पहुँचाया है।** पीड़ित परिवारों के प्रति हर भारतीय के मन में गहरी संवेदना है। भले वो किसी भी राज्य का हो, वो कोई भी भाषा बोलता हो, लेकिन वो उन लोगों के दर्द को महसूस कर रहा है, जिन्होंने इस हमले में अपने परिजनों को खोया है। मुझे एहसास है, हर भारतीय का खून, आतंकी हमले की तस्वीरों को देखकर खौल रहा है। पहलगाम में हुआ ये हमला, आतंक के सरपरस्तों की हताशा को दिखाता है, उनकी कायरता को दिखाता है। ऐसे समय में जब कश्मीर में शांति लौट रही थी, स्कूल-कॉलेजों में एक vibrancy थी, निर्माण कार्यों में अभूतपूर्व गति आई थी, लोकतंत्र मजबूत हो रहा था, पर्यटकों की संख्या में रिकॉर्ड बढ़ोत्तरी हो रही थी, लोगों की कमाई बढ़ रही थी, युवाओं के लिए नए अवसर तैयार हो रहे थे। देश के दुश्मनों को, जम्मू-कश्मीर के दुश्मनों को, ये रास नहीं आया। आतंकी और आतंक के आका चाहते हैं, कश्मीर फिर से तबाह हो जाए और इसलिए इतनी बड़ी साजिश को अंजाम दिया। आतंकवाद के खिलाफ इस युद्ध में देश की एकता, 140 करोड़ भारतीयों की एकजुटता, हमारी सबसे बड़ी ताकत है। यही एकता, आतंकवाद के खिलाफ हमारी निर्णायक लड़ाई का आधार है। हमें देश के सामने आई इस चुनौती का सामना करने के लिए अपने संकल्पों को मजबूत करना है। हमें एक राष्ट्र के रूप में

दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रदर्शन करना है। आज दुनिया देख रही है, इस आतंकी हमले के बाद पूरा देश एक स्वर में बोल रहा है।

भारत के हम लोगों में जो आक्रोश है, वो आक्रोश पूरी दुनिया में है। इस आतंकी हमले के बाद लगातार दुनिया-भर से संवेदनाएं आ रही हैं। मुझे भी Global leaders ने phone किए हैं, पत्र लिखे हैं, संदेश भेजे हैं। इस जघन्य तरीके से किए गए आतंकी हमले की सब ने कठोर निंदा की है। उन्होंने मृतकों के परिवारजनों के प्रति संवेदनाएं प्रकट की हैं। पूरा विश्व, आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई में, 140 करोड़ भारतीयों के साथ खड़ा है। मैं पीड़ित परिवारों को फिर भरोसा देता हूँ कि उन्हें न्याय मिलेगा, न्याय मिलकर रहेगा। इस हमले के दोषियों और साजिश रचने वालों को कठोरतम जवाब दिया जाएगा।

हमने देश के महान वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरीरंगन जी को खो दिया है। जब भी कस्तूरीरंगन जी से मुलाकात हुई, हम भारत के युवाओं के talent, आधुनिक शिक्षा, space-science ऐसे विषयों पर काफी चर्चा करते थे। विज्ञान, शिक्षा और भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊंचाई देने में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उनके नेतृत्व में ISRO को एक नई पहचान मिली। उनके मार्गदर्शन में जो space programme आगे बढ़े, उससे भारत के प्रयासों को global मान्यता मिली। आज भारत जिन satellites का उपयोग करता है, उनमें से कई डॉ. कस्तूरीरंगन की देखरेख में ही launch की गई थी। उनके व्यक्तित्व की एक और बात बहुत खास थी, जिससे युवा-पीढ़ी उनसे सीख सकती है। उन्होंने हमेशा innovation को महत्व दिया। कुछ नया सीखने, जानने और नया करने का vision बहुत प्रेरित करने वाला है। डॉ. के. कस्तूरीरंगन जी ने देश की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति तैयार करने में भी बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। डॉ. कस्तूरीरंगन, 21वीं सदी की आधुनिक जरूरतों के मुताबिक forward looking education का विचार लेकर आए थे। देश की निःस्वार्थ सेवा और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। मैं डॉ. के. कस्तूरीरंगन जी को विनम्र भाव से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

इसी महीने अप्रैल में आर्यभट्ट Satellite की launching के 50 वर्ष पूरे हुए है। आज जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, 50 वर्षों की इस यात्रा को याद करते हैं- तो लगता है हमने कितनी लंबी दूरी तय की है। अंतरिक्ष में भारत के सपनों की ये उड़ान एक समय केवल हौंसलों से शुरू हुई थी। राष्ट्र के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा पाले कुछ युवा वैज्ञानिक-उनके पास न तो आज जैसे आधुनिक संसाधन थे, न ही दुनिया की Technology तक वैसी पहुँच थी - अगर कुछ था तो वो था, प्रतिभा, लगन, मेहनत और देश के लिए कुछ करने का जज्बा। बैलगाड़ियों और साइकिलों पर Critical Equipment को खुद लेकर जाते हमारे वैज्ञानिकों की तस्वीरों को आपने भी देखा होगा। उसी लगन और राष्ट्रसेवा की भावना का नतीजा है कि आज इतना कुछ बदल गया है। आज भारत एक Global Space Power बन चुका है। हमने एक साथ 104 Satellite को Launch करके Record बनाया है। हम चंद्रमा के South Pole पर पहुँचने वाले पहले देश बने हैं। भारत ने Mars Orbiter Mission Launch किया है और हम आदित्य-Lv Mission के जरिए सूरज के काफी करीब तक पहुंचे हैं। आज भारत पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा cost effective लेकिन Successful Space Program का नेतृत्व कर रहा है। दुनिया के कई देश अपनी Satellites और Space Mission के लिए ISRO की मदद लेते हैं।

हम जब ISRO द्वारा किसी Satellite का launch देखते हैं तो हम गर्व से भर जाते हैं। ऐसी ही अनुभूति मुझे तब हुई जब मैं 2014 में PSLV-C-23 की launching का साक्षी बना था। 2019 में Chandrayaan-2 की landing के दौरान भी, मैं बेंगलुरू के ISRO Center में मौजूद था। उस समय Chandrayaan को वो अपेक्षित सफलता नहीं मिली थी, तब वैज्ञानिकों के लिए, वो, बहुत मुश्किल घड़ी थी। लेकिन मैं अपनी आंखों से वैज्ञानिकों के धैर्य और कुछ कर गुजरने का जज्बा भी देख रहा था। और कुछ साल बाद पूरी दुनिया ने भी देखा कैसे उन्हीं वैज्ञानिकों ने Chandrayaan-3 को सफल करके दिखाया।

अब भारत ने अपने Space Sector को Private Sector के लिए भी Open कर दिया है। आज बहुत से युवा Space Startup में नए झंडे लहरा रहे हैं। 10 साल पहले इस क्षेत्र में सिर्फ एक Company थी, लेकिन आज देश में, सवा तीन सौ से ज्यादा Space Startup काम कर रहे हैं। आने वाला समय Space में बहुत सारी नई संभावनाएं लेकर आ रहा है। भारत नई ऊंचाइयों को छूने वाला है। देश गगनयान, SpaDeX और Chandrayaan-4 जैसे कई अहम् मिशन की तैयारियों में जुटा है। हम Venus Orbiter Mission और Mars Lander Mission पर भी काम कर रहे हैं। हमारे Space Scientists अपने Innovations से देशवासियों को नए गर्व से भरने वाले हैं।

पिछले महीने म्यांमार में आए भूकंप की खौफनाक तस्वीरें आपने जरूर देखी होंगी। भूकंप से वहाँ बहुत बड़ी तबाही आई, मलबे में फंसे लोगों के लिए एक-एक सांस, एक-एक पल कीमती था। इसलिए भारत ने म्यांमार के हमारे भाई-बहनों के लिए तुरंत Operation Brahma शुरू किया। Air force के aircraft से लेकर Navy के ships तक म्यांमार की मदद के लिए रवाना हो गए। वहाँ भारतीय टीम ने एक field hospital तैयार किया। इंजीनियरों की एक टीम ने अहम् इमारतों

और infrastructures को हुए नुकसान का आकलन करने में मदद की। भारतीय team ने वहां कंबल, tent, sleeping bags, दवाइयां, खाने-पीने के सामान के साथ ही और भी बहुत सारी चीजों की supply की। इस दौरान भारतीय टीम को वहाँ के लोगों से बहुत सारी तारीफ भी मिली।

इस संकट में, साहस, धैर्य और सूझ-बूझ के कई दिल छू जाने वाले उदाहरण सामने आए। भारत की टीम ने 70 वर्ष से ज्यादा उम्र की एक बुजुर्ग महिला को बचाया जो मलबे में 18 घंटों से दबी हुई थी। भारत से गई टीम ने उनके oxygen level को stable करने से लेकर fracture के treatment तक, इलाज की हर सुविधा उपलब्ध कराई। जब इस बुजुर्ग महिला को अस्पताल से छुट्टी मिली तो उन्होंने हमारी टीम का बहुत आभार जताया। वो बोली कि, भारतीय बचाव दल की वजह से उन्हें नया जीवन मिला है। बहुत से लोगों ने हमारी टीम को बताया कि उनकी वजह से वो अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को ढूंढ पाए।

भूकंप के बाद म्यांमार में मांडले की एक monastery में भी कई लोगों के फंसे होने की आशंका थी। हमारे साथियों ने यहां भी राहत और बचाव अभियान चलाया, इसकी वजह से उन्हें बौद्ध भिक्षुओं का ढेर सारा आशीर्वाद मिला। हमें Operation Brahma में हिस्सा लेने वाले सभी लोगों पर बहुत गर्व है। हमारी परंपरा है, हमारे संस्कार हैं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना-पूरी दुनिया एक परिवार है। संकट के समय विश्व-मित्र के रूप में भारत की तत्परता और मानवता के लिए भारत की प्रतिबद्धता हमारी पहचान बन रही है।

मुझे अफ्रीका के Ethiopia में प्रवासी भारतीयों के एक अभिनव प्रयास का पता चला है। Ethiopia में रहने वाले भारतीयों ने ऐसे बच्चों को इलाज के लिए भारत भेजने की पहल की है जो जन्म से ही हृदय की बीमारी से पीड़ित हैं। ऐसे बहुत से बच्चों की भारतीय परिवारों द्वारा आर्थिक मदद भी की जा रही है। अगर किसी बच्चे का परिवार पैसे की वजह से भारत आने में असमर्थ है, तो इसका भी इंतजाम, हमारे भारतीय भाई-बहन कर रहे हैं। कोशिश ये है कि गंभीर बीमारी से जूझ रहे Ethiopia के हर जरुरतमन्द बच्चे को बेहतर इलाज मिले। प्रवासी भारतीयों के इस नेक कार्य को Ethiopia में भरपूर सराहना मिल रही है। आप जानते हैं कि भारत में मेडिकल सुविधाएँ लगातार बेहतर हो रही हैं। इसका लाभ दूसरे देश के नागरिक भी उठा रहे हैं।

कुछ ही दिन पहले भारत ने अफगानिस्तान

के लोगों के लिए बड़ी मात्रा में vaccine भी भेजी है। ये Vaccine, Rabies, Tetanus, Hepatitis B और Influenza जैसी खतरनाक बीमारियों से बचाव में काम आएगी। भारत ने इसी हफ्ते नेपाल के आग्रह पर वहाँ दवाईयाँ और vaccine की बड़ी खेप भेजी है। इनसे thalassemia और sickle cell disease के मरीजों को बेहतर इलाज सुनिश्चित होगा। जब भी मानवता की सेवा की बात आती है, तो भारत, हमेशा इसमें आगे रहता है और भविष्य में भी ऐसी हर जरूरत में हमेशा आगे रहेगा।

अभी हम Disaster Management की बात कर रहे थे। और किसी भी प्राकृतिक आपदा से निपटने में बहुत अहम् होती है -आपकी alertness, आपका सचेत रहना। इस alertness में अब आपको अपने मोबाईल के एक स्पेशल APP से मदद मिल सकती है। ये APP आपको किसी प्राकृतिक आपदा में फंसने से बचा सकते हैं और इसका नाम भी है 'सचेत'। 'सचेत APP', भारत की National Disaster Management Authority (NDMA) ने तैयार किया है। बाढ़, Cyclone, Land-slide, Tsunami, जंगलों की आग, हिम-स्खलन, आंधी, तूफान या फिर बिजली गिरने जैसी आपदाएँ हो, 'सचेत APP' आपको हर प्रकार से informed और protected रखने का प्रयास करता है। इस APP के माध्यम से आप मौसम विभाग से जुड़े updates प्राप्त कर सकते हैं। खास बात ये है कि 'सचेत APP' क्षेत्रीय भाषाओं में भी कई सारी जानकारियां उपलब्ध कराता है। इस APP का आप भी फायदा उठायें और अपने अनुभव हमसे जरूर साझा करें।

आज हम पूरी दुनिया में भारत के talent की तारीफ होते देखते हैं। भारत के युवाओं ने भारत के प्रति दुनिया का नजरिया बदल दिया है, और, किसी भी देश के युवा की रुचि किस तरफ है, किधर है, उससे पता चलता है कि देश का भविष्य कैसा होगा। आज भारत का युवा, Science, Technology और Innovation की ओर बढ़ रहा है। ऐसे इलाके, जिनकी पहचान पहले पिछड़ेपन और दूसरे कारणों से होती थी, वहां भी युवाओं ने ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, जो हमें, नया विश्वास देते हैं। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा का विज्ञान केंद्र आजकल सबका ध्यान खींच रहा है। कुछ समय पहले तक, दंतेवाड़ा का नाम केवल हिंसा और अशान्ति के लिए जाना जाता था, लेकिन अब वहाँ, एक Science Centre, बच्चों और उनके माता-पिता के लिए उम्मीद की नई किरण बन गया है। इस Science Centre में जाना बच्चों को खूब पसंद आ रहा है। वे अब नई-नई मशीनें बनाने से लेकर technology का उपयोग करके नए products बनाना सीख रहे हैं। उन्हें 3D printers और robotic कारों के साथ ही दूसरी innovative चीजों के बारे में जानने का मौका मिला है। अभी कुछ समय पहले मैंने गुजरात Science City में भी Science Galleries का उद्घाटन किया था। इन galleries से ये झलक मिलती है कि आधुनिक विज्ञान का potential क्या है, विज्ञान हमारे लिए कितना कुछ कर सकता है। मुझे जानकारी मिली है कि इन galleries को लेकर वहाँ बच्चों में बहुत उत्साह है। Science

और Innovation के प्रति ये बढ़ता आकर्षण, जरूर भारत को नई ऊंचाई पर ले जाएगा।

हमारे देश की सबसे बड़ी ताकत हमारे 140 करोड़ नागरिक हैं, उनका सामर्थ्य है, उनकी इच्छा शक्ति है। और जब करोड़ों लोग, एक-साथ किसी अभियान से जुड़ जाते हैं, तो उसका प्रभाव बहुत बड़ा होता है। इसका एक उदाहरण है 'एक पेड़ माँ के नाम' - ये अभियान उस माँ के नाम है, जिसने हमें जन्म दिया और ये उस धरती माँ के लिए भी है, जो हमें अपनी गोद में धारण किए रहती है।

5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' पर इस अभियान के एक साल पूरे हो रहे हैं। इस एक साल में इस अभियान के तहत देश-भर में माँ के नाम पर 140 करोड़ से ज्यादा पेड़ लगाए गए हैं। भारत की इस पहल को देखते हुए, देश के बाहर भी लोगों ने अपनी माँ के नाम पर पेड़ लगाए हैं। आप भी इस अभियान का हिस्सा बनें, ताकि एक साल पूरा होने पर, अपनी भागीदारी पर आप गर्व कर सकें ।

पेड़ों से शीतलता मिलती है, पेड़ों की छाँव में गर्मी से राहत मिलती है, ये हम सब जानते हैं। लेकिन बीते दिनों मैंने इसी से जुड़ी एक और ऐसी खबर देखी जिसने मेरा ध्यान खींचा। गुजरात के अहमदाबाद शहर में पिछले कुछ वर्षों में 70 लाख से ज्यादा पेड़ लगाए गए हैं। इन पेड़ों ने अहमदाबाद में green area काफी बढ़ा दिया है। इसके साथ-साथ, साबरमती नदी पर River Front बनने से और कांकरिया झील जैसे कुछ झीलों के पुनर्निर्माण से यहाँ water bodies की संख्या भी बढ़ गई है। अब news reports कहती हैं कि बीते कुछ वर्षों में अहमदाबाद global warming से लड़ाई लड़ने वाले प्रमुख शहरों में से एक हो गया है। इस बदलाव को, वातावरण में आई शीतलता को, वहाँ के लोग भी महसूस कर रहे हैं। अहमदाबाद में लगे पेड़ वहाँ नई खुशहाली लाने की वजह बन रहे हैं। मेरा आप सबसे फिर आग्रह है कि धरती की सेहत ठीक रखने के लिए, Climate Change की चुनौतियों से निपटने के लिए, और अपने बच्चों का भविष्य सुरक्षित करने के लिए, पेड़ जरूर लगाएं 'एक पेड़ - माँ के नाम'।

एक बड़ी पुरानी कहावत है 'जहां चाह-वहां राह'। जब हम कुछ नया करने की ठान लेते हैं, तो मंजिल भी जरूर मिलती है। आपने पहाड़ों में उगने वाले सेब तो खूब खाए होंगे। लेकिन, अगर मैं पुछूँ कि क्या आपने कर्नाटक के सेब का स्वाद चखा है? तो आप हैरान हो जाएंगे। आमतौर पर हम समझते हैं कि सेब की पैदावार पहाड़ों में ही होती है। लेकिन कर्नाटक के बागलकोट में रहने वाले श्री शैल तेली जी ने मैदानों में सेब उगा दिया है। उनके कुलाली गांव में 35 डिग्री से ज्यादा तापमान में भी सेब के पेड़ फल देने लगे हैं। दरअसल श्री शैल तेली को खेती का शौक था तो उन्होंने सेब की खेती को भी आजमाने की कोशिश की और उन्हें इसमें सफलता भी मिल गई। आज उनके लगाए सेब के पेड़ों पर काफी मात्रा में सेब उगते हैं जिसे बेचने से उन्हें अच्छी कमाई भी हो रही है।

अब जब सेबों की चर्चा हो रही है, तो आपने किन्नौरी सेब का नाम जरूर सुना होगा। सेब के लिए मशहूर किन्नौर में केसर का उत्पादन होने लगा है। आमतौर पर हिमाचल में केसर की खेती कम ही होती थी, लेकिन अब किन्नौर की खूबसूरत सांगला घाटी में भी केसर की खेती होने लगी। ऐसा ही एक उदाहरण केरला के वायनाड का है। यहां भी केसर उगाने में सफलता मिली है। और वायनाड में ये केसर किसी खेत या मिट्टी में नहीं बल्कि Aeroponics Technique से उगाए जा रहे हैं। कुछ ऐसा ही हैरत भरा काम लीची की पैदावार के साथ हुआ है। हम तो सुनते आ रहे थे कि लीची बिहार, पश्चिम बंगाल या झारखंड में उगती है। लेकिन अब लीची का उत्पादन दक्षिण भारत और राजस्थान में भी हो रहा है। तमिलनाडु के थिरुवीरा अरासु, कॉफी की खेती करते थे। कोडईकनाल में उन्होंने लीची के पेड़ लगाए और उनकी 7 साल की मेहनत के बाद अब उन पेड़ों पर फल आने लगे। लीची उगाने में मिली सफलता ने आसपास के दूसरे किसानों को भी प्रेरित किया है। राजस्थान में जितेंद्र सिंह राणावत को लीची उगाने में सफलता मिली है।

सतत् संवाद का माध्यम है "मन की बात" - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

- **मोदी जी के ओजस्वी और प्रेरणादायक वचन सभी को करते हैं प्रेरित।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देशवासियों से सतत् संवाद के अभूतपूर्व माध्यम "मन की बात के 121 वें संस्करण का श्रवण अत्यंत प्रेरणादायक रहा। प्रधानमंत्री श्री मोदी के मन की बात कार्यक्रम का श्रवण किया। यह प्रसारण देश को एक सूत्र में पिरोकर सभी देशवासियों के मातृभूमि के प्रति समर्पण, सम्मान और स्नेह को राष्ट्रव्यापी स्वरूप प्रदान करता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के ओजस्वी और प्रेरणादायक वचन हमेशा हम सभी को प्रेरित करते हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मन की बात की 121वीं कड़ी में कहा कि पहलगाम में हुई आतंकी वारदात ने देश के हर नागरिक को दुख पहुंचाया है। आतंकवाद के खिलाफ इस युद्ध में देश की एकता और 140 करोड़ भारतीयों की एकजुटता, हमारी सबसे बड़ी ताकत है। इस हमले के दोषियों और साजिश रचने वालों को कठोरतम जवाब दिया जाएगा।

प्रधानमंत्री श्री मादी ने विज्ञान शिक्षा और भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊंचाई देने में महान वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरीरंगन के योगदान को याद किया। अब भारत ने अपने स्पेस सेक्टर को प्राइवेट सेक्टर के लिए भी खोल दिया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी द्वारा विकसित सचेत एप, कृषि एवं उद्यानिकी में हो रहे नवाचारों और एक पेड़ माँ के नाम अभियान के संबंध में भी चर्चा की। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा चंपारण सत्याग्रह पर लिखी पुस्तक पढ़ने के लिए युवाओं को प्रेरित किया।▪

ये सभी उदाहरण बहुत प्रेरित करने वाले हैं। अगर हम कुछ नया करने का इरादा कर लें, और मुश्किलों के बावजूद डटे रहें, तो असंभव को भी संभव किया जा सकता है।

आज अप्रैल का आखिरी रविवार है। कुछ ही दिनों में मई का महिना शुरू हो रहा है। मैं आपको आज से करीब 108 साल पहले लेकर चलता हूँ। साल 1917, अप्रैल और मई के यही दो महीने - देश में आजादी की एक अनोखी लड़ाई लड़ी जा रही थी। अंग्रेजों के अत्याचार उफान पर थे। गरीबों, वंचितों और किसानों का शोषण अमानवीय स्तर को भी पार कर चुका था। बिहार की उपजाऊ धरती पर ये अंग्रेज किसानों को नील की खेती के लिए मजबूर कर रहे थे। नील की खेती से किसानों के खेत बंजर हो रहे थे, लेकिन अंग्रेजी हुकूमत को इससे कोई मतलब नहीं था। ऐसे हालात में, 1917 में गांधी जी बिहार के चंपारण पहुंचे हैं। किसानों ने गांधी जी को बताया- हमारी जमीन मर रही है, खाने के लिए अनाज नहीं मिल रहा है। लाखों किसानों की उस पीड़ा से गांधी जी के मन में एक संकल्प उठा। वहीं से चंपारण का ऐतिहासिक सत्याग्रह शुरू हुआ। 'चंपारण सत्याग्रह' ये बापू द्वारा भारत में पहला बड़ा प्रयोग था।

बापू के सत्याग्रह से पूरी अंग्रेज हुकूमत हिल गई। अंग्रेजों को नील की खेती के लिए किसानों को मजबूर करने वाले कानून को स्थगित करना पड़ा। ये एक ऐसी जीत थी जिसने आजादी की लड़ाई में नया विश्वास फूंका। आप सब जानते होंगें इस सत्याग्रह में बड़ा योगदान बिहार के एक और सपूत का भी था, जो आजादी के बाद देश के पहले राष्ट्रपति बने। वो महान विभूति थे - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद। उन्होंने 'चंपारण सत्याग्रह' पर एक किताब भी लिखी - 'Satyagraha in Champaran', ये किताब हर युवा को पढ़नी चाहिए। अप्रैल में ही स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई के कई और अमिट अध्याय जुड़े हुए हैं। अप्रैल की 6 तारीख को ही गांधी जी की 'दांडी यात्रा' संपन्न हुई थी। 12 मार्च से शुरू होकर 24 दिनों तक चली इस यात्रा ने अंग्रेजों को झकझोर कर रख दिया था। अप्रैल में ही जलियाँवाला बाग नरसंहार हुआ था। पंजाब की धरती पर इस रक्तरंजित इतिहास के निशान आज भी मौजूद हैं।

कुछ ही दिनों में, 10 मई को, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वर्षगांठ भी आने वाली है। आजादी की उस पहली लड़ाई में जो चिंगारी उठी थी, वो आगे चलकर लाखों सेनानियों के लिए मशाल बन गई। अभी 26 अप्रैल को हमने 1857 की क्रांति के महान नायक बाबू वीर कुंवर सिंह जी की पुण्यतिथि भी मनाई है। बिहार के महान सेनानी से पूरे देश को प्रेरणा मिलती है। हमें ऐसे ही लाखों स्वतंत्रता सेनानियों की अमर प्रेरणाओं को जीवित रखना है। हमें उनसे जो ऊर्जा मिलती है, वो अमृतकाल के हमारे संकल्पों को नई मजबूती देती है।

'मन की बात' की इस लंबी यात्रा में आपने इस कार्यक्रम के साथ एक आत्मीय रिश्ता बना लिया है। देशवासी जो उपलब्धियाँ दूसरों से साझा करना चाहते हैं उसे 'मन की बात' के माध्यम से लोगों तक पहुंचाते हैं। अगले महीने हम फिर मिलकर देश की विविधताओं, गौरवशाली परंपराओं और नई उपलब्धियों की बात करेंगे। हम ऐसे लोगों के बारे में जानेंगे जो अपने समर्पण और सेवा भावना से समाज में बदलाव ला रहे हैं। हमेशा की तरह आप हमें अपने विचार और सुझाव भेजते रहिए। ▪

दुनिया आतंकवाद के खिलाफ भारत के साथ - विष्णुदत्त शर्मा

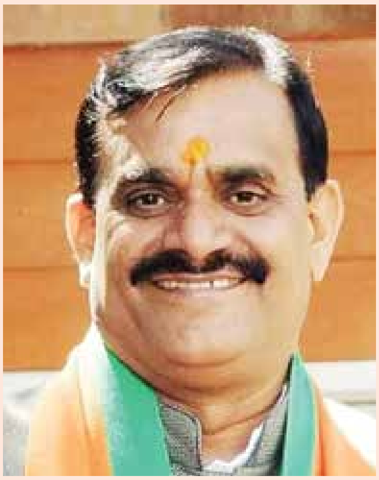

▪ **मोदी जी के नेतृत्व में भारत स्पेस टेक्नोलॉजी में दुनिया का नेतृत्व कर रहा है।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की "मन की बात" कार्यक्रम देश के जन-जन की बात और सामाजिक आंदोलन बन गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के सशक्त नेतृत्व में देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक प्रगति हो रही है। मोदी जी ने "मन की बात" कार्यक्रम में पहलगांव में आतंकी घटना का जिक्र करते हुए कहा कि इस दुखद घटना से विश्व सहित हिंदुओं में आक्रोश है। आज दुनिया के सारे देश आतंकवाद के खिलाफ भारत का समर्थन दे रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने पहलगाम में आतंकियों के कायराना हमले पर पीड़ित परिवार के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करते हुए भरोसा दिलाया है कि आतंकवादियों और इस हमले की साजिशकर्ताओं को कठोरतम जवाब दिया जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी आतंकवाद को समाप्त करने के लिए पूरे सकंल्प के साथ जुटे हैं। देश के 140 करोड़ जनता का संकल्प है कि आतंकवाद पूरी दुनिया से समाप्त होगा और इसकी शुरुआत हो गई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में उनके संबल और वैज्ञानिकों के अथक मेहनत से भारत स्पेस टेक्नोलॉजी में दुनिया का नेतृत्व कर रहा हैं। प्राईवेट सेक्टर में भी काफी संख्या में लोग स्पेस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आगे आ रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने "मन की बात" के कार्यक्रम के माध्यम से कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन एक भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिक और शिक्षाविद जिन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को तैयार करने वाली समिति की अध्यक्षता की, उनकी भूमिका का जिक्र करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। "मन की बात" कार्यक्रम के माध्यम से कई बातों का उल्लेख प्रधानमंत्री जी ने किया है। प्रधानमंत्री जी ने 5 जून को 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान का शुभारंभ किया था, अब तक 140 करोड़ जनता ने मां के नाम पेड़ लगाया है, जिसकी प्रशंसा की।

प्रधानमंत्री जी के आव्हान और मेरा प्रदेशवासियों से अनुरोध है कि 5 जून को मां के नाम आप भी एक पेड़ अवश्य लगाएं। प्रधानमंत्री जी ने पिछले दिनों म्यांमार में आए भूकंप का जिक्र करते हुए कहा कि हमने वहां काम किया। हमारे काम को वहां की सरकार और जनता का अप्रिशिएसन मिला। भारत की संस्कृति है कि हम विश्व को परिवार मानते हैं। ▪

वीर योद्धा छत्रसाल

महाराज का एक-एक शब्द अग्निपुंज की भाँति छत्रसाल के रोम-रोम में स्फूर्त-संचार करती गयी।

उसने बुंदेलखंड को स्वतंत्र करने का वीर-संकल्प लिया। तत्पश्चात महाराज से विदाई लेकर वह सीधा बुंदलेखंड को वापस गया।

बुंदेलखंड का स्वातंत्र्य भी छीना गया था। वहाँ का प्रमुख राजा चंपतराय औरंगजेब के साथ लड़ते-लड़ते मारा गया था। चंपतराय की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी खड्ग से अपना सिर कटवा कर मर गयी। चंपतराय का पुत्र छत्रसाल एक तेजस्वी राजकुमार था, बुंदेलखंड की स्वाधीनता का सपना उसकी पलकों में फुदक रहा था। तथापि उसे किस प्रकार पूरा करना है, यह उस कच्ची उम्र वाले छत्रसाल को पता नहीं था। आस-पास का माहौल भी उसके विरोध में ही था। शेष सब हिंदू राजा परकीयों (दूसरों) की गुलामी करने की होड़ में ही व्यस्त थे। यह सब देखकर छत्रसाल की आत्मा विद्रोह पर उतारू हो जाती थी। परंतु मार्ग पता न होने से वह छटपटा रहा था। उसी मनःस्थिति में वह राजा जयसिंह के आश्रय में आकर उसकी सेना में भर्ती हुआ था। उसने वहाँ अतुल पराक्रम दिखाया, लेकिन उसकी ओर किसी ने आँख उठाकर भी नहीं देखा। तभी उसे परकीयों की चाकरी क्या चीज होती है, इसका मजा चखने को मिला। छुटपन से ही छत्रसाल के कानों में शिवाजी का नाम तथा कारनामों की बातें आती थी। उनका साहस, स्वातंत्र्य समरों की स्फूर्ति गाथा सुन कर वह रोमांचित हो उठा था। इसी कारण, चाकरी करनी ही हो तो स्वधर्म स्वराज्य के संरक्षक उस शिवाजी के चरणों का दास बनना पसंद करूंगा, विधर्मी, अत्याचारी औरंगजेब का गुलाम कतई नहीं बनूँगा, ऐसा उस नवयुवक ने अपने मन में ठान लिया था।

औरंगजेब ने दिलेर खान तथा बहादुर खान को फिर एक बार शिवाजी पर हमला करने भेज दिया। तब छत्रसाल भी उनके साथ था। दक्खन में आने के बाद, एक दिन उसने दिलेर खान के पास जाकर शिकार खेलने जाने की इजाजत माँगी। अनुमति मिलते ही, फौज की छावनी से अपनी पत्नी तथा साथियों के साथ निकल पड़ा। गिरि-कंदराओं के अपरिचित राहों पर दिन-रात दौड़ते-हाँफते उसने भीमा, कृष्णा आदि नदियों को पार किया। अंत में, स्वराज्य की सीमा में महाराज के सेना-शिविरों में पहुँच गया। बुदेलखंड का राजकुँवर छत्रसाल अपने परिवार के साथ अपनी ओर आ रहा है, यह समाचार गुप्तचरों द्वारा शिवाजी महाराज तक पहले ही पहुँच चुका था। महाराज ने उनके स्वागत की उत्कृष्ट व्यवस्था की थी। फिर भी उन्हें अचंभा, यह नवतरूण इस तरह क्यों दौड़कर आ रहा हैं।

अपने डेरे में छत्रसाल प्रवेश कर ही रहा था कि महाराज ने खड़े होकर प्रेम भरे स्वर में, आइए, वीर योद्धा छत्रसालजी ऐसा कहकर स्वागत किया। स्वतंत्र महाराष्ट्र ही मानो खड़ा होकर स्वाधीनता के उत्सुक बुंदेलखंड का स्वागत कर रहा था। इतना मनोभावन, अपूर्व दृश्य था वह। राजपुरूष शिवाजी को देखने वह कितनी लालसा, कितनी परेशानियों, परिश्रम, कितनी पहाड़ों, नदियों को पार कर दौड़-धूप करके आया था। आखिर अपनी प्राणों की आस सफल हुई, यह देखकर छत्रसाल का हृदय पुलकित हो उठा। महाराज ने उस वीर किशोर को परम वात्सल्य से अपने पास बुलाकर बैठा लिया। बताइए, अब सब कुछ, ऐसा बड़ी आत्मीयता से पूछा। छत्रसाल ने अपने जीवन की पूरी रामकहानी बतायी। अंत में, महाराज से आश्रय की याचना की। स्वराज्य के एक सेवक के नाते अपना स्वीकार हो, इस व्यथा के साथ उसने प्रार्थना की।

छत्रसाल के एक-एक शब्दों में स्फुटित हो रही उसके अंतःकरण की वेदना, तिलमिलाहट, आकांक्षाएँ देखकर महाराज का हृदय भी उमड़ आया। उन्होंने अपनी भावपूर्ण ओजस्वी वाणी में कहा, छत्रसाल, आप क्षात्रकुल के मुकुटमणि हैं। आप बुंदेलखंड वापस चले जाइए। उसे मुक्त करिए। तुर्क हाथी के समान होंगे, लेकिन आप सिंह हो। आप भी अपनी सेना खड़ी करिए, लड़िए, शत्रु को भगाइए। बुंदेलखंड को स्वतंत्र बनाइए। चिन्ता मत करो, आप विजयी होंगे। हम दोनों के एक साथ रहकर लड़ने से बेहतर होगा कि अलग-अलग जगहों पर संघर्ष करें। रणनीति की दृष्टि से दो-दो मोर्चों पर औरंगजेब का दमछाक करना उचित तथा आसान होगा। मेरे पास सेवक बनकर रहने से आपके सब पराक्रम का श्रेय भी मुझे ही मिलेगा। वैसा न हो। आप एक स्वतंत्र राजा के नाते झलकते रहें, यही मेरी इच्छा हैं। तुम्हारी विजय-दुंदुभी शीघ्र ही हमारे कानों में आ जाये।

महाराज का एक-एक शब्द अग्निपुंज की भाँति छत्रसाल के रोम-रोम में स्फूर्ति संचार करती गयी। उसने बुंदेलखंड को स्वतंत्र करने का वीर संकल्प लिया। तत्पश्चात् महाराज से विदाई लेकर वह सीधा बुंदलेखंड को वापस गया। आखिर छत्रसाल ने महाराज के आदेशानुसार अतुल पराक्रम से बुंदेलखंड को स्वतंत्र किया। यमुना से नर्मदा तक, चंबल से टास तक फैला है उसके तेग का तेज, ऐसा भूषण कवि ने उसके बारे में अपने काव्य में वर्णन किया है। आगे छत्रसाल के वृद्ध होने पर, मोहम्मद बंगशाह ने बुंदेलखंड पर आक्रमण किया।

तब छत्रसाल ने पहले बाजीराव पेशवा से सहायता की याचना की। बाजीराव ने शिवाजी की परंपरा को ही आगे बढ़ाते हुए दौड़ते जाकर उसकी मदद की।

खुद के व्यक्तिगत बड़प्पन की किंचित मात्र भी कल्पना रखने वाला कोई भी हो, छत्रसाल जैसा महापराक्रमी हिंदू राजा को अपने पास सरदार की हैसियत से रखे बिना नहीं रह पाता। तथापि, विशाल राष्ट्रीय दृष्टि होने के कारण ही शिवाजी महाराज ने छत्रसाल को वैसी स्वतंत्र प्रेरणा देकर भेज दिया। तब शिवाजी के पास था, केवल हथेली भर राज्य। परंतु, उनकी दृष्टि हिंदुस्तान की पूरी लंबाई-चौड़ाई पर दौड़ती थी। ▪

लोकमाता महारानी अहिल्याबाई

भारत वर्ष में वीरांगनों के बलिदान और उत्कर्ष का समृद्ध इतिहास है। इतिहास की एक ऐसी ही अद्वितीय वीरांगना थी अहिल्या बाई होल्कर। मर्यादित व्यवहार और आदर्श आचरण की पर्याय अहिल्या बाई ने तीस वर्षों तक होल्कर राज्य का कुशल संचालन किया। न्यायप्रिय रानी ने सुशासन की मिसाल कायम की। उनके समय में होल्कर राज्य समृद्धि के चरम पर था। उन्होंने एक ऐसे लोक मंगलकारी राज्य की स्थापना की जहां पर सबके लिए न्याय, समदृष्टि और बराबरी का स्थान था। न्यायोचित व्यवस्था और आदर्श भाव के कारण ही अहिल्या बाई को लोकमाता से संबोधित किया गया। अहिल्या बाई अपने जीवन काल में ही किंवदती बन चुकीं थीं। राज्य को जनता की धरोहर मानते हुए उन्होंने जन कल्याण की भावना से शासन का संचालन किया। राज्य की रक्षा के लिए अहिल्या बाई युद्ध के मैदान में उतरीं और लड़ाईयाँ लड़ीं। मंदसौर में उनका संघर्ष बहुत चर्चित रहा। वहाँ उन्होंने दुश्मनों से लोहा लेकर जीत हासिल की थी।

अहिल्याबाई होल्कर का जन्म महाराष्ट्र में औरंगाबाद जिले के पाथर डीना गाँव में हुआ था। गाँव के पटेल मनकोजी शिन्दे के यहाँ 17 मई 1725 में जन्मी अहिल्याबाई का कण्ठ अत्यन्त मधुर था। बाल्यकाल में ही मनकोजी ने अपनी पुत्री को अनेक धर्मग्रन्थों के ज्ञान से समृद्ध किया और अनेक स्त्रोत और भजन याद करवा दिए। पाथर डीना गाँव की बच्ची अहिल्या बाई के जीवन में बड़ा बदलाव तब आया जब 1737 में इन्दौर नरेश मल्हार राव होल्कर ने पूना से इन्दौर लौटते समय रास्ते में पाथर डीना के पास पड़ाव डाला। शाम को भगवान त्र्यंबकेश्वर के दर्शन करने पहुँचे। वहाँ उन्हें शिव आराधना के स्त्रोत की शास्त्रोक्त उच्चारण सहित मधुर ध्वनि सुनाई दी। मधुर गायन से मुग्ध मल्हार राव ने आरती के बाद कन्या से नाम पूछा वह अहिल्या बाई थी।

मल्हार राव ने मंदिर के पुजारी से अहिल्या बाई के घर परिवार की जानकारी ली और उसके घर पहुँचे। अहिल्या बाई के पिता मनकोजी से अपने पुत्र खाण्डेराव के लिए अहिल्या बाई का हाथ मांगा। मनकोजी स्तब्ध थे। होना ही था, कहाँ एक साधारण पटेल की बेटी अहिल्या और कहाँ इन्दौर नरेश का बेटा राजकुमार खाण्डेराव। भगवान त्र्यंबकेश्वर की कृपा पाकर वे धन्य हो गये। जल्द ही विवाह संपन्न हुआ, अहिल्या बाई मल्हारराव की पुत्र-वधू बन इन्दौर के राजमहल आ गई। अहिल्या बाई की विनयशीलता, सेवा भाव, शान्त मृदु स्वभाव ने उन्हें सबका विशेष बना दिया।

मल्हार राव अहिल्या बाई की विलक्षण प्रतिभा को समझते थे इसीलिए उन्होंने अपनी पुत्रवधू को हाथी, घोड़े की सवारी तथा शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण दिया और राजकाज के कार्यों में सलाह मशवरा भी करने लगे। पति खाण्डेराव भी सर्वगुण संपन्न पत्नी पाकर संतुष्ट थे।

मल्हार राव अहिल्या बाई की विलक्षण प्रतिभा को समझते थे इसीलिए उन्होंने अपनी पुत्रवधू को हाथी, घोड़े की सवारी तथा शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण दिया और राजकाज के कार्यों में सलाह मशवरा भी करने लगे। पति खाण्डेराव भी सर्वगुण संपन्न पत्नी पाकर संतुष्ट थे। विवाह के दसवें वर्ष में खाण्डेराव के यहाँ पुत्र मालेराव और तेरवें वर्ष में पुत्री मुक्ताबाई का जन्म हुआ।

होल्कर कुमार खाण्डेराव वीर और साहसी थे, उन्होंने युद्ध कार्य का संचालन आरंभ कर दिया था जब युद्ध अभियानों को विजित कर खाण्डेराव वापस आते तो, अहिल्या बाई अति अभिमान के साथ पति की आरती उतारती। नियती चक्र में दोनों के सुखी दांपत्य जीवन को कुछ और ही स्वीकार्य था। सन् 1754 में जब राजपूत रजवाड़ों ने विद्रोह किया तो खाण्डेराव दमन अभियान पर चल दिये। युद्ध में खाण्डेराव वीरगति को प्राप्त हुए।

अहिल्या बाई पति के साथ सती होना चाहती थीं परन्तु मल्हार राव होल्कर को अपनी पुत्रवधु अहिल्या बाई की बुद्धिमता और धर्मनिष्ठा पर पूर्ण विश्वास था इसलिए उन्हें सती होने से रोक दिया गया। 20 मई 1766 को मल्हार राव होल्कर चल बसे। 23 जुलाई 1766 को अहिल्या बाई के पुत्र मालेराव गद्दी पर बैठे लेकिन वे भी लंबे समय तक जीवित नहीं रहे। 13 मार्च 1767 को मालेराव की मृत्यु होने के बाद अहिल्या बाई होल्कर राज्य की बागडोर संभालने आगे आयीं। हालांकि एक महिला का राज्य संचालन करना अपने आप में एक बड़ी चुनौती थी लेकिन इसमें अहिल्या बाई पूर्ण रूपेण सफल रहीं। अहिल्या बाई के पुत्र मालेराव की मृत्यु हो जाने के बाद मल्हार राव के दीवान गंगाधर ने राधौबा दादा को अपनी ओर मिलाकर एक षडयंत्र रचा जिसमें उसने राधौबा को लालच दिया कि आपके प्रयत्न से अहिल्या बाई मेरे किसी पुत्र को गोद ले लेंगी तो मैं आपको एक बड़ी रकम नजर करूँगा। रुपयों के लालच में राधौबा ने अहिल्या बाई पर गोद लेने के लिए दबाव डाला परन्तु अहिल्या बाई ने गोद लेना कबूल नहीं किया। फलस्वरूप राधौबा ने इन्दौर पर चढ़ाई करने की योजना बनायी।

अहिल्या बाई ने राधौबा को कहलवाया कि तुमको एक स्त्री के साथ युद्ध नहीं करना चाहिए, यदि इस युद्ध में तुम्हारी पराजय हुई तो सच मानो तुम संसार में मुँह ऊँचा करने के लायक भी नहीं रहोगे। राधौबा की सेना भी इस कार्य से प्रसन्न न थी। युद्ध के लिये सिंधिया और भौंसले की सहमति भी नहीं थी। युद्ध प्रारंभ होने से पूर्व ही माधवराव पेशवा का पुत्र राधौबा के पास पहुँचा और कहा कि वे अहिल्या बाई से युद्ध न करें। इस तरह यह युद्ध टल गया। इसके बाद अहिल्या बाई होल्कर राज्य की उत्तराधिकारी बनीं और महेश्वर को नई राजधानी बनाया। तुकोजी राव होल्कर सेनापति बनाए गए।

सन् 1767 से 1795 तक के अपने शासनकाल में अहिल्या बाई ने सारे भारत में दान-धर्म की गंगा प्रवाहित कर दी। होल्कर राज्य तथा देश के अन्य भागों में अहिल्या बाई ने अनेक मंदिर, घाट, कुएँ, बावड़ियाँ, धर्मशालाएँ, तालाब आदि का निर्माण करवाया। महारानी अहिल्या बाई प्रजा की खुशहाली के लिए समर्पित रहीं। उनके तीस वर्षों का शासनकाल होल्कर राज्य के उत्कर्ष का प्रमाण है। ▪

सच्चे राष्ट्रवाद की ज्योति प्रज्जवलित की महान वीर सावरकर ने

कुछ व्यक्ति जन्म से ही महान होते हैं। कुछ महान बनाये जाते हैं। किन्तु कुछ ऐसे होते हैं जिनकी महानता उनके जीवनकाल में स्वीकारी नहीं जाती। विनायक दामोदर सावरकर इस तीसरी श्रेणी में आते हैं। उनकी महानता इसी बात में हैं कि अपने ही लोगों से अनदेखी व अपमान झेलते हुए भी उन्होंने सच्चे राष्ट्रवाद की ज्योति प्रज्जवलित रखी। दुर्भाग्य से वे हिन्दू जनसाधारण को स्वीकार्य नहीं थे क्योंकि वे जन्म से ब्राह्मण पुराणमतवाद के घोर शत्रु रहे। इसीलिये एक विचित्र विरोधाभास यह रहा कि दकियानूसी ब्राह्मण उनके अस्पृश्यता के विरोध में उनके तीव्र व स्पष्ट दृष्टिकोण के कारण उन्हें 'अछूत तात्या' (तात्या उनको प्यार से पुकारते थे) कहकर उनका तिरस्कार करते थे। परन्तु इस कारण वे अछूतों के लिये, हिन्दू समाज के लिये, निचले तबके के लिये अपने आप स्वीकार्य नहीं बन गये।

बड़े विचित्र व स्वार्थी कारणों से ब्राह्मणेतर नेता और दलित वर्ग के नेता भी, निजी तौर पर यह स्वीकारते हुए भी कि सावरकरजी ने हिन्दू समाज से अस्पृश्यता व दूसरी सामाजिक बुराईयाँ दूर करने में क्रान्तिकारी योगदान दिया था, उस कार्य को लोगों की नजरों में लाने में बड़ी आनाकानी की। यह भी सच है कि 13 वर्ष की लंबी अवधि के लिये 1911 से 1923 तक वे अंडमान की सैल्युलर जेल में भारत भूमि से दूर कष्ट झेलते रहे और जब उन्हें वापस लाया गया तो उन्हें रत्नागिरी में १४ वर्षों तक स्थानबद्ध रखा गया इसीलिये उनके क्रियाकलाप (जो केवल सामाजिक हो सकते थे)उसी स्थान तक सीमित रहे। फ्रान्स के समुद्र तट के पास पानी में छलांग लगाकर उन्होंने अपनी जो अखिल भारतीय प्रतिमा बनाई थी वह धीर-धीरे जनता की स्मृति से ओझल हो गई, और जब 1937 में उन्हें राजनीति में सक्रिय होने की छूट मिली तो, जैसा कि हम पहले ही देख चुके है, उन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद का झंडा उठाने के सिवाय दूसरा पर्याय नहीं था व हिन्दू जनता की नजरों में उसका अर्थ ब्राह्मणवाद का समर्थन होता था।

जब 1947 में देश स्वाधीन हुआ तब हिन्दू समाज के आराध्य महात्मा गांधी की हत्या हिन्दू राष्ट्रवाद को बचाने की बात कहकर की गई जिससे की मतलबी लोगों को सावरकर तथा उनके हिन्दुत्व

सावरकर हिन्दू महासभा के नेता थे तथा संघ एक सामाजिक व सांस्कृतिक संगठन होने के नाते हिन्दू महासभा से अलग ही रहता था।

परन्तु दोनों ही हिन्दुत्व के दर्शन को स्वीकारते थे और भारतीय जनता पक्ष जो नि:संदिग्ध रूप से हिन्दू राष्ट्रवाद का पक्षधर हैं, एक अर्थ से वीर सावरकर का कार्य ही आगे बढ़ा रहा है...

दर्शन पर आघात करने का मौका मिला। डॉ. के.बी.हेडगेवार द्वारा 1925 में हिन्दू समाज की जैविक एकता वापस लाने हेतु स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी उस मामले में घसीटा गया व उस पर पाबन्दी लगाई गई। कठिन सत्व परीक्षा के बाद पाबन्दी हटाई गई। गांधी हत्या मुकदमे से सावरकर भी निर्दोष मुक्त हुए। किन्तु जिस कारण सावरकर व संघ दोनों को ही इस मामले में घसीटा गया था, वह उद्देश्य सफल रहा। हिन्दू राष्ट्रवाद जो विभाजन के बाद के वातावरण में फलता फूलता उसे गहरा आघात पहुँचा। सावरकर ब्राह्मण थे। संघ के अधिकतर कार्यकर्ता भी ब्राह्मण दकियानूसी करके दोनों को हिन्दू जनता की नजरों में बदनाम किया जा सका। डॉ. के. बी. हेडगेवार द्वारा स्थापित हिन्दू संगठन की उनकी कार्य प्रणाली तथा उनके द्वारा एकत्रित किया गया निष्ठावान स्वयंसेवकों का समूह इनकी जितनी प्रशंसा की जाये उतनी थोड़ी है क्योंकि 1948 के भयंकर आघात के पश्चात् भी संघ न केवल अस्तित्व में रहा बल्कि फलता फूलता गया और न केवल भारत में बल्कि सारे विश्व में फैल गया।

हिन्दू राष्ट्रवाद को सांप्रदायिक कहकर उसका अस्तित्व मिटाने के प्रयासों का उल्टा असर पड़ा। यह तथ्य कि हिन्दू राष्ट्रवाद धीरे-धीरे व निश्चित रूप से हिन्दू समाज में मान्यता प्राप्त कर रहा हैं, इस बात का द्योतक है कि जो पैंतरा सावरकर जी ने 1937 में लिया था वह सही था तथा हिन्दू समाज उन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद के महापुरूष के रूप में स्वीकार करता है। यह सही है कि संघ सावरकर की बुद्धि की उपज नहीं थी। सावरकर हिन्दू महासभा के नेता थे तथा संघ एक सामाजिक व सांस्कृतिक संगठन होने के नाते हिन्दू महासभा से अलग ही रहता था। परन्तु दोनों ही हिन्दुत्व के दर्शन को स्वीकारते थे और भारतीय जनता पक्ष जो नि:संदिग्ध रूप से हिन्दू राष्ट्रवाद का पक्षधर हैं, एक अर्थ से वीर सावरकर का कार्य ही आगे बढ़ा रहा है।

इस प्रकार सामाजिक व राजनीतिक क्रान्तिकारी के रूप में सावरकर जी की महानता धीरे-धीरे हिन्दू समाज में स्वीकारी जा रही है। अब तो उस पक्ष के नेता ब्राह्मणों समेत सभी के लिये न्याय व समान बर्ताव की मीठी-मीठी बातें करते हैं। यह सद्भाव व सहकार की भावना स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि वीर सावरकर की चेतना हिन्दू समाज में जीवित है व बढ़ रही हैं। इसका प्रकटीकरण अयोध्या आंदोलन के समय हुआ तथा कांग्रेसी नेता भी जो अपने आपको हिन्दू कहलवाना टालते थे अब उस बात पर गर्व करने लगे हैं। एक प्रमुख कांग्रेसी नेता व एक समय के पक्ष के महासचिव ने सुझाव दिया था कि कांग्रेस की कार्यक्रम सूची में हिन्दुत्व का होना उपयोगी रहेगा, वे नेता थे स्वर्गीय श्री व्हि. एन.गडगिल। ▪

संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है

पं. दीनदयाल उपाध्याय

भारत के विचारकों के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या गाना, नाचना, नाटक खेलना मात्र ही संस्कृति है।

यदि यही संस्कृति की परिभाषा है तो इसका प्रचार हमारे पूर्वज ऋषियों, विद्वानों, स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों द्वारा न होकर फिल्म अभिनेता तथा अभिनेत्रियों द्वारा ही होगा।

आम लोगों ने यहां संघ कार्य के अनेक रूपों का विचार किया होगा। एक प्रश्न हमारे सामने यह भी आता है कि समय-समय पर हम कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक अधिष्ठान पर खड़ा है। इस दृष्टि से यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है कि वह संस्कृति क्या है? संघ की प्रतिज्ञा में भी हम ऐसा कहते हैं, 'हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति की रक्षा कर हिंदू समाज की सर्वांगीण उन्नति करने के लिए हम संघ के घटक बने हैं।' बिना संस्कृति संरक्षण के राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती, यह भी हम स्वीकारते हैं।

आखिर संस्कृति है क्या? हम यह भी देखते हैं कि संस्कृति के नाम पर आज देश में बहुत से कार्य प्रारंभ हो गए हैं। हर कहीं हम Cultural Progress का नाम सुनते हैं। हमारे कलाकार सांस्कृतिक शिष्टमंडलों के रूप में विदेश जाते हैं, अन्य देशों से हम संस्कृति का संबंध जोड़ते हैं आदि। कहने का तात्पर्य यह कि हम नाच-गान को ही संस्कृति मान बैठते हैं।

भारत के विचारकों के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या गाना, नाचना, नाटक खेलना मात्र ही संस्कृति है। यदि यही संस्कृति की परिभाषा है तो इसका प्रचार हमारे पूर्वज ऋषियों, विद्वानों, स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों द्वारा न होकर फिल्म अभिनेता तथा अभिनेत्रियों द्वारा ही होगा।

संस्कृति शब्द को आज गलत अर्थ ही दिया गया है। यह अज्ञानवश हो सकता है और जानबूझकर भी। जानबूझकर इसलिए कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए वे संस्कृति शब्द का उपयोग उन लोगों में गलत धारणा पैदा करके अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। जैसे डालडा को घी की संज्ञा देने से यह बात स्पष्ट है। घी शब्द के बारे में लोगों की धारणा अच्छी है। इसलिए डालडा के साथ साफ किया हुआ तेल-ऐसा न जोड़कर घी शब्द जोड़ दिया गया है। कुछ समय उपरांत लोग इस डालडा को ही वास्तविक घी समझकर इसका उपयोग करने में लज्जा महसूस नहीं करेंगे। ठीक यही बात संस्कृति के संबंध में है। संस्कृति के प्रति जिनकी श्रद्धा है, उन्हें गलत रास्ते पर डालने के लिए इस नवीन संस्कृति का प्रचार किया जा रहा है। राष्ट्रीयता के संबंध में भी यही बात हुई । हमें Indian Nationalism की भ्रांत धारणा दी गई और कहा गया कि मुसलमान, ईसाई सभी यहां के राष्ट्रीय हैं। सिक्खों को यह गलत धारणा दी गई कि वे हिंदू नहीं हैं आदि।

आज सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में इसी कारण लोगों की कल्पना नाचने-गाने की ही हो गई है। एक व्यक्ति ने पूछा कि आप कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक है, परंतु हमें तो ऐसा दिखाई नहीं देता, क्योंकि वहां तो नाच-गाना होता नहीं। फिर मैंने व्यंग्य कसते हुए कहा कि जिस प्रकार नाचने-गाने में वे स्वर-ताल का ध्यान रखते हैं, इसी प्रकार संघ के कार्यक्रमों में एक कहने पर बायां पैर और दो कहने पर दायां पैर निकलता है और एक ताल के अनुसार कार्य होता है, इसलिए यह भी सांस्कृतिक हुआ।

संस्कृति के पीछे क्या भाव है, यह समझना कुछ कठिन है। संस्कृति शब्द का प्रयोग वेदों को छोड़कर अन्य प्राचीन वाङ्मय में नहीं हुआ।

संस्कृति को धर्म के अंतर्गत ही मान लिया गया था, परंतु आज संस्कृति शब्द का व्यापक प्रचार होने के कारण लोग इस शब्द को सुनकर चौंकते नहीं। कुछ लोगों ने इसे Culture के अनुवाद के रूप में स्वीकार किया है।

यह भी संभावना हो सकती है कि यह शब्द स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ हो। संस्कृति से मिलता-जुलता संस्कार शब्द हमारा पूर्व परिचित शब्द है। हमारे यहां सोलह संस्कार होते हैं, संस्कारों से मनुष्य बनता है, बिना संस्कार के वह पशु समान है-ऐसा बराबर सुनने में आता है। साधारणतया हम कह सकते हैं कि जो बाह्य वातावरण है, उसका मनुष्य पर जो परिणाम होता है, उसे हम संस्कार (Impression) कह सकते हैं।

परंतु संस्कार अच्छे और बुरे दोनों हो सकते हैं। किसी को चोरी की आदत लग जाए तो हम कहेंगे, उस पर बुरे संस्कार पड़े हैं। परंतु जब हम संस्कार कहते हैं तो उससे हमारा अभिप्राय अच्छे संस्कार से ही होता है। बुरे संस्कारों के लिए हम कुसंस्कार शब्द का प्रयोग करेंगे। जैसे चरित्रवान कहने से हमारा आशय अच्छे चरित्र वाले व्यक्ति से होता है, जबकि बुरे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए हम चरित्रहीन शब्द का प्रयोग करते हैं।

अतः संस्कृति का अर्थ हुआ, अच्छे संस्कारों का परिणाम (प्रभाव)। मलयालम भाषा में हिंदू संस्कृति के लिए हिंदू संस्कार शब्द का प्रयोग होता है। स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि किन संस्कारों को हम अच्छा कहेंगे और किनको बुरा। इसकी व्याख्या करना सरल नहीं। पर एक छोटी सी कसौटी तो है। वह यह कि समाज के ध्येय के लिए जो पोषक है, वह अच्छा और जो बाधक है, वह बुरा। जैसे यदि हमारा लक्ष्य दिल्ली जाना है, तो जो रेलगाड़ी या मोटरगाड़ी उधर ले जाने में सहायक हो, वह अच्छी और जो विपरीत दिशा में ले जानेवाली है, वह बुरी।

परंतु दूसरा प्रश्न उत्पन्न होता है कि ध्येय क्या है? इस संबंध में हम इतना जानते हैं कि हमारी जो एकात्मकता है, एकीकरण है, इसकी अनुभूति ही हमारा ध्येय है। जब सब लोग एकता का अनुभव करें, तभी समाज अथवा राष्ट्र बनता है। यदि हम राष्ट्र के नाते जीवित रहना चाहते हैं तो एकात्मकता की अनुभूति जिससे होगी, वही हमारा ध्येय होगा।

यदि पांव में कांटा चुभ जाए और पता न लगे कि कहां चुभा है तो चिंता होने लगती है। शरीर के कण-कण की जब तक ठीक अनुभूति रहती है, तब तक ठीक है, परंतु जब बेहोशी आदि में शरीर का ज्ञान नहीं रहता, क्रियाओं, चेष्टाओं का ज्ञान नहीं रहता तो वह स्थिति चिंताजनक होती है और सारा शरीर गया, ऐसा लगने लगता है। जैसे लकवे में, हाथ होते हुए भी हाथ की क्रिया रुक जाती है, हाथ की अनुभूति नहीं होती। जब तक शरीर में चेतना है, अंगों का संबंध बराबर बना रहता है। तभी तक हममें सामर्थ्य है, जीवन है। इसी प्रकार राष्ट्र रूपी शरीर में चेतना बनाए रखना आवश्यक है। अतः जिन कारणों से राष्ट्र में चेतना का निर्माण होता है, वे अच्छे और दूसरे बुरे।

प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना जिससे बनी रहे, वही संस्कृति का आधार माना जाता है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। आत्मा निकल जाने के पश्चात जैसे सब अंग-प्रत्यंग निश्चेष्ट हो जाते हैं। उसी प्रकार की अवस्था संस्कृति का लोप हो जाने से राष्ट्र की होती है। जैसे यूनान और मिस्र का प्राचीन राज्य समाप्त हो गया। इसका यह अर्थ तो नहीं कि वहां की भूमि, नदियां, पर्वत, व्यक्ति आदि नष्ट हो गए। ये वस्तुएं तो ज्यों-की-त्यों बनी रहती हैं, परंतु व्यक्ति को एकसूत्र में बांधने की जो शक्ति संस्कृति में है, वह शक्ति समाप्त हो जाती है।

लकड़ियों को सूत के धागे से बांधा जा सकता है परंतु व्यक्ति-व्यक्ति को बांधने वाला सूत्र संस्कृति ही है। यह सूत्र वर्तमान प्राणियों के अतिरिक्त हमारा संबंध हमारे पूर्वजों अर्थात् राम, कृष्ण, शिवा, प्रताप, गोविंद सिंह आदि से तथा आगे जन्म लेने वालों से भी जोड़ देता है। इसी के बूते पर राष्ट्र टिक सकता है। अतः राष्ट्र रूप में जीवित रहने के लिए यही संस्कृति प्राप्तव्य है। अतः सिद्ध हुआ कि सारे समाज को आपस में जोड़ने वाला नाता संस्कृति है। जिन कार्यक्रमों से यह नाता जुड़ता है, वह संस्कार तथा जिन कार्यों से यह नाता टूटने लगता है, वे कुसंस्कार।

डाकुओं में जो स्वार्थ के कारण एकता है, क्या उसे भी संस्कृति मानें? उत्तर मिलेगा- 'नहीं।' कुछ देशों की संस्कृति का आधार यद्यपि यह भी है। जैसे अरब में मुसलमानों का संगठन लूट-खसोट के आधार पर ही किया इसी प्रकार इंग्लैंड भी सामूहिक स्वार्थ के नाम पर ही खड़ा हुआ।

परंतु हमने स्वार्थ के आधार पर एकता खड़ी नहीं की। यही हमारी और दूसरों की संस्कृति में अंतर है। जैसे मां से प्रेम करने के भिन्न-भिन्न आधार हो सकते हैं। इसी प्रकार विवाह के भी भिन्न आधार हो सकते हैं। एक यह कि विवाह दो प्राणियों का एकात्मकता के नाते आगे बढ़ना इसलिए है कि घर की देखभाल के लिए पत्नी मिल जाएगी। इसी प्रकार परिवार में हमारे माता-पिता भी शामिल होंगे। परंतु यूरोप में परिवार में मां-बाप नहीं होते।

जीवन में सभी चीजों की ओर देखने की हमारी दृष्टि कुछ भिन्न है। कुछ राष्ट्रों में ईमानदारी को व्यापार के लिए सर्वोत्तम नीति माना जाता है, परंतु हम इसे व्यापार की नीति के रूप में नहीं अपितु जीवन की नीति के रूप में अपनाना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग रुचि होती है। यह रुचि भिन्नता मूलतः सब प्राणियों में विद्यमान है। इसी प्रकार राष्ट्रों में भी रुचि भिन्नता है, अपनी-अपनी विशेषता है। सबके आधार भिन्न-भिन्न रहते हैं। इसके कारण हमारे देश में भी कुछ चीजें हमें रंजित करती हैं और कुछ नहीं। हमारी विशेष प्रवृत्ति है, जिसके आधार पर हम संगठन करते हैं। वह प्रवृत्ति स्वार्थ की नहीं, निःस्वार्थ भाव की है। ▪

(राष्ट्र जीवन की दिशा से साभार)

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आनंदपुर धाम पधारने पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने स्वागत किया।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी विक्रमोत्सव 2025 के तहत सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य में शामिल हुए।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की भीम जन्म स्थली में माल्यार्पण कर नमन किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आनंदपुर धाम का दौरा किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर सम्मान अभियान विचार गोष्ठी को संबोधित किया।

▪ संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर माल्यार्पण किया।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर सम्मान अभियान विचार गोष्ठी को संबोधित किया।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा भगवान श्री परशुराम जयंती पर आयोजित शोभा यात्रा में शामिल हुए।

''भारत जिन समस्याओं का सामना कर रहा है, उसका मूल कारण इसकी 'राष्ट्रीय पहचान' की उपेक्षा।''

पं. दीनदयाल उपाध्याय